राज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या 2646

मैंने मारा ध्रुव को

संयुक्त संस्करण

मैंने मारा ध्रुव को | महामानव की गवाही | हत्यारा कौन

सुपर कमांडो ध्रुव

RAJ COMICS राज कॉमिक्स BY MANOJ GUPTA

संस्थापक श्रद्धांजलि वर्ष 2021

SPECIAL COLLECTOR'S EDITION

राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 सख्या 41

मैंने मारा ध्रुव को

अनुपम ANWAR

सुपर कमांडो ध्रुव मारा गया ! एक महान गाथा का अंत हो गया !

मुसीबतों को खुशहालियों में बदल देने वाला शख्स, मजबूरों और कमजोरों के बाजुओं की ताकत, जुल्म का कट्टर दुश्मन ...

... और अपराधियों का काल बनकर उनके मौत का फर्मान लिखने वाली हस्ती आज ... आज चिता के उस पार जा चुकी है !

कैसे मरा ध्रुव, यह कोई नहीं जानता !

यह खबर पूरी तरह से दबा दी गई है !

जानता है, तो सिर्फ एक शख्स ! वह खलनायक या खलनायिका, जिसने मारा ध्रुव को। पर वह है कौन ?

जानना मुश्किल ही नहीं, असंभव लगता है। क्योंकि हर बड़ा अपराधी यह दावा कर रहा है कि ...

मैंने मारा ध्रुव को

कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा: इंकिंग: विनोद कुमार: सम्पादक: मनीष गुप्ता

वे सब झूठ बोल रहे हैं। बक रहे हैं। अपने आपको महान सिद्ध करना चाहते हैं।

ध्रुव की जान••• इन हाथों ने ली है। 'ग्रैंडमास्टर रोबो' के हाथों ने !

जानना चाहते हो किस तरह•••

इस तरह••• तरह•••

हर खलनायक यही दावा कर रहा है, रोबो !

कड़ाक

लेकिन मुझ पर वार करने की कोशिश मत करो! मुझको तुम छू भी नहीं सकते !

वैसे भी, मैं तुम्हारा न दुश्मन हूं और न ही दोस्त !

क••• कौन हो तुम?

मैं हूं••• कंकाल तंत्र ! एक महान योद्धा ! मेरा शौक है, हर युग में जाकर उस युग के योद्धाओं को मात देना !

और मैं यह जानना चाहता हूं कि••• किसने मारा ध्रुव को? वैसे तो हर छोटा-मोटा खलनायक भी यह दावा कर रहा है।

लेकिन इस युग में सिर्फ आठ ही ऐसे महाखलनायक हैं जो यह काम करने की क्षमता रखते हैं।

मैं कहां से आया हूं, यह मैं बताने की कोशिश अगर करूंगा भी तो भी तुम समझ नहीं पाओगे। बस इतना जान लो कि मैं यहां पर आया था, इस युग के महान वीर 'सुपर कमांडो ध्रुव' को मात देने•••

उस शौर्य की जीती-जागती मूर्ति को मात देने, जिसको आज तक कोई झुका नहीं पाया, लेकिन मेरे यहां पर पहुंचने से पहले ही वह अजेय योद्धा मारा गया•••

और तुम उनमें से एक हो, ग्रैंड मास्टर रोबो !

मैंने एक 'अपराध-अदालत' बिठाई है, जिसमें हर महाखलनायक अपना दावा पेश करेगा ! सच झूठ का फैसला मैं करूंगा।
वह बनेगा... परम खलनायक !
और जिसका दावा सही पाया जाएगा, उसको मैं दूंगा... पूरी पृथ्वी पर राज्य करने की शक्ति !
तुम दोगे शक्ति?
और मुझे ? हा हा हा !
मेरी शक्तियों के सामने तुम्हारी पृथ्वी की सारी शक्तियां तुच्छ हैं !
मैं कुछ भी कर सकता हूं।
दौलत के ढेर लगा सकता हूं !
सोना !
एक इशारे में किसी भी चीज को हवा में मिला सकता हूं।
कड़ाक
तुमको भी !
ब... बस ! समझ गया।
मैं चलने को तैयार हूं।
फिर आओ ! बाकी खलनायक हमारा इंतजार कर रहे हैं।

दुर्गम पहाड़ों की वह चोटी! जहां पर हैलीकॉप्टर तक नहीं जा सकता था—

बादलों और कुहासे से ढकी हुई वह चोटी—

और उसी चोटी की एक गुफा के अन्दर—

बैठी थी- कंकालतंत्र की क्राइम कोर्ट—

जिसमें मौजूद थे इस दुनिया के आठ महानतम खलनायक। और मौजूद थे पूरी दुनिया के माफिया बॉस। जो सिर्फ उसी महाखलनायक की आधीनता स्वीकार करने को तैयार थे, जिसने ध्रुव का खात्मा किया था—

सभी बेताब थे अपने-आपको ध्रुव का हत्यारा सिद्ध करने के लिए—

ताकि पा सकें 'परम-खलनायक' का खिताब—

और हासिल कर सकें पूरी दुनिया पर राज्य करने की शक्ति—

शांति! हर महाखलनायक को अपना पूरा पक्ष प्रस्तुत करने की इजाज़त दी जाएगी। और उनसे जिरह करेगा मेरा रोबोट बायोट्रॉन!

इसके अन्दर पूरी पृथ्वी की सारी जानकारी भरी हुई है।

इसलिए सावधान! तुम्हारे किसी भी झूठ को यह तुरन्त पकड़ सकता है!

अब मैं प्रथम महाखलनायक को अपनी शौर्य गाथा सुनाने के लिए आमंत्रित करता हूं।

श्रीमान ध्वनिराज!

पहली गवाही: मैंने मारा ध्रुव को

☆ पढ़िए 'आवाज की तबाही'

...बैंक में—

आज बैंक में कितना कैश मंगाया है, गद्रे ?

तीस लाख रुपए, सर ! दो-तीन दिनों का काम हो जाएगा इससे !

लेकिन दो-तीन दिनों का काम...

... दो-तीन मिनटों में हो जाना था—

छनाक

म... मेरा गिलास टूटा कैसे ?

बचिए, सर ! टेबल भी टूट रही है !

कड़ड़ड़ड़

मैनेजर और गद्रे की भयभीत नजरें चारों तरफ घूमकर, एक अजीबो-गरीब वस्तु पर चिपककर रह गईं—

चमगादड़ !

और वह भी... दिन में...

वे बस इतना ही कह पाए—

क्योंकि तभी— चमगादड़ों की पूरी फौज ने धड़धड़ाते... या कहिए... कड़कड़ाते हुए बैंक के अन्दर प्रवेश किया—

धड़ कड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़ाम

और पूरे बैंक में कहर टूट पड़ा—

मजबूत दीवारें— ताश के पत्तों की तरह ढहने लगीं—

यह कमाल था, उन चमगादड़ों के गले से निकलती प्राकृतिक अल्ट्रासोनिक तरंगों का—

SAVE MONEY

धड़ाड़ममम

जिन तरंगों को मैंने, उन चमगादड़ों के गलों में एक छोटा-सा यंत्र फिट करके, घातक और विस्फोटक स्तर का बना दिया था—

और उन घातक तरंगों के सम्मिलित हमले के सामने बैंक लॉकर का मोटा स्टील दरवाज़ा भी नहीं टिक सकता था।

तीस लाख रुपए के नोट अब खुले में पड़े हुए थे।

उनको इंतजार था मेरा।

और मेरे आदमियों के हाथों में थमे बैगों का—

मैं अपने बेशकीमती चमगादड़ों को, बॉक्स के अन्दर, बन्द करने में व्यस्त हो गया—

और मेरे आदमी, नोटों को संभालने में—

इस सारी प्रक्रिया में सिर्फ तीन मिनट लगे होंगे।

लेकिन इतना समय शायद काफी था...

तड़.

...उस मुसीबत को मेरे सर पर टूटने के लिए—

यह मैं कभी नहीं समझ पाया, कि सुपर कमांडो ध्रुव हर घटना-स्थल पर इतनी जल्दी कैसे पहुंच जाता है।

हां, ध्वनिराज!

इस बार भी नहीं समझ पाया —

सुपर कमांडो ध्रुव!

इसीलिए इस बार मैं ऐसा इंतजाम करूंगा, कि तुम बूढ़े होने से पहले, नारका जेल से बाहर न निकल सको।

तुम नारका जेल में दो साल रहकर भी सुधर नहीं सके।

तड़ाक

ध्रुव एक आश्चर्यजनक इंसान था। फुर्तीला, शक्तिशाली और बुद्धिमान!

विपरीत परिस्थितियों में भी मौत को धकाने वाला इंसान...

...लेकिन था तो फिर भी वह एक इंसान ही —

फायर!

मेरा ख्याल गलत था।

तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़

वह इंसान नहीं था।

कोई भी इंसान गोलियों की उस बौछार से बच नहीं सकता—

तड़

कड़

गोलियां एक बार चलनी जो बन्द हुईं—

धड़ाक

तो फिर न चल पाईं—

धड़ाक

ठक

बंदूकें हाथों से छूट चुकी थीं—

और गोलियों की जगह, अब ध्रुव के वार, हवा में उड़ रहे थे—

कुछ क्षणों तक मैं भी भौचक्का-सा उस अद्भुत फाइटर के बिजली जैसे वारों को देखता रह गया —
मैं समझ गया था कि मेरे पास, पैसे लेकर भागने के लिए सिर्फ एक मिनट का समय है...
...क्योंकि मेरे आदमी इससे ज्यादा देर तक ध्रुव के सामने नहीं टिक सकते —
मेरा ख्याल फिर गलत था —
मेरे आदमी सिर्फ तेइस सेकंड तक ठहर सके —
धाड़
जरा सुनो तो ध्वनिराज!
तुम्हारे खाते में जितना पैसा है, उससे कहीं ज्यादा तुम निकालकर ले जा रहे हो!
धम
आह!
अब पुलिस के यहां पर आने तक तुम चुपचाप पड़े...
धम
इससे ज्यादा वह न बोल सका —
— क्योंकि मेरी, 'बैकअप यूनिट' तैयार थी —

और जब तक यह 'वायुसेना' मेरे पास थी, तब तक मुझे कोई छू भी नहीं सकता था—

और नाही कोई इस 'वायुसेना' के हमले से बच सकता था—

सुपर कमांडो ध्रुव भी नहीं—

वह तो उसकी किस्मत अच्छी थी कि पहला ब्लास्ट, उसको पूरी तरह से नहीं लग पाया—

और दूसरे वार को उसने अपने तक पहुंचने नहीं दिया—

परन्तु लाख कोशिशों के बाद भी ध्रुव मेरे अल्ट्रासोनिक चमगादड़ों से बच नहीं सकता था—

क्योंकि चमगादड़ों की तादाद ज्यादा थी—

और वे हर तरफ से हमला कर रहे थे।
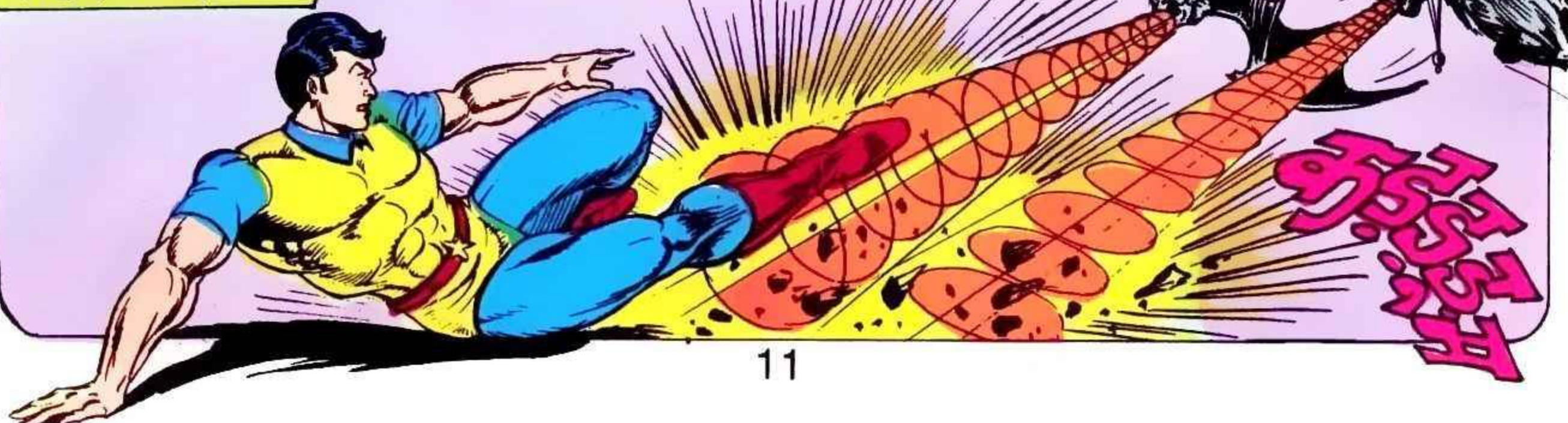
ध्रुव जैसा विलक्षण योद्धा भी कुछ देर तक तो उनका सामना कर सकता था—
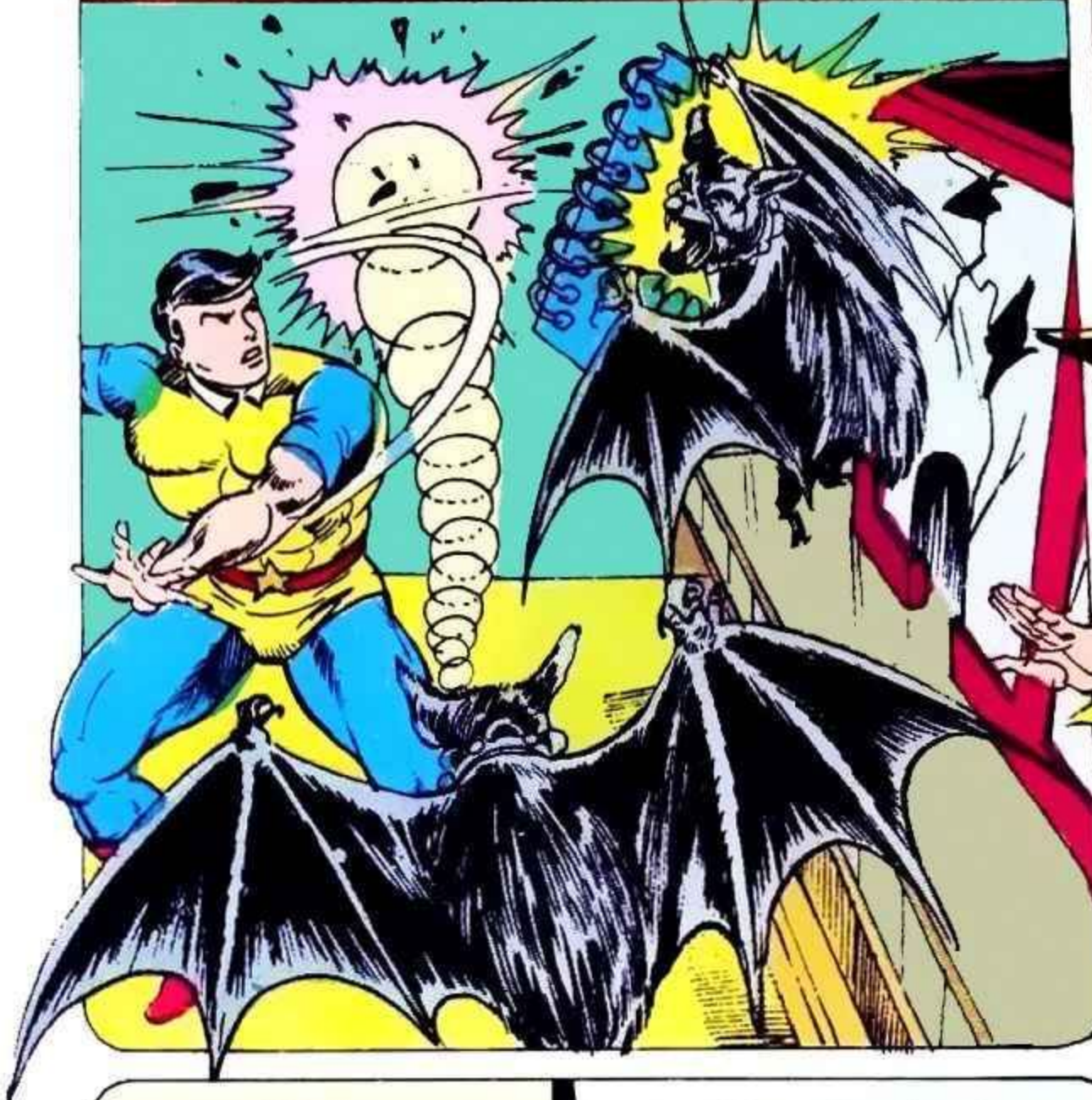
लेकिन इस बार उसकी मौत निश्चित थी-

आऽऽह

कड़ड़ड़ड़
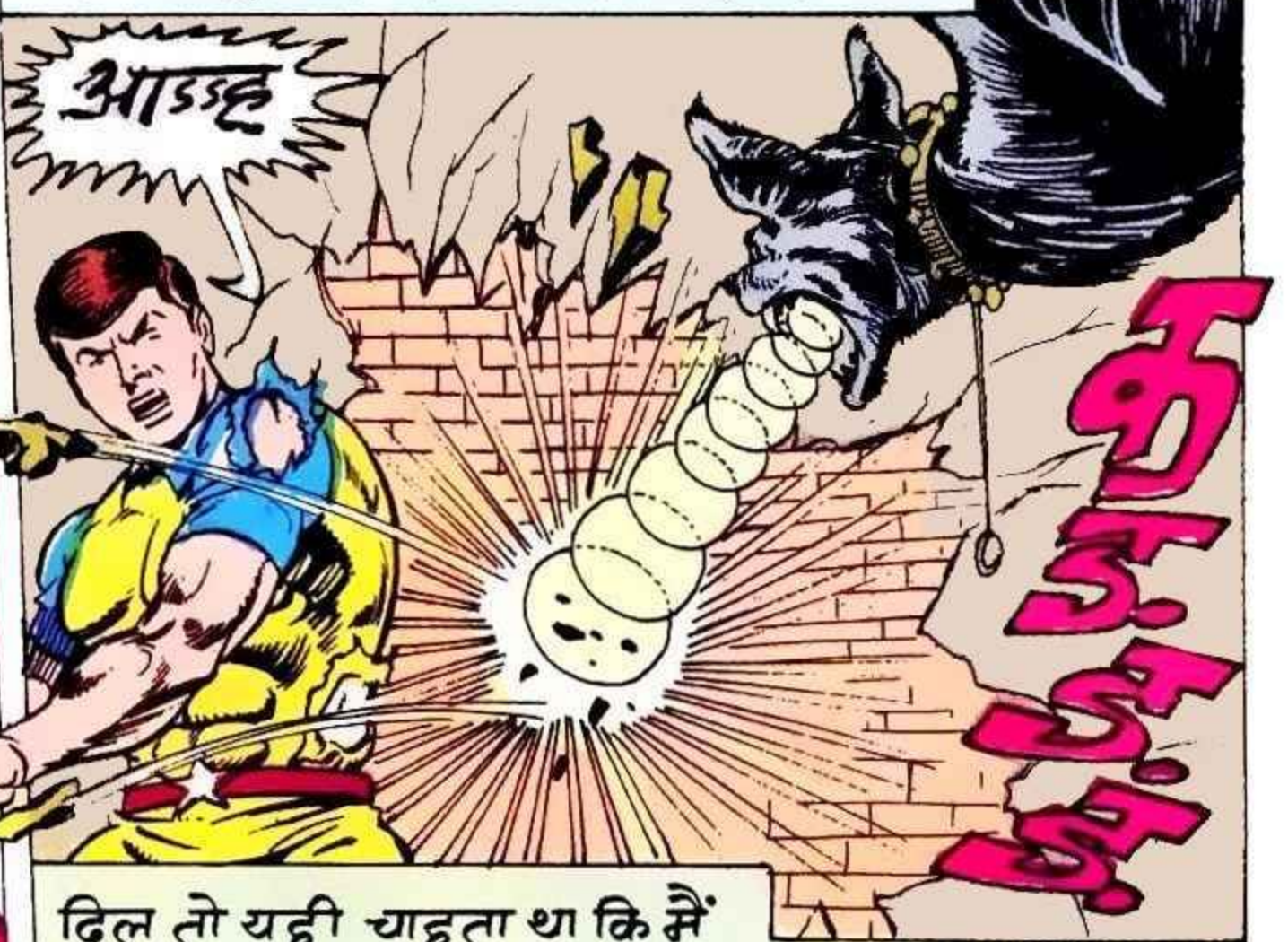
दिल तो यही चाहता था कि मैं वहां पर रुककर, ध्रुव की मौत का दिलकश नज़ारा देख सकूं-

लेकिन मेरे पास उस सुनहरे दृश्य को देखने का वक्त नहीं था।

अब पुलिस किसी भी समय वहां पर आ सकती थी-

मेरे आदमी भी होश में आ गए थे —

००० मैं पैसा लेकर बैंक से भाग निकला।

और अपने 'अल्ट्रासोनिक लांचर' को बनाने की तैयारी में जुट गया।

लेकिन, श्रीमान ध्वनिराज, आपने अपने लिखित बयान में तो श्रीमान ध्रुव को मारने का कोई और तरीका लिखा था।

हां, दरअसल आगे की कहानी मुझे बाद में मालूम हुई०००

अपने उस आदमी की जुबानी, जो टांग टूट जाने की वजह से बैंक से भाग नहीं पाया था०००

...और जिसे पुलिस ने पकड़ लिया था।

ओह, समझा! आगे सुनाइए।

मेरी चमगादड़ों की फौज का हमला तो भीषण था ही-

लेकिन उनका मुकाबला करने वाला भी उतना ही भीषण था –

कभी ध्रुव, चमगादड़ों पर भारी पड़ जाता –

और कभी चमगादड़ ध्रुव पर हावी हो जाते –

ओफ़ ! ये तो हर तरफ से हमला कर रहे हैं।

और मैं हर तरफ के हमले से बच नहीं सकता !

उसके कपड़ों के चिथड़ों में से उसका बदन झांक रहा था –

खून के लाल धब्बे, पीली और नीली पोशाक पर चमक रहे थे –

ध्रुव की मौत, उसके सिर पर तांडव कर रही थी !

बचने का एक ही रास्ता है !

अगले पल जो हुआ –

– उसको देखकर मेरे आदमी की आंखें फटी की फटी रह गईं।

दाद दे उठा वह अपनी टांग तोड़ने वाले के दिमाग की –

ध्रुव ने बिजली की-सी फुर्ती से उछलकर एक चमगादड़ को दबोच लिया था –

इन शैतानों से अगर कोई निपट सकता है...

...तो सिर्फ इन जैसे दूसरे शैतान !

ध्रुव के शक्तिशाली हाथ, चमगादड़ के परों को मोड़ते चले गए—

चमगादड़ के गले से, एक बेआवाज़ अल्ट्रासोनिक चीख उबलती चली गई।

और हर बेआवाज़ की चीख के साथ, ध्रुव का शरीर भी घूमता चला गया—

फट्ट

कचाक
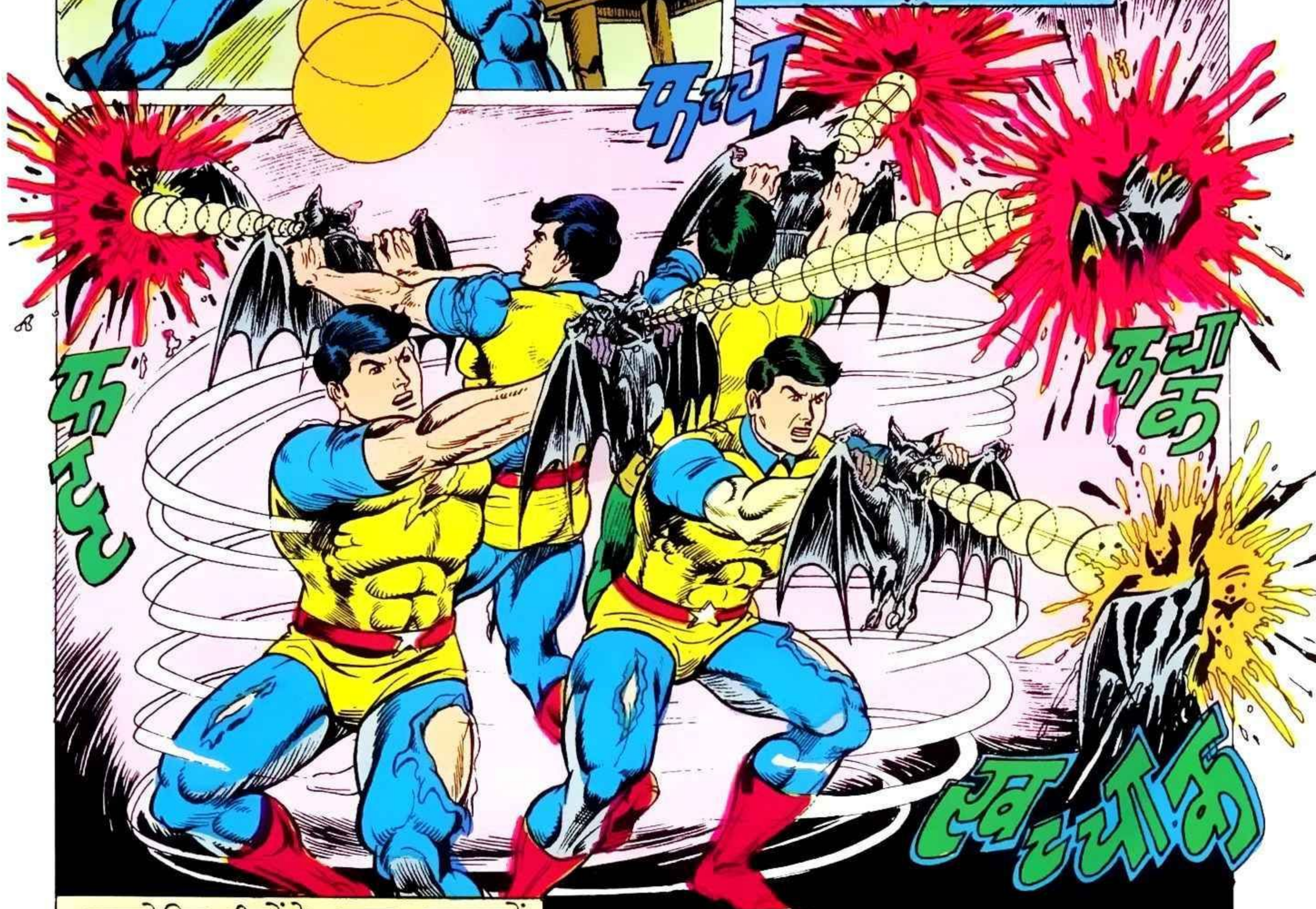
अल्ट्रासोनिक चीखों के ब्लास्ट, चमगादड़ों के शरीरों के चिथड़े, उड़ाते चले गए।

और कुछ ही पलों में मैदान साफ हो गया।

मेरा दुश्मन, एक बार फिर जीत गया था।

पर यह जीत अधूरी थी। क्योंकि वह न तो मुझे पैसा लेकर भागने से रोक पाया था ...

... और न ही 'अल्ट्रासोनिक लांचर' बनाने से। ... पैसे अगर भरपूर हों, तो काम बहुत जल्दी होता है।

आप इस 'अल्ट्रासोनिक लांचर' को फिट कहां पर करेंगे, ध्वनिराज?

यही तो सोचने की बात है, लालारुख!

मेरा 'लांचर' तैयार होने में एक हफ्ता भी नहीं लगा।

अब सामने, सबसे बड़ा सवाल यह था कि ...

मैं इसको कहीं पर भी फिट करूं, वह शैतान का बच्चा ध्रुव फिर भी इसका पता लगा ही लेगा ...

... और फिर ये भी किसी कबाड़घर में पड़ा मिलेगा।

इसको किसी ऐसी जगह फिट करना होगा, ताकि ध्रुव इस तक पहुंच ही न ...

भारत का दोहरा अंतरिक्ष कार्यक्रम
सेटेलाइट का प्रक्षेपण
पहला भारतीय चांद पर

मिल गई! मिल गई! लांचर को फिट करने की जगह!

इस लांचर को मैं सेटेलाइट यानी उपग्रह में चुपचाप फिट कर दूंगा, लालारुख!

ताकि मैं अंतरिक्ष से पूरी दुनिया को इसके निशाने पर ले सकूं।

वह 'सेटेलाइट' तो यहीं राजनगर के 'स्पेस-सेंटर' में रखी है। लेकिन उस तक पहुंच पाना असंभव है। पहरा बहुत सख्त है।

क्योंकि 'सेटेलाइट' के साथ-साथ वहां पर चांद पर जाने वाले पहले भारतीय की ट्रेनिंग भी चल रही है।

उस सुरक्षा घेरे को तोड़ना ध्वनिराज के लिए बाएं हाथ का खेल है।

क्योंकि किसी को यह भनक तक नहीं है कि 'स्पेससेंटर' में आज रात ध्वनिराज आ रहा है।

स्पेस सेन्टर-

जहां पर, हर समय कड़ी सुरक्षा का घेरा बना रहता है।

लेकिन इस वक्त सुरक्षा और भी सख्त थी—

क्योंकि वहां पर चल रही दो महत्वपूर्ण योजनाओं ने स्पेस-सेन्टर का महत्व और बढ़ा दिया—

SPACE CENTRE

HIGH SECURITY ZONE

NO TRESPASSING

लेकिन उस सुरक्षा व्यवस्था को भेदना मेरे लिए बच्चों का खेल था—

किसी को यह पता नहीं था कि 'स्पेस-सेन्टर' पर आज हमला हो रहा है।

कम से कम मैं तब तक यही समझ रहा था।

और मेरी सोच न जाने क्यों हर बार गलत साबित हो रही थी—

क्योंकि तभी पूरा इलाका रोशनी से जगमगा उठा—

जरूर कहीं पर कोई अलार्म बज उठा है।

तुम लोग सैनिकों को उलझाओ।

तब तक मैं अपना काम करके आता हूं।

किसी को पहले से ही इस हमले की खबर थी।

यह क्या?

ध्वनिराज, चारों तरफ से सुरक्षा सैनिक हमारी तरफ आ रहे हैं।

मेरे आदमी सुरक्षाकर्मियों से भिड़ गए।

और मैं इस अफरा-तफरी का फायदा उठाकर, 'स्पेस-सेन्टर' के अन्दर भाग लिया—

उस 'सेटेलाइट' की तलाश में, जिसमें मुझे अपना 'अल्ट्रासोनिक लांचर' फिट करना था—

मेरी ऊंगली, लांचर के बटन पर, एक बार जो दबी—

तो फिर हटी नहीं—

'अल्ट्रासोनिक लांचर' के तीखे ब्लास्ट, सैनिकों को तेज़ ब्लेड की तरह काटते चले गए।

अचानक मेरी नज़र, एक शीशे के अन्दर पड़ी—

सेटेलाइट! सेटेलाइट सामने चमक रही थी।

मैं अन्दर जाने का रास्ता ढूंढ़ने लगा—

दरवाज़ा मिल गया—

चेतावनी
स्पेस सूट पहनकर ही अंदर जाएं

मैंने जितनी तेजी से 'स्पेस-सूट' पहना, वह शायद 'स्पेस-सूट' पहनने का नया रिकार्ड होगा।

स्पेस सूट

दरवाज़े का 'एयर-लॉक' खुलने लगा।

और मैंने अपने-आपको एक बेहद रोमांचक माहौल में पाया-

वह स्थान, शायद एक प्रयोगशाला थी-

और उसके अन्दर••• 'चांद' की सतह का हू बहू माहौल बनाया गया था! ऊबड़-खाबड़ सतह, काले अंतरिक्ष में चमकते सितारे और पूरा 'वैक्यूम' यानी हवा का कहीं नामो-निशान तक नहीं—

ठीक वैसा ही, जैसा असली चांद पर होता है।

कमाल का दृश्य है! शायद चांद पर जाने वाले पहले भारतीय की ट्रेनिंग यहीं पर चल रही है।

मैं 'सेटेलाइट' की तलाश में नजरें दौड़ाने लगा।

सेटेलाइट! सेटेलाइट कहां गई?

बाहर से तो यहीं पर रखी दिख रही थी।

तभी मेरे 'स्पेस-सूट' में लगे 'रेडियोफोन' पर एक सर्द आवाज गूंज उठी—

वह सेटेलाइट नहीं, सेटेलाइट का प्रक्षेपित चित्र था ध्वनिराज!

घूमते ही मेरी नजरें जिस पर पड़ीं, उसको देखकर मेरी रीढ़ की हड्डी तक सर्द हो उठी—

सुपर कमांडो ध्रुव!

तुम यहां पर कैसे?

मुझे तुम्हारी हर एक चाल का पहले से ही पता था ध्वनिराज!

••• पर मैं तुमको यहां पर रंगे हाथों ही पकड़ना चाहता था।

तुम••• तुमको कैसे पता था?

उस चमगादड़ के जरिए, जो मैंने बैंक में पकड़ा था।

उस पर एक 'माइक्रो टांसमीटर' चिपकाकर मैंने उसे छोड़ दिया था! मुझे मालूम था कि उड़कर वह अपने घर ही वापस जाएगा! उसका घर यानी तुम्हारा अड्डा।

और उस ट्रांसमीटर के जरिए तुम्हारी हर एक बात, मेरे कमांडो हैडक्वार्टर के ट्रांसमीटर पर रिसीव हो रही थी।

और अब मैं उस काम को पूरा करूंगा, जो बैंक में अधूरा छूट गया था।

वह मुझसे कई मीटर की दूरी पर खड़ा हुआ था—

मैं समझ नहीं पाया कि एकाएक इतनी लंबी छलांग उसने कैसे लगा दी?

आई ऽऽऽ! क्या ध्रुव में कोई 'सुपर-पॉवर' आ गई है?

ओह समझा! यह लेबोरेट्री चांद का प्रतिरूप है! इसीलिए यहां की गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी चांद जैसी ही है...

...पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का छठा भाग!

इसका मतलब यह हुआ कि मैं भी ऐसी छलांग... उई ऽऽऽ

मैं संभल भी न पाया था, कि मुझ पर दूसरी टक्कर आ लगी—

'अल्ट्रासोनिक लांचर' मेरे हाथ से छूटकर दूर जा गिरा—

और मेरा बदन, उस वैक्यूम में उड़ता हुआ, चट्टानों से जा टकराया—
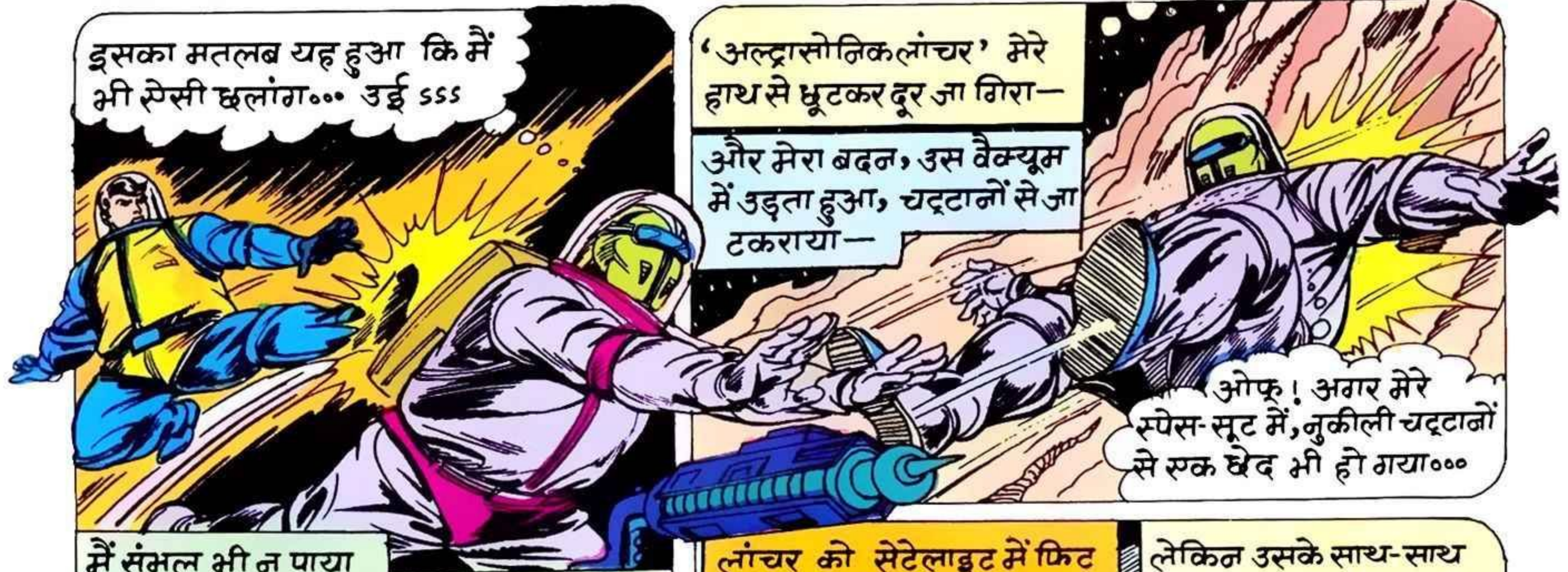
ओफ्! अगर मेरे स्पेस-सूट में, नुकीली चट्टानों से एक छेद भी हो गया...

...तो इस वैक्यूम में मेरे शरीर के चिथड़े उड़ जाएंगे!

लांचर को सेटेलाइट में फिट करने का मेरा प्लान तो धूल में मिल ही चुका था—

लेकिन उसके साथ-साथ मैंने, ध्रुव को भी, उसी कृत्रिम चांद की धूल में मिलाने की ठान ली थी—

मेरे सिर पर पागलपन सवार हो चुका था।

मेरे हाथ मशीन की तरह चल रहे थे।

और हथौड़े की तरह वार कर रहे थे—

लेकिन ध्रुव की भी सारी जिन्दगी, इन्हीं दांव-पेंचों के साथ गुजरी थी।

मैं उससे सीधी फाइट में कभी नहीं जीत सकता था।

अब अगर तुमने जरा सी भी हरकत की, तो यह नुकीला पत्थर तुम्हारे स्पेस सूट में घुस जाएगा, ध्वनिराज!

और उसके बाद तुम जानते ही हो, कि क्या होगा!

मैं हार मानने ही वाला था, कि तभी मेरी नजर एक चीज पर पड़ी।

और मैंने एक जबर्दस्त खतरा मोल ले ही लिया।

अल्ट्रासोनिक लांचर मेरे हाथ में आ गया।

और इस बार मैं नहीं झिझका।

मेरे हाथ, बटनों पर दबते चले गए।

और मेरा 'अल्ट्रासोनिक ब्लास्ट' ध्रुव के स्पेससूट में छेद करता हुआ, पीछे चट्टानों से जा टकराया—

मेरे 'स्पेस-सूट' के रेडियो पर एक चीख गूंज उठी—

सुपर कमांडो ध्रुव की आखिरी चीख—

पहले उसके 'स्पेस-सूट' के चिथड़े उड़े...

...और फिर उसकी नसों में दौड़ता खून, अपने 'रक्त-दाब' के कारण, नसों को फाड़कर बाहर टपकने लगा—

उसके पूरे बदन की नसें, गुब्बारे की तरह फट रही थीं—

कुछ देर तक तो, फिर भी, वह जांबाज सीधा खड़ा रहा... और फिर उसके मुंह से, खून की एक तेज उल्टी उबली—

और धीमी गति से गिरता उसका शरीर—

उस कृत्रिम चांद की सतह से जा टकराया—

ध्रुव का बदन, मेरे दुश्मन का बदन, अपने ही खून में सराबोर, मेरे सामने मृत पड़ा हुआ था।

इससे ज्यादा खूबसूरत दृश्य मैंने अपनी जिंदगी में कभी नहीं देखा—

कभी नहीं—

फिर अपना 'लांचर' तान कर लाशें बिछाता हुआ, मैं बाहर भाग लिया!

कुछ पलों तक कोर्ट में सन्नाटा छाया रहा-

स्वामी कंकालतंत्र! इनकी बैंक डकैती एवं स्पेस-सेंटर पर हमले की कथा तो सच है...

और फिर- रोबोट के गले से एक हल्की सी खरखराहट उभरी-

मेरा... मेरा दावा झूठा है? क्या बकता है, टीन के डिब्बे? अभी तेरा पुर्जा-पुर्जा हवा में उड़ा दूंगा।

जो काम, मैं सोचकर 'स्पेस-सेंटर' गया था, उससे कई गुना बड़ा काम मेरे हाथों से हो गया था। 'सुपर कमांडो ध्रुव' मेरे हाथों से मारा जा चुका था।

ये घटनाएं, पृथ्वी के कई समाचार माध्यमों में आई थीं...

...पर इनका श्रीमान ध्रुव को मारने का दावा झूठा है।

इसको तो मैं दुबारा जोड़ लूंगा,

लेकिन अगर तुम्हारा पुर्जा-पुर्जा उड़ गया तो उसे कोई नहीं जोड़ पाएगा!

बोलो बायोट्रॉन!

श्रीमान ध्वनिराज के अनुसार इन्होंने ध्रुव पर 'वैक्यूम' यानी निर्वात में पराध्वनि तरंगों से वार किया।

जो कि ये कर ही नहीं सकते थे।

क्योंकि 'अल्ट्रासोनिक तरंगें' ध्वनि तरंगों का ही एक रूप है। और ध्वनि तरंगों को चलने के लिए गैस, तरल या ठोस, किसी न किसी माध्यम की जरूरत पड़ती है!

कोई भी ध्वनि तरंग, वैक्यूम यानी निर्वात में चल ही नहीं सकती!

इसलिए श्रीमान ध्वनिराज का दावा खारिज किया गया।

झूठा!

मक्कार!

ये मारेगा ध्रुव को?

ध्रुव छींक भी दे तो ये चांद पर ही जाकर गिरेगा।

ध्वनिराज, तुम्हारा फैसला मैं बाद में करूंगा।

फिलहाल तुम 'अग्निद्वार' के उस पार जाकर इंतजार करो।

बायोट्रान, अगले गवाह महाखलनायक को बुलाओ!

महाखलनायक 'बौना वामन' कृपया गवाही देने पधारें।

दूसरी गवाही

मैंने मारा ध्रुव को

श्रीमान बौना वामन, आपने सुपर कमांडो ध्रुव को कैसे मारा?

वह तो बेचारा खेल-खेल में मारा गया। दरअसल मुझसे पंगा खुद ध्रुव ने लिया था।

मैं नारका जेल से भागा तो उसने मुझे दोबारा नारका जेल पहुंचा दिया! मैं दोबारा वहां से भाग निकला!

मेरा सारा 'सेटअप' खत्म हो गया था। उसे दुबारा बनाने के लिए मुझे नशीली दवाओं का घटिया धंधा करने को मजबूर होना पड़ा।

मेरा प्लान शुरू हुआ-'राजनगर नेशनल फॉरेस्ट' के एक विशालकाय, खोखले तने वाले पेड़ से। जिसके अंदर मैं स्मगल करके मंगाई हुई हेरोइन के पैकेट रखता था।

नशीली दवाएं रखने के लिए उससे ज्यादा सुरक्षित जगह और कोई हो ही नहीं सकती थी।

और उसके साथ-साथ मैंने एक कंपनी खोली, जो शहर के बड़े-बड़े शो रूमों में, बुतों यानी 'मैनेक्विन्स' बड़े ही सस्ते भाव पर सप्लाई करने का काम करती थी।

LOMBO'S

उनकी रख-रखाव का जिम्मा भी मेरी कंपनी ने ही ले रखा था।

ऊपर से देखने में तो वे बुत, आम मैनेक्विन, जैसे ही थे।

लेकिन अन्दर से उनकी छातियां खोखली थीं—

और उनमें भरे थे, हेरोइन के पैकेट—

हर 'मैनेक्विन' के लिए रोज एक 'कोड-वर्ड' सेट किया जाता था।

और ये 'कोड-वर्ड' मैं अपने ग्राहकों को पैसे लेकर बताता था।

स्टेशनरी

बर्तन

एक 'कोड-वर्ड' एक बार 'बुत' के कान में फुसफुसाने पर, एक पैकेट बुत के हाथ में आ जाता था—

नशीली दवा हेरोइन का पैकेट—

धंधा जोरों पर चल रहा था—

नोट बरस रहे थे। और किसी को जरा सा भी शक नहीं था।

Roywon

गड़बड़ बारिशों से शुरू हुई! पेड़ के अन्दर रखे, कुछ पैकेट फट भी जाते थे, और उनमें से नशीली दवाएं निकलकर पेड़ के तने द्वारा सोख ली जाती थीं।

एक तो ये गरीबी में आटा गीला हो रहा था।

और ऊपर से वह अजीबो-गरीब जंगली—

एक दिन जब मैं खुद, पेड़ के तने से, माल लेने गया हुआ था—

तो मैंने उसे देखा। वह खोखले पेड़ को कुछ इशारे कर रहा था। बुदबुदा रहा था।

पागल समझा था मैंने उसे—

लेकिन पागल वह नहीं, पेड़ हो गया था।

तड़!
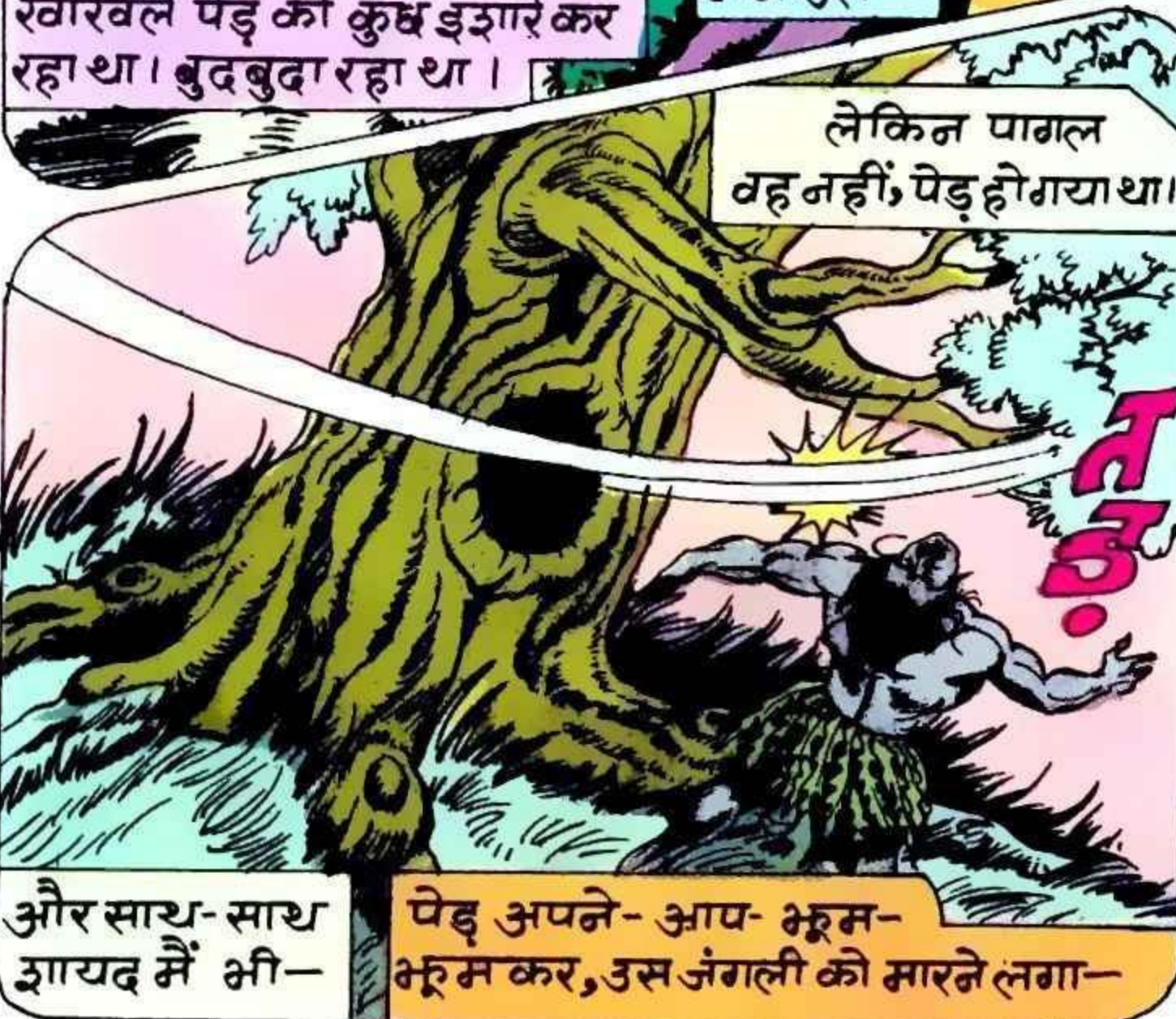
और साथ-साथ शायद मैं भी—

पेड़ अपने-आप झूम-झूम कर, उस जंगली को मारने लगा—

उसके बाद तो कमाल हो गया—

जंगली ने कुछ इशारा किया—

और जमीन में लगी, छोटी-छोटी बेलों ने अपने आप तेजी से बढ़कर पेड़ को अपनी लपेट में ले लिया—

और पेड़, तेजी से हिलने लगा—

तड़ाक

उसके खोखले तने से हेरोइन के पैकेट छिटक-कर बाहर गिरने लगे।

मेरी आंखों के सामने, मेरा करोड़ों का माल, मिट्टी में मिल रहा था—

अब मुझसे नहीं रहा गया—

उन पैकटों को मत छू, मूर्ख!

उस जंगली ने अपनी मौत खुद ही बुला ली थी—

मेरा वार उसको जरूर सौ किलो के हथौड़े की तरह लगा होगा।

पर उसमें गजब की जान थी—

वह गिरा तक नहीं—

ओह! तो तूने ही मेरे मित्र को नशीली दवा पिलाकर, उसे नष्ट करना चाहा था।

तू शक्ल से ही दुष्ट लग रहा है!

अब तू वनपुत्र के हाथों से नहीं बचेगा!

वनपुत्र कह रहा था, वह अपने आपको—

ईयायाया!

धम्म

और पेड़ों को अपना दोस्त!

शक्ल और बातों, दोनों से ही मूर्ख लग रहा था वह मुझको—

मेरा वह दिन वाकई खराब था!

जैसा कि मुझे अपने एक ग्राहक कांटू से बाद में पता चला—

NANZ

'नंज डिपार्टमेंटल स्टोर' में रखे मेरे 'मैनेक्विन' में कुछ खराबी पैदा हो गई थी—

कांटू के 'कोड-वर्ड' फुसफुसाते ही—

उसने एक साथ कई पैकेट फर्श पर गिरा दिए।

और वह भी उस मनहूस दिन, जिस दिन वहां पर, वह शैतान का अवतार भी मौजूद था।

– सुपर कमांडो ध्रुव–

यह तो ध्रुव पलक झपकते ही समझ गया, कि वे पैकेट हेरोइन से भरे हुए हैं–

पर वह यह नहीं समझ पाया कि वे पैकेट कहां से गिरे हैं!

बोल! ये सारे पैकेट तू कहां से लाया है?

किसको देने लाया है इनको, यहां पर?

पल भर के लिए तो वह नशेड़ी कांटू भी भौचक्का रह गया–

लेकिन कोई भी नशेड़ी, नशे के लिए जान भी लड़ा देता है–

देखो, भई बायोट्रान, कोशिश करना, इंसान का फर्ज है।

मेरे 'मैनेक्विन' के अंदर एक 'सुरक्षा-संयंत्र' लगा हुआ था।

और फिर पिटना तो पड़ता ही है–

खास तौर से जब सामने वाले का नाम सुपर कमांडो ध्रुव हो–

तड़ाक

और जब करारी मार पड़े–

तो जबान खुद-ब-खुद खुल जाती है–

कांटू ने सब कुछ उगल दिया–

मेरा नाम और मेरे अड्डे का पता भी–

यह बात मुझे तब तक नहीं पता थी–

तड़ाक

अब ध्रुव के हाथ, मेरा लाखों का माल लगने ही वाला था–

पर मैं एक न एक ट्रिक हमेशा बचाकर रखता हूं।

और उसका पूरा शरीर गन-मेटल में ढला हुआ था–

ध्रुव ने एक ऐसे दुश्मन को छेड़ दिया था–

जिसे ध्रुव तो नहीं मार सकता था...

ई या या ऊऊऊ

...लेकिन वह- ध्रुव की जान ले सकता था—

धाड़

खैर, मैं अपनी कहानी से भटक गया...

...फिलहाल तो मुझे अपनी जान की फ्रिक करनी थी। वह जंगली वनपुत्र मेरी जान के पीछे पड़ा था।

और मैं अपने लाखों के माल को छोड़कर भाग नहीं सकता था—

मैंने अपनी बेल्ट का एक बटन दबाया—

और मेरी बुलेटप्रूफ रबर की बनी स्पेशल पोशाक में हवा भरने लगी—
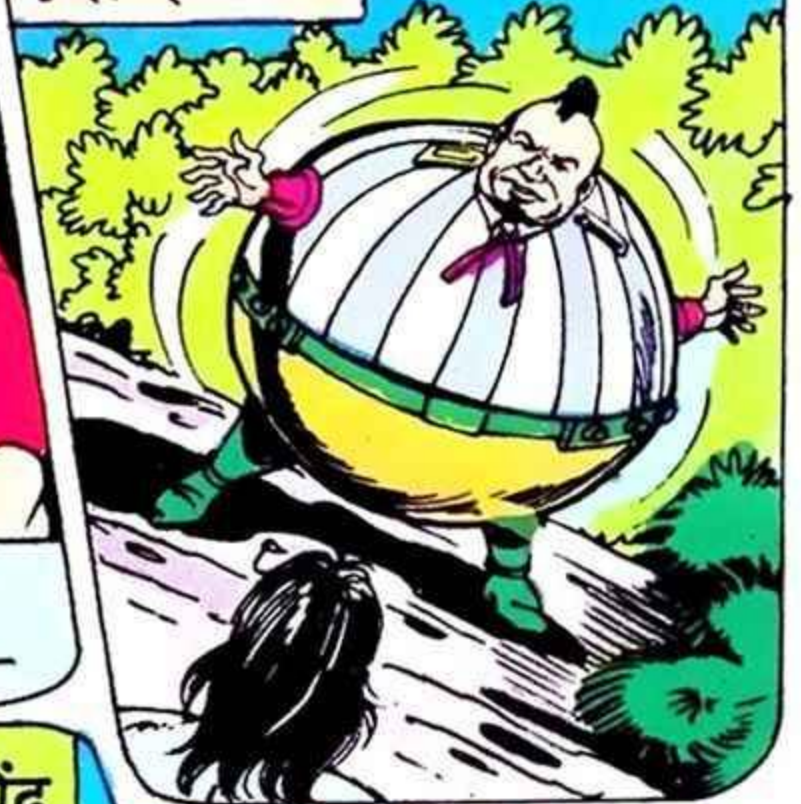
अब मुझ पर, वनपुत्र की किसी भी चाल का असर होने वाला नहीं था।

लेकिन मेरी बुलेटप्रूफ रबर की गेंद उसका मुंह जरूर तोड़ सकती थी।

धाड़

वनपुत्र ने मुझे बेलों से बांधने की भी कोशिश की—
लेकिन बेलें मुझे बांध नहीं पाईं।
फुस्स
फिस्स
फिस्स
फुस्स
क्योंकि बेलों के बांधते ही मैं हवा बाहर निकाल देता था—
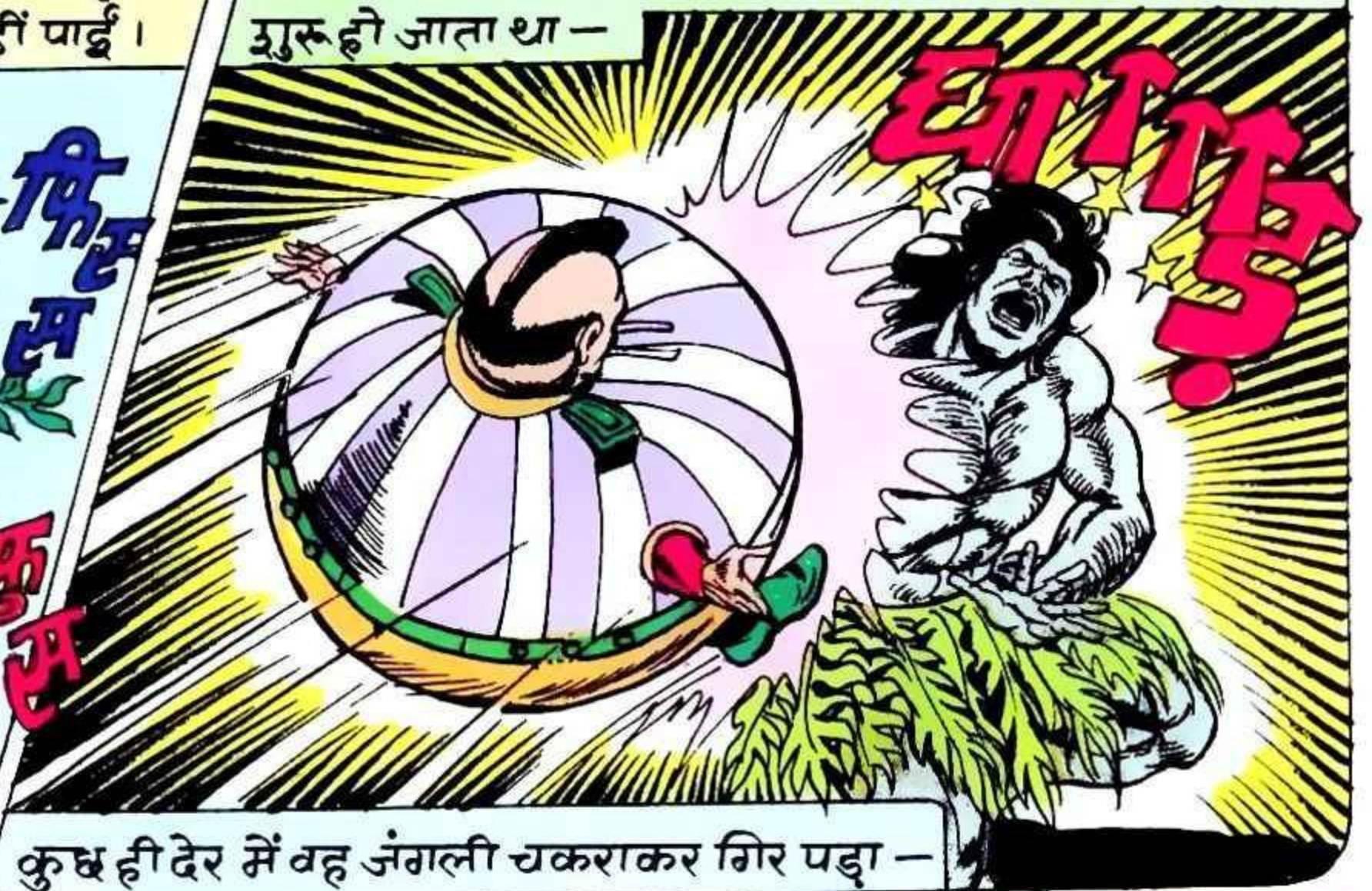
और आजाद होते ही, वापस हवा भरकर, मेरा अटैक फिर शुरू हो जाता था—
धाड़!
कुछ ही देर में वह जंगली चकराकर गिर पड़ा—

यह बड़ी सख्त जान है। कहीं यह मेरे सारे पैकेट बटोर पाने से पहले ही होश में न आ जाए। इसे थोड़ी सी हेरोइन चरवा दूं।
मैंने एक पूरा पैकेट उसके मुंह में डाल दिया।
आम तौर से इतनी डोज में, एक आदमी मर जाता है।

लेकिन वनपुत्र मेरा पैकेट बटोरना खत्म होते ही, होश में आ चुका था—
पर उसका नशा अब तक मौजूद था—
अब वह और भी खतरनाक हो गया था।

भागना ही सबसे उत्तम उपाय था।
वनपुत्र ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा था—
लेकिन कुछ ही पलों में मैंने उसको पीछे छोड़ दिया—

और राजनगर की तरफ बढ़ चला, जहां पर एक दूसरी बुरी खबर मेरा इंतजार कर रही थी—

ध्रुव, मैनेक्विन से भिड़ा हुआ था।
चाहे ध्रुव, मैनेक्विन पर वार करे...

...या 'मैनेक्विन', ध्रुव पर —

चीख, ध्रुव के मुंह से ही निकल रही थी।

यह पूरा धातु का बना हुआ है। इसलिए इस पर वार करने का मतलब अपना ही हाथ तोड़ना है।

लेकिन इस धातु के ठोस शरीर में भी एक कमजोरी है...

...इसके शरीर के अलग-अलग अंगों के जोड़।

तड़

रास्ता समझ में आते ही, ध्रुव ने, मैनेक्विन पर वार करना शुरू कर दिया —

अब आप चाहे मुझे बेवकूफ कहें बायोट्रॉन जी, लेकिन अगर दुश्मन सुपर कमांडो ध्रुव जैसा दिमाग वाला हो तो मुंह अपने-आप तारीफ उगलने लगता है।

कमाल का दिमाग लगाया था उसने —

कड़ाक

हर शक्तिशाली वार के साथ-साथ मैनेक्विन का एक-एक अंग बिखरता चला जा रहा था।

कुछ ही देर में मेरे 'मैनेक्विन' के अलग-अलग अंग सड़क पर बिखरे पड़े थे।

अब कांदू को भी अपनी मौत सामने नजर आ रही थी।

लेकिन अभी मौका था—

भागने का।

वह तेज़ी से एक तरफ भागा—

लेकिन भाग नहीं पाया। क्यों-कि अब उसके पैर जमीन पर नहीं थे—

हिर्री!

- जंगली वनपुत्र मेरा पीछा करते-करते, राज नगर तक आ गया था—

और वह अब तक नशे में था।

उगो! बढ़ो!

तबाही फैला दो!

आगे का घटनाक्रम देखने से पहले कांदू बेहोश हो चुका था।

लेकिन तब तक मैं अपने अड्डे पर पहुंच चुका था। और वहां पूरा दृश्य मुझे अपनी विडियो स्क्रीन पर दिख रहा था।

अपने 'मैनेक्विन' की आंखों में फिट 'वीडियो कैमरे के जरिए—

ध्रुव, शायद उस जंगली को पहले से ही जानता था।

वनपुत्र! क्या कर रहे हो? रुक जाओ!

?

लेकिन वनपुत्र तो हेरोइन के नशे में मस्त था।

वह भला, ध्रुव को क्यों पहचानने लगा—

तड़ाक

हमला!

ये मुझे उस दुष्ट बौने तक पहुंचने से रोकना चाहता है।

ओफ़! ये इस समय होश में नहीं है! मुझे पहचान तक नहीं रहा है।

... ऊपर से ये जड़ें मुझको बांधने के लिए, बढ़ी चली आ रही हैं।

और इन जड़ों को रोक पाने का कोई रास्ता समझ में नहीं...

... है! एक रास्ता है।

अब सोचो, बायोट्रॉन जी, कि वह रास्ता क्या हो सकता था?

नहीं समझ पाए न? अरे, वह रास्ता अगर हम-तुम सोच सकते, तो हमारा नाम सुपर कमांडो ध्रुव हो जाता—

कमाल का रास्ता सोचा था पट्ठे ने—

ये जड़ें, वनपुत्र की आवाज और हाथों के इशारे का आदेश मानती हैं।

अगर मैं इन इशारों को ही रोक दूं, तो ये जड़ें अपने आप रुक जाएंगी।

नंज डिपार्टमेंटल स्टोर के शोरूम से गिरे कपड़े उठा लिए थे ध्रुव ने—

और लपक पड़ा था उस जंगली की तरफ—

जंगली था तो बहुत शक्तिशाली ।

लेकिन ध्रुव में शक्ति के साथ-साथ फुर्ती भी थी ।

वनपुत्र के वारों को छकाते हुए–

उसने उसके मुंह पर रुमाल कस कर बांध दिया । वनपुत्र की आवाज़ बन्द हो गई ।

और इससे पहले कि वनपुत्र अपने हाथों से रुमाल हटा पाता–

ध्रुव ने उसके हाथों को, फौलादी शिकंजे में जकड़ लिया ।

अब वनपुत्र बेबस था।

लेकिन यह घटनाक्रम मेरी पसन्द के विपरीत था। क्योंकि इस वक्त, वनपुत्र नशे की हालत में ध्रुव की जान ले सकता था ।

और इससे ज्यादा खुशी की बात मेरे लिए, कोई हो ही नहीं सकती थी।

इसलिए मुझे तो वनपुत्र का साथ देना ही था, क्यों सही है न, भई बायोट्रॉन ?

आगे बोलिए श्रीमान बौना वामन !

बड़े रूखे रोबोट हो, यार !

हां तो, मुझे वनपुत्र की मदद करनी थी ।

और यह तो मैं पच्चीस बार बता चुका हूं–

कि बौना वामन एक न एक ट्रिक बचाकर रखता है।

?

मेरे 'मैनेक्विन' का हर अंग अपने आप में एक स्वतंत्र यूनिट थी ।

और उन अंगों ने ध्रुव को कसकर दबोच लिया था–

बड़ी मजेदार लड़ाई हो रही थी, बायोट्रान!
ध्रुव एक अंग को दूर झटकता था, तो अगले ही पल, वह अंग उछलकर फिर उसके ऊपर वार कर बैठता था।
आऊ sss! यह 'मैनेक्विन' तो बहुत खतरनाक है!
धड़ाक
ठक
वैसे भी, अगर वह नशेड़ी मुझे न भी बताता, तो भी मैं अपने-आप समझ जाता कि ये बुत, बौना वामन के ही बनाए हुए हैं।
ऐसा काम सिर्फ वही कर सकता है।
ऐसे 'मैनेक्विन' शहर में कई जगहों पर होंगे। उनको अलग-अलग रोक पाना असंभव है।
इनको रोकने का एक सीधा सा तरीका है, बौना वामन को ढूंढ़ना। और उससे इन बुतों को नष्ट करवा देना!
लेकिन अभी तो मैं इन अंगों से ही छूट नहीं पा रहा हूं...
...और मुझे वनपुत्र को भी तबाही फैलाने से रोकना है।
एक रास्ता समझ में आ रहा है...
...कि मैं इन अंगों और वनपुत्र को आपस में लड़ा दूं।
ये दोनों एक-दूसरे को तबाही फैलाने से रोके रखेंगे...
और तब तक मैं बौना वामन के अड्डे पर पहुंचकर उसको इन 'मैनेक्विन्स' को नष्ट करने पर मजबूर कर दूंगा!
ध्रुव के सधे हुए झटकों से 'मैनेक्विन्स' के अंग एक-एक करके उड़ते हुए—

वनपुत्र के बदन से जा चिपके —

क्योंकि मेरा सारा ध्यान ध्रुव पर था —

उस नशेड़ी ने मुझे बौना वामन के अड्डे का पता बता दिया है...

मुझे उस तक पहुंचने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

और दोनों में एक भीषण कशमकश शुरू हो गई —

पर मैं वह मनमोहक युद्ध नहीं देख सका —

सब मामला गड़बड़ हो गया था ! ध्रुव को मार पाना तो दूर रहा, अब वह मेरी तरफ आ रहा था।

यह तो भला हो मेरा कि मैं एक न एक ट्रिक हमेशा बचाकर रखता हूं।

और मेरी इस बार की ट्रिक आह ! बस पूछो नहीं, बायोट्रॉन बहुत भयानक थी।

ध्रुव समझ रहा था कि वह मेरे अड्डे में चुपचाप पहुंच रहा है।

लेकिन चप्पे-चप्पे पर लगे वीडियो-कैमरे मुझे उसकी हर हरकत की खबर दे रहे थे।

समय बहुत कम था —

वह ठीक वहीं पर आ रहा था —

जहां पर– मैं उसका इंतज़ार कर रहा था ।

बौना वामन ! आखिरकार मैंने तुमको ढूंढ़ ही लिया । अब तुम बचकर भाग नहीं सकते ।

वेलकम, मिस्टर सुपर कमांडो ध्रुव ! स्वागतम्! खुशआमदीद !

गलत ! क्योंकि अब 'तुम' बचकर नहीं भाग सकते !

ध्यान से देखो कि इस वक्त तुम कहां पर खड़े हुए हो ।

इस वक्त तुम बौना वामन के प्रिय खेल 'सांप-सीढ़ी' पर खड़े हुए हो !

और यह पूरी 'सांप-सीढ़ी' चुंबकीय लोहे की बनी है, जिसने तुम्हारे जूतों को चिपका कर रखा हुआ है ।

दरअसल यहां पर आते समय, कॉरीडोर में फैला हुआ लोहे का चूरा तुम्हारे जूतों के सोल में चिपक गया है ।

और उसी ने तुम्हारे पैरों को जकड़ रखा है। तुम हिल नहीं सकते ।

START

न... न... न ! जूतों को उतारने की कोशिश मत करना ! इस लोहे की बनी 'सांप-सीढ़ी' में तेज करेंट दौड़ रहा है।

तुम्हारे जूते के सोल ने ही तुमको करेंट लगने से बचाया हुआ है।

पर घबराओ मत! मैं खेल में बेईमानी नहीं करता...

तुमको 'सौ' तक, यानी मुझ तक पहुंचने का पूरा मौका मिलेगा।

देखो! तुम्हारे बगल में 'डार्ट' धंसी हुई है!

उस डार्ट से तुमको...

... उस घूमते चक्र पर निशाना लगाना है, जिस नंबर पर डार्ट धंसेगा, तुम्हारे पैरों के नीचे का प्लेटफार्म तुमको उतने ही घर आगे उछाल देगा।

चलो! खेल शुरू करते हैं!

पर ध्यान रहे! हर सांप वाले घर पर एक ऐसा भयंकर खतरा मौजूद है, जिससे कोई भी नहीं बच सकता!

तुम भी नहीं! यहां तक कि मैं भी नहीं।

सांप के मुंह में गिरने का मतलब... एक निश्चित मौत है।

अगर मैं यह खेल खेलने से इंकार कर दूं तो?

तो मैं दस मिनट बाद अपने सारे 'मैनेक्विनों' को शहर में तबाही मचाने के लिए छोड़ दूंगा।

तुम्हारे पास मुझ तक पहुंचने के लिए सिर्फ दस मिनट हैं, कमांडो!

खेल से ज्यादा जोरदार तो मेरे डायलॉग थे।

ध्रुव के पास, खेल खेलने के अलावा कोई चारा नहीं था।

ठक

प्लेटफार्म ने ध्रुव को चार घर आगे उछाल दिया—

अब अगर मैं दो पर निशाना लगा सकूं...

निशाना 'दो' पर ही लगा—

तो मैं सात पर पहुंच जाऊंगा!

और सात पर...

सीढ़ी होती है!

मैंने खेल एकदम परफेक्ट बनाया था, बायोट्रॉन!

नो बेईमानी!

नीचे लगे 'एस्केलेटर' यानी स्वचालित सीढ़ी ने ध्रुव को '26' नंबर पर निकाल दिया—

ध्रुव का निशाना अचूक था। डार्टें धंसती जा रही थीं।

और ध्रुव कभी उछल-कर, और कभी सीढ़ियों के रास्ते 'सौ' नंबर की तरफ बढ़ रहा था।

अब वह '71' नंबर तक आ गया था! अगला सांप '73' पर था!

पर मैं जानता था कि डार्ट, 'दो' पर कभी नहीं धंसेगी!

याद रखना, बायोट्रॉन जी! सांप का मतलब 'खतरनाक घर' है, लम्बा वाला सांप नहीं!

नहीं तो बाद में कहोगे कि आप तो झूठ बोल रहे थे श्रीमान बौना वामन!

हां, तो डार्ट, 'चार' नंबर पर आ धंसी—

और ध्रुव का बदन उड़ता हुआ '73' नंबर वाले 'सांप' को पार करता हुआ—

'75' नंबर की तरफ बढ़ने लगा—

वह '73' नंबर वाला सांप यानी 'मेरे' आदमखोर 'वीनस-मक्खी-चूस' पौधे को लगभग पार कर चुका था—

लेकिन... लेकिन बौना-वामन एक न एक ट्रिक बचाकर रखता है।

ध्रुव का बदन हवा में ही लटका दिया मैंने—

अब मैं इस रस्सी को धीरे-धीरे नीचे करूंगा।

ताकि मेरा भूखा आदमखोर पौधा, तेरे एक-एक अंग का मजा चबा-चबाकर ले सके।

ध्रुव का बदन धीरे-धीरे नीचे आने लगा, और भूखे पौधे का गुलाबी मुंह और फैल गया—

ही ही ही! वाह क्या सीन है!

हे हे हे! कमांडो, बुरा मत मानियो यार! तेरे जैसा खिलाड़ी हो तो थोड़ी-बहुत बेइमानी तो करनी ही पड़ती है।

ऊपर से मुझे उस मुंह के अंदर लार की कुछ डोरियां साफ नजर आ रही थीं।

लेकिन... लेकिन बायोट्रान जी, तभी एक चिल्लाहट हवा में उभरी—

रुक जाओ!

और पौधे का मुंह बंद हो गया—

वह दुष्ट जंगली वनपुत्र वहां तक आ गया था।

और उसका नशा भी उतर चुका था।

वनपुत्र!

हां, मैं ध्रुव!

तू... तू यहां तक कैसे पहुंच गया, रे जंगली? तुझे तो मेरे बुत के अंगों ने पकड़ रखा था!

तेरे लोहे के हाथ वनपुत्र पर भारी नहीं पड़ सकते।

क्योंकि वनपुत्र के तो लाखों हाथ हैं।

मेरी एक-एक जड़ों ने तेरे एक-एक धातु के उड़ते अंगों को पकड़ लिया।

अच्छा! तो वे लोहे के उड़ते हाथ, तेरे बनाए हुए थे! तू सचमुच महादुष्ट है!

नशा उतरने के बाद, मुझे एक पेड़ ने बताया कि ये 'अंग' मुझ पर एक लड़के ने फेंके थे।

लड़के का हुलिया सुनकर मैं तुरंत समझ गया कि वह लड़का सिर्फ मेरा मित्र ध्रुव ही हो सकता है!

पेड़ ने बताया? मुझे तो लगता है कि तेरा नशा अभी तक नहीं उतरा!

पर मैं यह जानना चाहता था कि उसने ऐसा क्यों किया?

बस फिर मैं पेड़-पौधों से ध्रुव के जाने का रास्ता पूछते-पूछते यहां तक आ पहुंचा!

गलती मेरी ही थी, बायोट्रॉन जी!

उस जंगली से बात करने के चक्कर में मेरा ध्यान ध्रुव पर से हट गया।

और उतनी ही देर में ध्रुव ने अपने-आप को आजाद कर लिया।

और इससे पहले कि मैं कोई ट्रिक चला पाता —

ध्रुव का बदन हवा में उड़ता हुआ 'सौ' की तरफ लपका —

'सौ' की तरफ —

मेरी तरफ!

लेकिन बौना वामन तो ही ही ही एक न एक ट्रिक बचाकर रखता ही है। ही ही ही!

मैं एक नंबर पीछे खिसक गया।

ध्रुव का बदन 'सौ' पर गिरा।

और गिरते ही...

प्लेटफार्म के नीचे लगी स्प्रिंग ने —

घटाक

उसको एक जोरदार झटके से दरवाज़े के पार उछाल दिया।

और दरवाजे के उस पार... अब कैसे बताऊं, बड़ा ही खौफनाक, लेकिन सुंदर दृश्य था! दरवाजे के उस पार...

छपाक

... तेजाब का कुंड था।

पहले ध्रुव की खाल गली —

ईयायाग्रह!

... फिर मांसपेशियां...

... और फिर हड्डियां तक गल गईं!

तेजाब के कुंड में सिर्फ हड्डी के छोटे-छोटे टुकड़े तैरते नजर आ रहे थे—

मैं वहां पर रुककर उन हड्डियों का गलना भी देखता। लेकिन उस जंगली के डर से रुक नहीं पाया।

और 'सांप-सीढ़ी' के नीचे लगे एस्केलेटर द्वारा वहां से भाग आया।

बस भाई बायोट्रॉन! ऐसे खेल-खेल में ध्रुव बेचारा मेरे हाथों से मारा गया!

कुछ पलों के लिए एक बार फिर सन्नाटे का साम्राज्य कोर्ट पर छा गया—

और फिर रोबोट की मशीनी आवाज़ ने उस खामोशी को भंग किया—

इनकी कथा में कुछ सच्चाई तो है, स्वामी कंकालतंत्र!

जैसे बुत से श्रीमान ध्रुव का युद्ध, रहस्यमय वनपुत्र का राजनगर में तबाही फैलाना...

परन्तु सांप-सीढ़ी?

तो श्रीमान बौना वामन, आपने श्रीमान ध्रुव को 'सांप-सीढ़ी' नामक खेल पर मारा?

हां जी, बायोट्रॉन जी!

इस खेल के विषय में मेरे 'कंप्यूटर-चिप्स' में बहुत थोड़ी जानकारी भरी हुई है।

स्वामी, जरा 'सांप-सीढ़ी' नामक खेल को कृपया दिखाइए!

देखिए श्रीमान बौना वामन! यही होता है न सांप-सीढ़ी का खेल?

हां, हूबहू ऐसा ही होता है, भाई बायोट्रॉन!
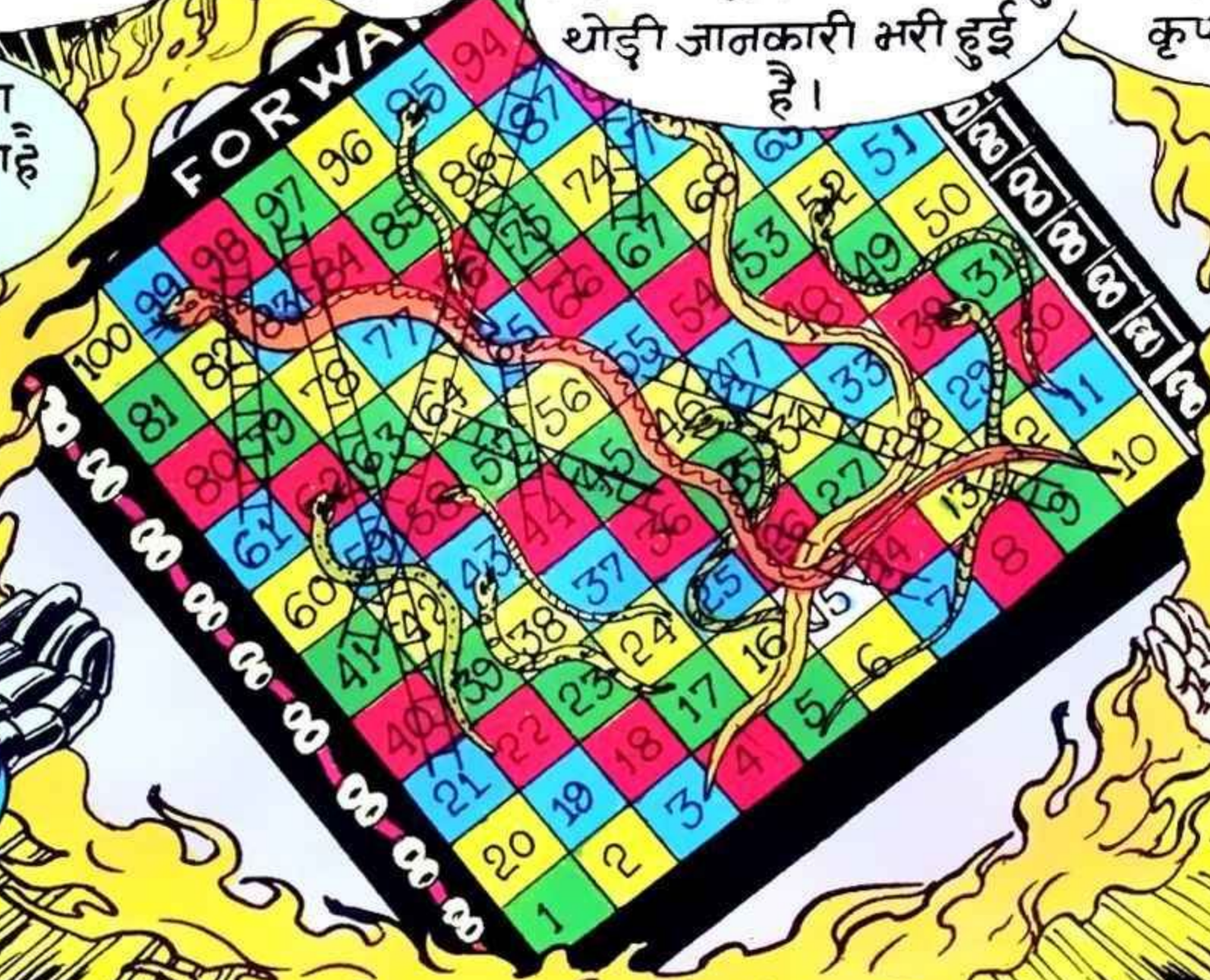
मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है, स्वामी, कि श्रीमान बौना वामन का दावा...

...सरासर झूठा है!

झूठा! मेरा दावा झूठा!

हां, आपने कहा था कि जब श्रीमान ध्रुव आप पर कूदे, तो आप 'सो' नंबर पर खड़े थे।

और जब वे कूदे, तो आप एक घर पीछे सरक गए!

लेकिन एक घर पीछे तो '99' होता है, और '99' पर सांप होता है। सांप यानी खतरा!

और ऐसा खतरा जिससे आप भी नहीं बच सकते थे।

त... तो मैं दो घर पीछे हट गया होऊंगा! आ... आगे बढ़ गया होऊंगा। अब मुझे इतना ध्यान थोड़े ही है।

दो घर पीछे हटने पर भी आपको '99' पार करना ही पड़ता।

...और आगे बढ़ने का मतलब तेजाब के कुंड में गिरना होता!

आपका दावा दोनों तरफ से ही झूठा है!

सच्चाई क्या है, खलनायक बौना वामन?

हां... ध्रुव की मुझ पर कूदने की बात सच है। फिर मैं एस्केलेटर द्वारा भाग निकला था।

वहां पर कोई तेजाब का कुंड था ही नहीं।

हा हा हा

हा हा हा

अब मैं तुमको वह ट्रिक दिखाता है, जो मैंने तुम्हारे लिए बचाकर रखी है।

अग्निद्वार! इसके पार जाकर देखो, कि वह ट्रिक क्या है?

बायोट्रॉन, अगले गवाह को बुलाओ!

अगली गवाह... कुमारी ब्लैककैट। कृपया गवाही देने पधारें!

तीसरी गवाही: मैंने मारा ध्रुव को

पलक झपकते ही लोहे के वे गर्म टुकड़े हवा में उड़ने लगे-

...जिनको सब लोग गोलियां कहते हैं।

उस भागते आदमी के जिस्म में कम से कम दो किलो लोहा तो धंस ही गया होगा-

मैं तेजी से उसकी तरफ लपकी-

कौन थे वे लोग? क्यों मारा उन्होंने तुमको?

मैं... पुलिस स्टेशन, रिपोर्ट लिखवाने... जा रहा था। ये... ये... सोने के स्मगलर हैं!

किसके आदमी थे ये? किसके?

आ... आई० जी... राजन के...।

मेरे दिमाग में कई बम एक साथ फट पड़े-

पर आगे वह कुछ नहीं बता पाया-

वह मर चुका था-

आई० जी० राजन! और सोने का स्मगलर! यकीन नहीं होता!

लेकिन मैंने नाम तो एकदम साफ सुना है। मुझे अपने शक की पुष्टि करनी होगी।

...और उसकी पुष्टि करेंगे...

...गाड़ी में सवार वे हत्यारे।

मेरे लिए जमीन पर चलने से ज्यादा आसान छतों और मुंडेरों पर कूदना था।

तीन किलोमीटर दूर—

धप

मैंने उस कार को जा पकड़ा—

हाथ हिलाकर गाड़ी रुकवाने का समय नहीं था।

और फिर वे गुंडे भी खतरनाक थे।

किसी की भी जान लेना उनके बाएं हाथ का काम था—

लेकिन मेरे लिए किसी की जान लेना चुटकी बजाने जैसा काम था—

धड़ाम

दरअसल कुत्तों के साथ, कुत्तों की बोली ही बोलनी पड़ती है।

यह हमको कुत्ता कह रही है!
इस छोटके की छोकरी की ये हिम्मत!
मुझे तो इसका बयान शुरू से ही झूठा लग रहा है।
हां! सभी जानते हैं कि आई० जी० राजन से ज्यादा ईमानदार पुलिस वाला कभी पैदा ही नहीं हुआ।
महारवल नायिका ब्लैक कैट! हम तुम्हारे आपत्तिजनक शब्दों पर पाबन्दी लगाते हैं।
तस्करों के लिए 'कुत्ता' शब्द का प्रयोग न किया जाए।
ठीक है! आइन्दा मैं 'कुत्ते' को 'तस्कर' कह लूंगी।
मैंने उन गुंडों को एक जगह पर इकट्ठा कर लिया–
भागने की कोशिश मत करना!
तुम भाग नहीं पाओगे!
अब बताओ! तुमने उस आदमी को क्यों मारा?
बताओ!
ह... हमने किसी को नहीं मारा!
तुमको गलतफहमी हुई है।
मेरी आवाज गुस्से से कांप रही थी।
मेरी उंगली में एक हरकत हुई–
और उस गुंडे की चीख से सोए पेड़ तक कांप उठे–
अब बताओ! तुमने उस आदमी को क्यों मारा?
वह पहले हमारा आदमी था! फिर गद्दार बन गया! पु... पुलिस के पास मुखबरी करने जा रहा था।
हमको बॉस ने उसको मारने का आर्डर दिया!
हमने मार दिया!
तुम्हारा बॉस! कौन है तुम्हारा बॉस?
हम... हमने बताया तो वह हमको मार...
बता!
आ... आई० जी० राजन!

खून मेरे सिर में चढ़ गया।
मेरे दिमाग की नसें फटने लगीं—
मेरा शक, यकीन में तब्दील हो चुका था।
अपराधियों से तो मुझे वैसे भी सख्त नफरत है।
लेकिन ऐसा पुलिसवाला जो अपराधी हो, उसको तो मैं जिन्दा छोड़ नहीं सकती।
मैंने उन गुंडों को अपने साथ ले जाने की ठान ली—
वे, मेरे पास, आई० जी० राजन के खिलाफ इकलौते सबूत थे।
लेकिन इससे पहले कि मैं उनको अपने साथ ले जा पाती...
...रोशनी से मेरा बदन नहा गया।
...ब्लैक कैट? क्या हो रहा है यहां पर?
एक जादुई आवाज, हवा में तैर उठी—
मेरा पूरा बदन सिहर उठा। डर से या रोमांच से, मुझे पता नहीं—
सुपर कमांडो ध्रुव की शख्सियत ही ऐसी थी।
ये लोग कौन हैं?
सोने के तस्कर!
ओह समझा! और तुमने इनको पकड़ा है! वाह! मैं इनको पुलिस स्टेशन ले जाता हूं!
मैं उन गुंडों को पुलिस स्टेशन जाने नहीं दे सकती थी—
वहां पहुंच जाने पर उनकी जान खतरे में पड़ सकती थी।
मैंने इनको पकड़ा नहीं है मिस्टर ध्रुव! ये मेरे आदमी हैं!
ओह! तो अब तुम सोने की तस्करी करने लगी हो!
तब तो मुझे तुमको भी पुलिस स्टेशन ले जाना पड़ेगा... आह!
तड़ाक
कोशिश कर लो, मिस्टर ध्रुव! पर शर्त लगा लो, नाकामयाब रहोगे।
ध्रुव के साथ कई समस्याएं थीं, जैसे किसी की जान न लेने की कसम—
—और लड़कियों पर हाथ न उठाने की कसम—

- लेकिन एक कमज़ोरी मेरी भी थी -
सुपर कमांडो ध्रुव सभी की तरह मेरा भी आदर्श था।
ताड़.
मैं, उस पर कोई घातक वार नहीं कर सकती थी-
लेकिन इसके बावजूद भी मैं यह अच्छी तरह से जानती थी, कि मैं ध्रुव से जीत नहीं सकती।
क्योंकि ध्रुव को वार बचाने के अलावा-
- बिना हाथ लगाए, हराने के -
कई तरीके आते थे।
'फायर- हाइड्रेंट' से निकली पानी की मोटी धार के भीषण धक्के ने मुझे पीछे उछाल दिया-
और पलटकर वार कर पाने से पहले ही-
मैं ध्रुव की कैद में थी।
मैंने सबसे पहले नजर घुमाकर, उन तस्करों की तरफ देखा -
वे भाग चुके थे।
अब ध्रुव से और लड़ने का कोई मतलब नहीं था।

हमारी-तुम्हारी लड़ाई खत्म, ध्रुव!

अब मैं यहां पर नहीं रुकूंगी... क्योंकि मुझे इन सोने के तस्करों के बॉस को खत्म करना है।

लेकिन जाते-जाते तुमको एक बात बता देना चाहती हूं। इस गैंग का लीडर तुम्हारा एक बहुत करीबी आदमी है!

उसे बचा सको तो बचा लो!

मेरा अगला कदम था आई० जी० राजन को खत्म करने का प्लान बनाना-

और उसके लिए, उसके घर पर नजर रखना बहुत जरूरी था-

ध्रुव को कई सवालों के सागर में डूबता-उतराता छोड़कर, मैं अंधेरे में गुम हो गई।

उसके घर पर, यानी ध्रुव के घर पर!

आखिर ध्रुव, आई० जी० राजन का बेटा था।

मेरा पॉवरफुल टेलिस्कोप मुझे उस घर का एक-एक दृश्य दिखा रहा था।

ध्रुव और उसकी छोटी बहन के बीच में, मीठी-मीठी लड़ाई हो रही थी।

क्यों नहीं हो सकता? हो सकता है, हो सकता है, हो सकता है!

पर यह बात मुझे बाद में पता चली कि हमारी पूरी बातचीत को बड़े ध्यान से सुना जा रहा था।

और उनके होंठों का हिलना मुझे बता रहा था कि, वे क्या बात कर रहे हैं।

तू करके देख!

मैं तेरी टांग तोड़ दूंगा!

क्या हो सकता है, भाई, और क्या नहीं हो सकता है, जरा मुझे भी तो बताओ!

शाम के सात बजे किस बात के लिए झगड़ा हो रहा है?

पापा! देखो न! भइया रात-रात-भर बाहर रहता है!

इसको घर पर रहने को बोलो न!

नहीं तो आज से मैं भी बाहर जाऊंगी! रात भर के लिए!

अक्ल की दुश्मन, मैं तो गश्त लगाने के लिए रात भर बाहर रहता हूं।

आज से मैं भी गश्त लगाऊंगी।

तू किस लिए गश्त लगाएगी?

तुम किस लिए गश्त लगाते हो?

मैं? मैं••• मैं तो गुंडे-बदमाशों को पकड़ने के लिए गश्त लगाता हूं!

तो मैं भी उनको पकड़ूंगी।

तू••• हा हा हा! हा हा हा! तू! अरे! किसी ने 'हूऊ' करके डरा दिया तो घर वापस भागते नहीं बनेगा!

क्यों? मैं डरपोक हूं? कमजोर हूं किसी से? अरे हाथ हिला भी दूं, तो दस बारह गुंडे तो ऐसे ही जमीन चाट जाएं!

महागप्पी थी ध्रुव की बहन! और वह दून-तीन की हांकती ही रहती, अगर बीच में न बोल उठता वह बहुरूपिया•••

•••आई० जी० राजन-

अच्छा खामख्वाह की बहस रहने दो!

सर्दियां शुरू हो गई हैं!

जरा 'फायर-प्लेस' में आग जलाने का इंतजाम तो करवाओ!

मैं यहीं बैठकर चाय पियूंगा!

मुझे धीरे-धीरे, आई० जी० राजन की दिनचर्या का पता चल रहा था—

आई० जी० राजन शाम को लगभग सात बजे घर आता था। 'फॉयर-प्लेस' में आग जलवाता था ००० और उसके सामने बैठ कर चाय पीता था।

उसको खत्म करने का वही सबसे अच्छा समय था!

मेरे दिमाग में उसको खत्म करने का, एक बहुत अच्छा आइडिया आ रहा था।

समस्या सिर्फ एक ही थी। ध्रुव! मैं ध्रुव को मारना नहीं चाहती थी!

लेकिन शाम सात बजे ध्रुव घर पर ही होता था। उस वक्त बगैर ध्रुव को खत्म किए, आई० जी० राजन को खत्म करना असंभव था।

इसी समस्या का हल सोचते-सोचते एक दिन मैं जब, नजर रखने के बाद वापस लौट रही थी तब—

अरे! यह क्या? कोई टॉर्च से 'मोर्स-कोड' में सिग्नल दे रहा है।

और उस सिग्नल का मतलब है०००

ब्लैककैट, बचाओ!

मैं बिजली की-सी फुर्ती से उस जगह पर उतरी, लेकिन—

अरे! यहां पर तो कोई भी नहीं०००

हिलना मत! वर्ना तुम्हारे बदन को जयपुर का हवा महल बना दिया जाएगा।

जिसमें खिड़कियां ही खिड़कियां हैं!

मैंने और आगे सुनने का इंतजार नहीं किया—

ताड़

मेरा फिल्मी डॉयलाग सुनने का मूड नहीं था—

मेरा मन था०००

••• चीखें सुनने का•••

तड़ाक

ईयायायाऽऽह

••• कराहें सुनने का—

खचाक

आऽऽह!

और हड्डियों के टूटने की आवाज़ें सुनने का—

मैदान साफ होने में कुछ ही मिनट लगे होंगे—

कड़ाक

अब मैं उन गुंडों से, इस बदतमीज़ी का कारण पूछ ही रही थी कि—

वाह! वाह! वाह!

जो देखना चाहता था वह देख लिया मैंने!

कौन हो तुम?

तड़ तड़

मैं आपका गुलाम हूं, मैडम ब्लैककैट!

और मेरे आदमी भी आपके ही गुलाम हैं।

तो फिर मुझ पर यह हमला क्यों?

आपकी शक्ति को परखने के लिए मैडम!

हम सब आई. जी. राजन के आदमी हैं। मैं गैंग का डिप्टी लीडर हूं, गोपाल!

हम सब आत्मसमर्पण करना चाहते हैं, पर कर नहीं सकते!

क्यों ?

आत्मसमर्पण तो पुलिस के सामने ही किया जाता है, और पुलिस का सबसे बड़ा अफसर ही हमारा बॉस है।

अब बगैर उसके रास्ते से हटे, हम आत्मसमर्पण भी नहीं कर सकते।

अगर आप उसे रास्ते से हटा दें, तो हम आत्मसमर्पण करने को तैयार हैं।

मेरे दिमाग में तुरन्त एक बिजली सी कौंध गई—

शाम को सात बजे, ध्रुव को घर से बाहर करने का रास्ता मुझे समझ में आ रहा था –

उस आई० जी० को तो मैं रास्ते से चुटकी बजाते ही हटा दूंगी।

लेकिन उसके लिए तुमको मेरा एक काम करना पड़ेगा! एक डकैती डालनी पड़ेगी।

डायमंड एक्सचेंज सेंटर में—

शाम के पौने सात बजे—

खबरदार! कोई हिलने की कोशिश न करे!

डकैती डाले हुए एक मिनट हो चुका था—

और मेरी बेसब्री बढ़ती ही जा रही थी—

एक-एक मिनट मेरे लिए भारी पड़ रहा था —

खतरे का अलार्म तो निश्चित तौर से बज चुका होगा...

ध्रुव अब तक क्यों नहीं आया?

मेरी पलक आधे सेकेंड के लिए झपकी होगी...

...कि पूरा दृश्य ही बदल गया—

धाड़

सुपर कमांडो ध्रुव घटनास्थल पर आ चुका था—

प्लान के हिसाब से तो मुझे वहां से तुरन्त, आई० जी० राजन के घर की तरफ रवाना हो जाना था-

लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकी-

मंत्रमुग्ध हो गई थी मैं-

- सुपर कमांडो ध्रुव की वह बेमिसाल एक्शन पैक्ड फाइट देखकर-

बिजली भी शायद उसकी फुर्ती के सामने मात खा जाती-

और गोलियां - गोलियां तो उसके अगल-बगल से ऐसे गुजर रही थीं जैसे कि उसको पहचानती ही नहीं-

अचानक मुझे ध्यान आया ! ओफ मुझे तो आई० जी० राजन को खत्म करना है ! और मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है।

ध्रुव को अभी एक-दो मिनट का समय लगाना था—

और आई० जी० राजन का घर 'डायमंड एक्सचेंज' से ज्यादा दूर नहीं था—

और उसके घर पर सिर्फ दो सिपाहियों का मामूली सा पहरा था।

उनकी नजर बचाकर छत पर पहुंचना मामूली बात थी मेरे लिए—

और चिमनी के अंदर पहुंचकर, दीवार पर चिपका देनी थी।

अब वह घर आकर, फायर प्लेस में आग जलवाएगा! आग की लपटें धीरे-धीरे, डायनामाइट तक पहुंचेंगी—

और छत पर पहुंचकर मुझे गुम हो जाना था, 'फायर-प्लेस' की चिमनी के अन्दर—

डायनामाइट की छड़ें—

डायनामाइट तपेगा—

और फिर एक धमाके के साथ फटेगा।

और उसीके साथ फट जाएगा आई० जी० राजन का शरीर—

सात बजने ही वाले थे। आई० जी० राजन घर आ चुका था।

घर के बाहर उसकी गाड़ी मैंने खड़ी देख ली थी—

मेरा प्लान पूरा हो चुका था—

अब धमाका होने से पहले मुझे वहां से बच निकलना था।

लेकिन लाख सतर्कता के बावजूद भी–

ए, कौन हो तुम? रुक जाओ।

इसको छोड़ना मत, रामसेवक! यह आई॰ जी॰ साहब के घर के अंदर से आई है।

मुझे रोककर उन सिपाहियों ने अपनी जानों के साथ दुश्मनी मोल ले ली थी –

खचाक

आई॰ जी॰ राजन की बेटी मुझे देख रही थी –

लेकिन शायद डर के मारे, वह चिल्ला तक नहीं पा रही थी–

मैं वहां से बचकर भाग निकली–

लेकिन सिर्फ दो कदम तक–

मेरा रास्ता रोककर खड़ी हुई थी –

चंडिका! तुम यहां?

हां, मैं! तुमसे पूछने आई थी कि तुम यहां पर क्या करने आई थी?

रिपोर्ट लिखवाने।

चंडिका भी एक अनोखी लड़की थी। कौन थी यह तो मैं नहीं जानती?

लेकिन थी वह अपराधियों की दुश्मन–

और मैं थी एक अपराधी–

उसको कुछ समझा पाने का समय मेरे पास नहीं था–

वहां से, जल्दी से जल्दी निकल भागना ही मेरा मुख्य मकसद था –

तड़ाक

पर चंडिका का मुख्य मकसद, मुझे रोकना था –

लेकिन यह मैं समझ रही थी कि उससे साफ-सुथरी लड़ाई लड़कर जीतना असंभव है –

धाड़

लगता है कि अब मुझे तेरी लाश पर से गुजरकर ही जाना होगा चंडिका!

उसके लिए तुमको कम से कम पचास साल और इंतजार करना पड़ेगा, ब्लैक कैट! उससे पहले मरने वाली नहीं हूं।

मुझे नहीं मालूम था कि चंडिका ने ऐसी जबर्दस्त फाइटिंग कहां से सीखी थी –

वैसे तुमको इतना इंतजार करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

मैंने पहले ही ध्रुव को सिग्नल भेजकर यहां बुला लिया है, वह तुमको ज्यादा अच्छी तरह से जानता है।

वह आकर खुद ही पता कर लेगा कि तुम्हारे यहां पर आने का मकसद क्या है।

धम

उसके आने तक मैं यहां से उड़न छू...

ब्लैककैट! चंडिका!

रुक जाओ!

आवाज कानों में पड़ते ही मेरे शरीर में फिर से सिहरन दौड़ पड़ी—

ध्रुव एक और लड़ाई जीत कर वापस आ गया था—

मुझे इस गोपाल ने सब कुछ बता दिया है, ब्लैक-कैट! तुमको जबरदस्त गलतफहमी हुई है।

यह है सोने के स्मगलरों का बॉस! ...यानी इल्लैया आई० जी० राजन...

गोपाल राजन।

इसके आदमियों ने हमारी और तुम्हारी लड़ाई के दौरान हुई सारी बातें सुन ली थीं। और वही सुनकर इस आई० जी० राजन ने यह प्लान बनाया था।

इस प्लान के जरिए इसके दो दुश्मन एक साथ इसके रास्ते से हट जाते...

एक आई० जी० पुलिस राजन मेहरा और दूसरी ब्लैककैट!

ओफ्! इतनी बड़ी गलतफहमी! इतनी बड़ी मूर्खता!

मेरा दिमाग चक्कर खा रहा था। सुन सब कुछ रही थी पर समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था—

मेरी लड़खड़ाती जुबान ने, बड़ी मुश्किल से कुछ शब्द उगले—

ध... ध्रुव! अपने डैडी की जान बचा लो!

फायर-प्लेस की चिमनी में डायनामाइट फिट है...

...जो किसी भी समय फट जाएगा।

ध्रुव ने आगे कुछ भी सुनने का इंतजार नहीं किया—

उसके दिमाग ने इतनी ही देर में सब कुछ समझ लिया होगा।

कि फायर-प्लेस में आग जल चुकी होगी—

और चिमनी काफी गर्म हो चुकी होगी।

- अब उस रास्ते में अन्दर नहीं जाया जा सकता-

चंडिका भी, न जाने क्यों अपनी जान खतरे में डालकर, ध्रुव के पीछे लपकी-

वह मुझे भी भूल चुकी थी।

वह ध्रुव से काफी पीछे थी-

ध्रुव, पहले फायर-प्लेस तक पहुंचा होगा।

उसके चिल्लाने की आवाज़ बाहर तक आई-

पापा हटिए।

बात समझाने का समय नहीं रहा होगा!

उसने अपने पिता को एक तरफ धक्का दिया होगा।

लेकिन शायद वह खुद हट नहीं पाया होगा।

ब ड़ा म

क्योंकि धमाके के ठीक बाद...

- पत्थर और ईंटों के टुकड़ों के साथ, ध्रुव का शरीर हवा में उड़ता हुआ-

...बाहर आ गिरा-

उस बेमिसाल इंसान का क्षत-विक्षत शरीर, जिसने हमेशा दूसरों का ही भला किया-

मरते दम तक भी-

उसकी सांसें खामोश थीं। बहता खून भी धीरे-धीरे जमता जा रहा था।

हर हरकत थम चुकी थी।

सुपर कमांडो ध्रुव... मर चुका था।

मेरा पहले से ही घूमता दिमाग और चक्कर खाने लगा। बिना कुछ सोचे-समझे मैं वहां से निकल भागी। घर आकर चार दिनों तक, बिस्तर पर पड़ी रही।

लेकिन अखबारों में कुछ नहीं निकला। ध्रुव की मौत की खबर सेंसर कर दी गई थी।

पर ऐसी खबरें दबती नहीं हैं। धीरे- धीरे सबको पता लग गया कि ध्रुव मारा गया है। हर अपराधी दावा करने लगा कि ध्रुव को उसने मारा है!

पर सच्चाई सिर्फ मुझे पता थी।

और उसी सच्चाई की आज मैं इस कोर्ट में बयान कर रही हूं।

हुम! तो कुमारी ब्लैक कैट, आपने फायर-प्लेस में डायनामाइट विस्फोटक की छड़ें फिट कर दी थीं।

वे धीरे - धीरे गर्म हुईं। और फिर इतनी गर्म हुईं कि वे फट गईं।

और उस धमाके से श्रीमान ध्रुव मारे गए!

हां, ठीक ऐसा ही हुआ।

स्वामी कंकालतंत्र! ब्लैक कैट का बयान शत प्रतिशत झूठा है। इन्होंने ध्रुव को नहीं मारा!

डायनामाइट नामक विस्फोटक आग में जलकर कभी नहीं फटता है। उसमें धमाका करने के लिए, उसके अन्दर पलीता डालकर, पलीते में आग लगानी पड़ती है।

दरअसल कोई भी बारूद सिर्फ आग में जलकर नहीं फट सकता। आग में वह बाकी की चीजों की तरह ही जलकर राख हो जाता है।

यह बात तो, हर वह बच्चा जानता है, जो दीवाली नामक त्योहार के दिन 'पटाखे' नामक विस्फोटक छुड़ाता है।

कि पलीता निकाल-कर आग लगाएं तो पटाखा नहीं फटता।

ब्लैककैट, तुम्हारा दावा खारिज किया गया!

पर तुमने झूठ क्यों बोला?

ध्रुव एक अच्छा इंसान था कंकालतंत्र! बहुत अच्छा!

ऐसे अच्छे इंसान को मारने का श्रेय ये अपराधी लें, यह मुझे गंवारा नहीं था।

इसलिए मैंने झूठ बोला! डायनामाइट फिट करने तक की कहानी तो सच है।

लेकिन वह डायनामाइट फटा नहीं था। ध्रुव मेरे हाथों से नहीं मारा गया।

तुम भी अग्निद्वार के पार जाकर इंतजार करो, ब्लैककैट !

तुम सबके झूठ का फैसला मैं एक साथ ही करूंगा।

बायोट्रॉन ! अगले गवाह को बुलाओ !

डॉक्टर वायरस... पिप ... पिप... पिप... गवाही देने... पिप... पिप...

स्वामी, मेरी ऊर्जा... पिप... पिप... खत्म हो रही है। पिप... पिप... पिप...

मुझे बायोट्रॉन की बैटरी चार्ज करने में थोड़ा समय लगेगा। तब तक के लिए मध्यांतर घोषित किया जाता है !

मध्यांतर के बाद मैं कंकालतंत्र बाकी महाखलनायकों यानी ग्रैंडमास्टर रोबो, मादामसुप्रीमा राक्षस चंडकाल, डॉक्टर वायरस चुंबा सम्राट की गवाहियां सुनूंगा !

और तब फैसला करूंगा कि...

सुपर कमांडो ध्रुव का...

हत्यारा कौन

इस महारोचक दर्दनाक कथा का अंतिम भाग अतिशीघ्र प्रकाशित हो रहा है...

आंसू थामकर इंतजार करिए...

क्रमशः

राज कॉमिक्स

सर्वनायक वर्ष 2014

महामानव की गवाही

सुपर कमाण्डो ध्रुव

मैंने मारा ध्रुव को
और हत्यारा कौन
अतिरिक्तांक

पूर्वसार

सुपर कमांडो ध्रुव मारा गया! किसने मारा, कैसे मारा? कोई नहीं जानता! मगर दावा हर कोई कर रहा है कि मैंने मारा ध्रुव को! कारण था एक रहस्यमय पात्र कंकालतंत्र, जो जानना चाहता था कि वास्तव में सदी के सबसे बड़े महानायक का हत्यारा आखिर है कौन? और तब बैठी 'क्राईम कोर्ट' ताकि दूध का दूध और पानी का पानी किया जा सके! और जो खुद को ध्रुव का हत्यारा साबित कर देता उसे मिलनी थी पूरी दुनिया पर राज करने लायक शक्ति! उसके बाद शुरू हुआ एक के बाद एक गवाहियों का सिलसिला! सबने सुनाई अपनी कहानी कि कैसे उन्होंने ध्रुव को मौत के घाट उतारा। उनकी गवाहियों को कंकालतंत्र के रोबोट बायोट्रॉन ने साबित कर दिया झूठा! अभी ध्वनिराज, बौना वामन और ब्लेककैट की गवाहियां हुई ही थीं कि क्राईम कोर्ट में कदम रखा उस जलजले ने जिसे दुनिया 'महामानव' के नाम से जानती है! उसके आने का मकसद था ध्रुव को मारने का श्रेय लेने वाले झूठों को ऊपर का रास्ता दिखाना। क्योंकि महामानव के अनुसार ध्रुव को उसने मारा था और कोई और उसे मारने का श्रेय ले उसे यह हर्गिज मंजूर नहीं था! लेकिन इससे पहले कि वह क्राईम कोर्ट में बैठे सभी महाखलनायकों को खत्म कर देता कंकालतंत्र ने उससे अपनी गवाही देने का अनुरोध किया! महामानव के लिए क्राईम कोर्ट जैसी चीज मायने ही नहीं रखती थी इसलिए उसने अपने विवरण को गवाही मानने से इनकार कर दिया और बताया कि आखिर उसने ध्रुव को कैसे मारा?

महामानव की गवाही

मध्यांतर के बाद-

अब तुम्हारी बैटरी पूर्ण रूप से चार्ज है बायोट्रॉन! अगली गवाही के लिए महाखलनायक....

एक मिनट, एक मिनट!

कब से ढूंढ़ रहा हूं मैं इस 'संत समागम' को!...

...पर तुम लोग तो इतनी पर्तों के अंदर छुपे हो, जितनी प्याज में भी नहीं होतीं।

ओऽऽ! तुममें से कई लोग मुझे जानते नहीं हो।

आप कौन हैं, श्रीमान्?

दरअसल कीड़ों से मैं जान पहचान नहीं करता, सिर्फ उन्हें मसलता हूं!

और आपने इस अत्यंत गुप्त कक्ष को कैसे ढूंढ़ निकाला?

आज भी यहां पर मैं तुम सब कीड़ों को मसलने ही आया हूं जो ध्रुव को मारने का दावा कर रहे हैं।

शांत हो जाइए, श्रीमान! पहले अपना परिचय तो दीजिए, फिर मसलने की प्रक्रिया शुरू कीजिएगा।

महामानव हूं मैं! मानव के विकास की अंतिम सीमा।

मानव मस्तिष्क इस स्तर से ऊपर नहीं जा सकता।

फिर भी उस लड़के ने मुझे मात दे दी जिसकी मौत के श्रेय का लड्डू खाने को तुम सब यहां पर बैठे हुए हो।

जबकि सच तो यह है कि उसकी जान मैंने ली है।

महाशक्तिशाली महामानव ने!

यह महानमूना आखिर है कौन?

श्रीमान महामानव का जिक्र U.N. की क्लासिफाईड फाईल्स में है। परंतु इनका कोई चित्र नहीं है।

अगर आप हमें मसलने से पहले अपनी गवाही देने की कृपा करें, तो हमें अत्याधिक प्रसन्नता होगी, श्रीमान महामानव!

गवाही? जब मैं ऐसी अदालत को ही नहीं मानता तो गवाही कैसी, मूर्ख?

चलिए, श्रीमान, हम इसे गवाही नहीं, एक कहानी समझकर सुन लेते हैं। आपके वृतांत को हम गवाहियों में शामिल नहीं करेंगे।

मरने वालों की आखिरी ईच्छा मैं जरूर पूरी करता हूं, तो सुनो...

अपने लाखों वर्षों के जीवन में मुझे एक ही इंसान ने मात दी है।

सुपर कमांडो ध्रुव ने!

उसने मुझे खौलते लावे में गिराकर तो मेरा अंत ही कर दिया था।

क्योंकि गर्मी से मेरी मानसिक शक्ति एक बच्चे से भी गई गुजरी हो जाती है।

वह तो भला हो मेरी बची-खुची मानसिक ऊर्जा का जिसने मुझे अपने कवच में सुरक्षित रखा था।

पर मेरा दिमाग उस लावे से भी ज्यादा खौल रहा था! आखिर एक प्रगैतिहासिक दिमाग मुझे भला कैसे मात दे सकता था? मैं उसको अपनी चुटकी में पकड़कर मसलने के लिए बेताब हो रहा था। पर बेतहाशा ऊष्मा ने मुझे बंदी बना कर रखा था।

तभी न जाने कहां से उस ऊर्जा का मुझसे संपर्क हुआ। किसी मानसधारी की शक्ति का सिर्फ एक अंशमात्र थी वह ऊर्जा। पर उतनी ही मानसिक ऊर्जा ने मुझे इतनी शक्ति दे दी कि मैं...

...एक जलगत ज्वालामुखी को फोड़कर बाहर आ सकूं!

सतह पर आते ही मुझे वह शिप नजर आई!

SENYOR

जिसमें सर्कस के कुछ कलाकारों और जानवरों को भारत ले जाया जा रहा था।

उन्होंने मुझे बौने जोकरों जैसा अजूबा समझ अपने साथ ले लिया।

वहीं पर मुझे ध्रुव के बारे में काफी कुछ जानने को मिला। दुनिया भर के सर्कस के लोगों के बीच भगवान की तरह पूजा जाता था वह।

COOLING

पर मुझे तो ठीक से सोचने के लिए भी ठंडा माहौल चाहिए था।

और वह जगह जल्दी ही मुझे मिल गई।

उस कूलिंग क्यूबीकल में जिसमें उत्तरी ध्रुव से लाई गईं पेंगुइन्स को रखा गया था।

अब मेरे दिमाग ने थोड़ा-थोड़ा काम करना शुरू कर दिया था।

मैं जानता था कि मेरी मानसिक शक्तियों को अपने पुराने स्तर पर आने में समय लगेगा। और उस दौरान कुछ भी हो सकता था।

मैं फिलहाल सिर्फ जानवरों जैसे क्षीण मानसिक स्तर वाले दिमागों को ही कंट्रोल कर सकता था।

और अब उनकी मदद से ही मुझे सबसे पहले उससे निबटना था...

...जो मेरी इस कमजोर हालत में मेरे लिए खतरा बन सकता था।

इस मैच में तुम्हारे शामिल होने से हिंदुस्तान में इस खेल को बहुत बढ़ावा मिलेगा, ध्रुव!

हम तुम्हारा जितना शुक्रिया अदा करें वह कम है।

हालांकि मुझे तुमसे एक शिकायत है।

वह क्या?

कि तुम खेल में शामिल नहीं हो रहे हो।

WORLD C IERS

STADIUM

वर्ना यह गेम अभूतपूर्व...

...बन...जाता...

हैंऽऽऽ!

कैप्टेन!

बचो!

यह क्या अजूबा है? अब क्या आसमान से.. हाथी बरसेंगे।

यह कवच! यह सामान्य नहीं लगता।

इस हाथी को किसी खास मकसद से भेजा गया है।

...और इसे मैंने भेजा है!

कौन है यह जिसने मेरा दिमाग...

...पढ़ लिया! महामानव! तुम... तुम ज्वालामुखी के लावे की कैद से आजाद कैसे हो गए?

यह तो मैं खुद भी नहीं जानता।

पर यह जान ले कि कोई भी कैद मुझे तुझे मौत देने से रोक नहीं सकती।

लगता है तुम अपना होमवर्क करके नहीं आए हो, महामानव!...

...वर्ना तुम जानते होते कि यह बेज़ुबान ध्रुव के दुश्मन कभी नहीं हो सकते।

आह!!!

ध्रुव की वह चीख मेरे कानों में संगीत सी बज उठी। पर अभी तो ऐसी चीखें और सुननी थीं मुझे।

गोलियां मेरे वश में आ चुके हाथी के मानसिक कवच को पार नहीं कर सकती थीं।

ध्रुव को मरना ही था। पर मुझे हराने वाला इतनी जल्दी भला कैसे मर सकता था।

ओ! ओ! ओ! एक बात तो मैं बताना भूल ही गया! ऐसे ही तुम्हारे दो और बेज़ुबान दोस्त तुम्हारी बहन श्वेता और बाप राजन मेहरा के पीछे लगे हैं।

एक 2000 पाउंड का शेर है और दूसरा 7000 पाऊंड का गैंडा।

ध्रुव का दिमाग चिंता में उलझा दिया था मैंने। बचाव के उपाय सोच पाना उसके लिए मुश्किल था।

श्वेता! तू कहां है? तू किसी खतरे में तो नहीं है?

मुसीबत में तो पापा का यह सरकारी बंगला है। करीम जैसी पर्सनेलिटी वाला कोई प्राणी इस पर कब्जा करने की कोशिश कर रहा है।

और पापा-मम्मी बाहर गए हुए हैं। एयर फोर्स डे पर चीफ गेस्ट बनकर।

तू.. तू बस वहां से बाहर निकल। वह... गैंडा तेरा पीछा करेगा। उससे बचते रहना और अब ध्यान से सुन...

पता नहीं ध्रुव अपने बचकाने स्टार में क्या फुसफुसा रहा था। मेरा ध्यान तो फिलहाल...

...उस हाथी को और खूंखार बनाने में लगा था।

आऽऽह! इस पर तो कोई भी वार असर करेगा ही नहीं। चाहे मैं कितनी तर-कीब लगा लूं।

आऽऽह! इसे थोड़ा उलझाना होगा।...

ताकि मुझे अपनी योजना पर काम करने का मौका मिल सके।

और इसमें मेरी मदद करेगी यह फुटबॉल मशीन, जिसका प्रयोग खिलाड़ियों और गोलकीपर को ट्रैन करने में किया जाता है।

अब इसका गुस्सा भड़केगा!

चिंघाऽऽ!
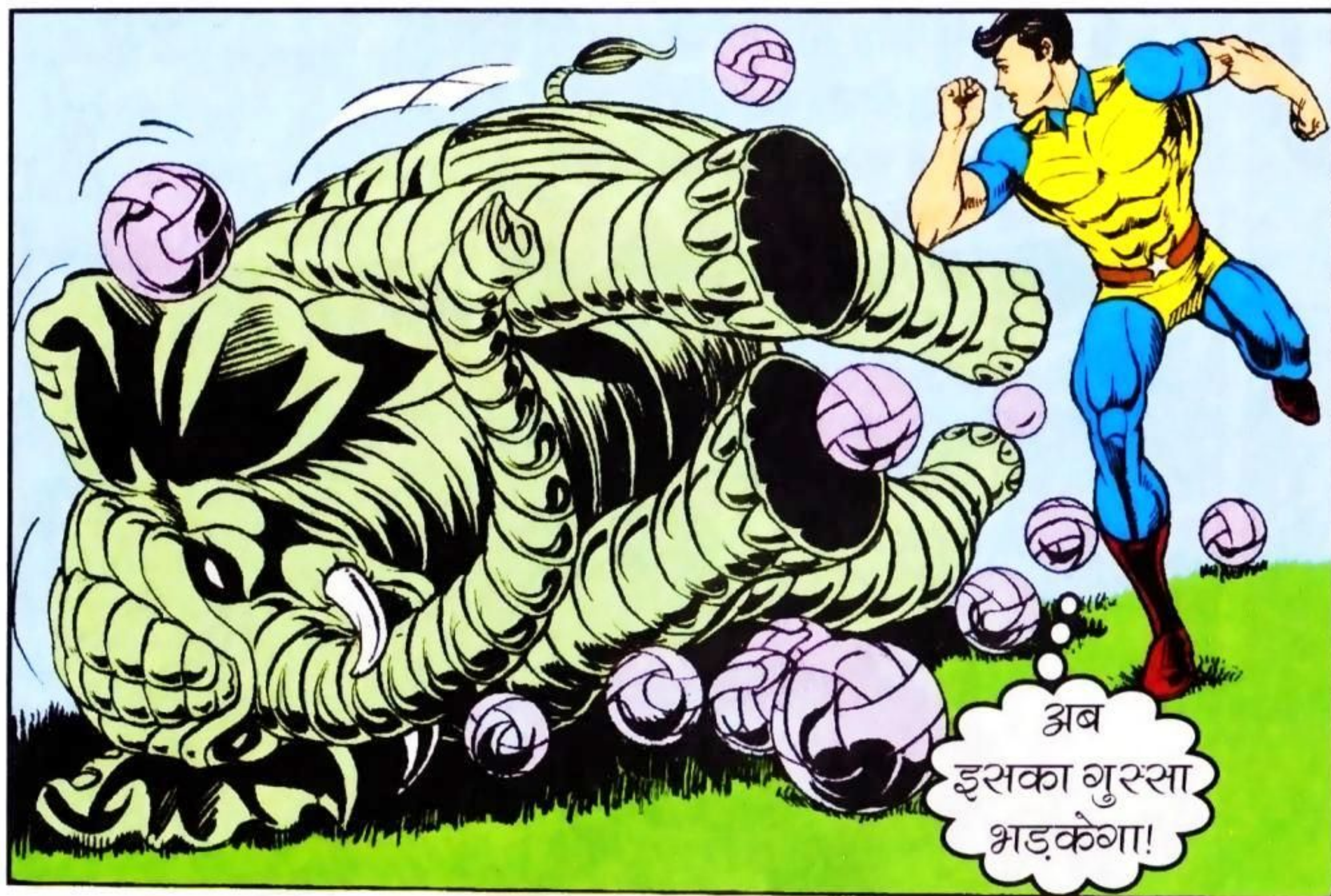
कोई योजना बनाई थी उसने। पर मैं उसका दिमाग पढ़ पाने में असमर्थ था अपना सारा ध्यान उन जानवरों को कंट्रोल करने में जो लगाना पड़ रहा था।

मुझमें वह ऊर्जा बढ़ती हुई महसूस हो रही थी जिसने मुझे लावे से बाहर निकलने में मदद की थी।

शायद बचने की आखिरी कोशिश कर रहा था।

लेकिन साथ ही साथ एक और आश्चर्यजनक चीज हो रही थी।

यह न ध्रुव के लिए अच्छी खबर थी और न ही उसके परिवार के लिए। उसकी बहन मौत के ज्यादा करीब थी।

महामानव... यानि मेरे क्रोध से उनको कोई नहीं बचा सकता था।

सिवाय खुद महामानव के।
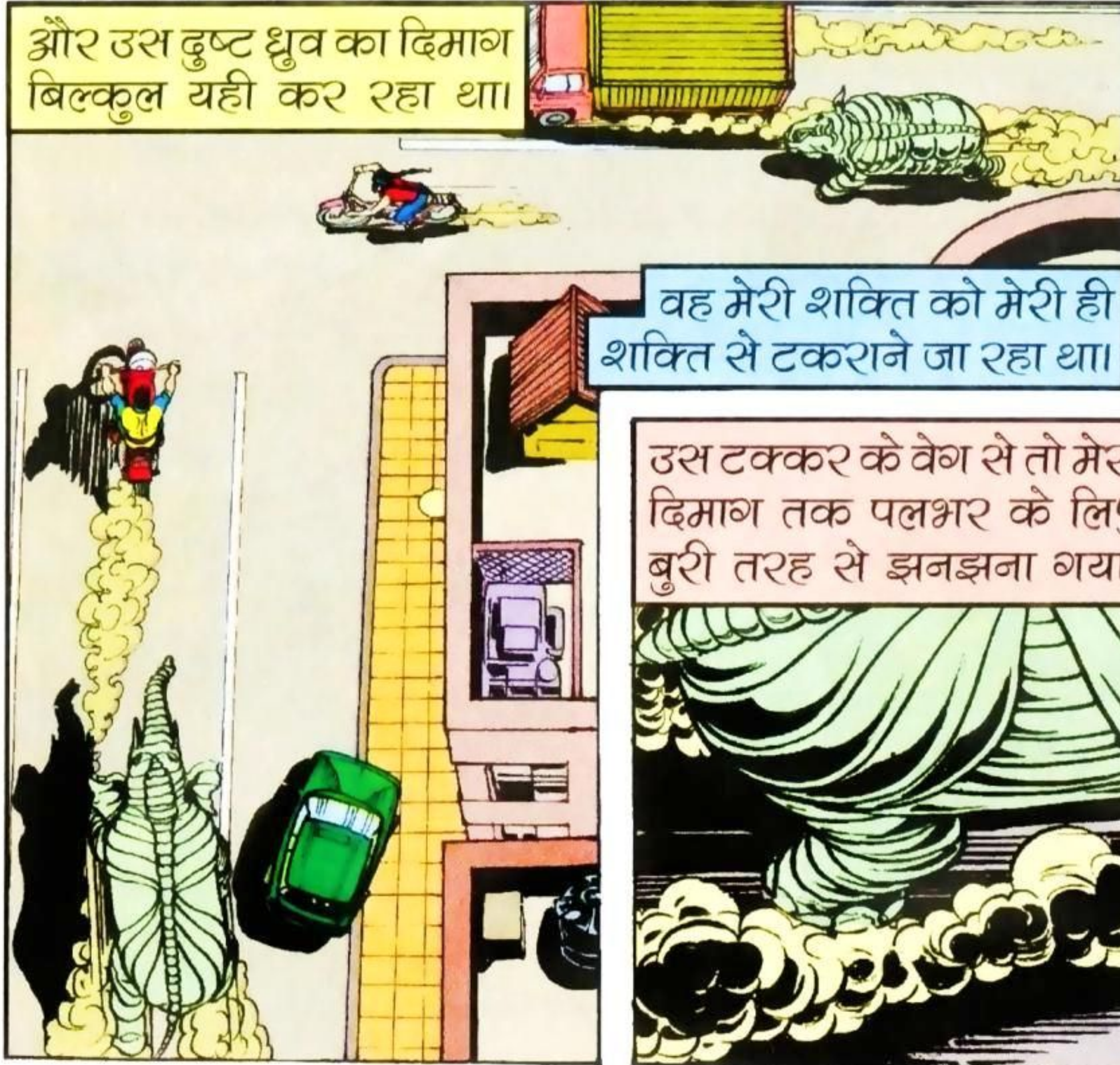
और उस दुष्ट ध्रुव का दिमाग बिल्कुल यही कर रहा था।

वह मेरी शक्ति को मेरी ही शक्ति से टकराने जा रहा था।

उस टक्कर के वेग से तो मेरा दिमाग तक पलभर के लिए बुरी तरह से झनझना गया।

जरा सोचो उस बेचारे हाथी और गैंडे का क्या हाल हुआ होगा। तुरंत बेहोश हो गए थे दोनों।

पर इस मामूली सफलता ने उस लड़के का दिमाग सातवें आसमान पर पहुंचा दिया था।

अच्छा वार किया तूने! पर अपने मां-बाप को मेरे शेर से कैसे बचाएगा?

बचना तो अब तुम्हें है, महामानव!

अपने उस शेर को तुरंत रोक दो, वर्ना मैं तुम्हारा यह उड़न किला तोड़कर तुम्हारे दिमाग की गर्मी निकाल दूंगा।

हाहाहा। इस कूलिंग एनक्लोजर तक तो न्यूक्लियर मिसा-इल भी नहीं पहुंच सकती, बच्चे।

गीदड़ भभकी मत दो।

मैं तो सिर्फ तुम्हें सावधान कर रहा था। खैर, जैसी तुम्हारी मर्जी।

स्वीऊंऽऽऽ! क्ककककक क्वक!

उस आवाज का मतलब मैं तो नहीं। पर वे पेंगुइन्स जरूर समझ गईं। और मैं एक सेकेंड में अपनी गलती समझ गया।

मैंने पेंगुइन्स को निरीह समझकर और अपने साथ रखकर एक भयानक भूल कर दी थी। क्योंकि ध्रुव चिड़ियों से बात कर सकता था।

मेरे कुछ समझ पाने से पहले ही उन पेंगुइन्स ने, बिजली की सी फुर्ती से कूलिंग एनक्लोजर के कंट्रोल्स को ऑफ कर तोड़ डाला था।

उस बंद डिब्बे में गर्मी और घुटन तेजी से बढ़ने लगी थी।

अब उसे तोड़ना ही एकमात्र उपाय था। ठीक वैसा ही हुआ जैसा वह दुष्ट लड़का चाहता था।

अब मैं एक बार फिर ध्रुव के हाथों से मात खाने ही वाला था क्योंकि बाहर चमकता सूर्य मेरा हाल फिर से बेहाल करने वाला था।

लेकिन किस्मत इस बार मेरे साथ थी।

अरे! मेरी मानसिक ऊर्जा तो इस बार गर्मी में भी बरकरार है।

अच्छा किया कि तूने मुझसे यह डिब्बा तुड़वा दिया। वर्ना मुझे कभी पता ही नहीं चलता।

अरे! भागता कहां है? थैंक्यू तो लेता जा मेरा।

अब तो पापा मम्मी को मुझे ही बचाना पड़ेगा, श्वेता!

मैं भी चलूंगी। शेर, कॉक्रोच जितना डरावना थोड़े ही होता है।

ठीक है, बहादुर बहन, मान गया।

पर फिर भी तू घर जा।

राजनगर एयर बेस-

यह है क्या चीज और यह यहां पर टपका कहां से है?

गोलियों पर तो यह ध्यान तक नहीं दे रहा है।

सभी पीछे हट जाएं। हम 'एयर स्ट्राइक' करने जा रहे हैं।

टार्गेट लॉक्ड! स्ट्राईक वन सक्सेसफुल!! टार्गेट...

...डेस्ट्रॉएड ...करररर आऽऽऽह!
ओ माई गॉड!
यह शेर है या शेर का भूत!

है तो यह शेर ही, पापा! लेकिन किसी भूत से कम नहीं है।

आप सब लोग पीछे हट जाइए।
मैं इससे बात करके शांत करने की कोशिश करता हूं।
गुर्रर गुर्र गुर्ररर

आऽऽऽह!
हाहाहा! यह बातचीत में नहीं, तुम्हारा खून पीने में दिलचस्पी रखता है।

महामानव की शक्तियां गर्मी में भी बरकरार हैं, बल्कि उल्टे वे शक्तियां बढ़ रही हैं। कैसे?

अब यह तारीफ नहीं, सच्चाई है।
उसने डटकर मुकाबला करने की ठान ली थी।
शायद पेंगुइन्स ने उसे बता दिया था कि वे सभी जानवर सर्कस के हैं।

तभी तो उसने शेर की कमजोरी का फायदा उठाया। जलते छल्ले को देखकर शेर के अंदर उसके पार कूदने की ईच्छा जाग उठी।

और वह ध्रुव की चाल में या कहो, पिघलते टायर में फंस गया।

अब किसी भी क्षण शेर उसका सिर चबाने वाला था।

गर्र्र्र्र्र्र्र

पर एक कमी रह गई थी। टायर में सिर्फ उसके अगले पंजे फंसे थे।

ध्रुव, अपने ही जाल में फंस गया था।

लेकिन तभी वह हुआ जिसकी मैं कल्पना तक नहीं कर सकता था।

मेरे मानसिक कवच को कागज की तरह काट डाला था उस खड्ग ने।

पर खड्ग था तो कोई उसे चलाने वाला भी होना चाहिए था।

और तब बाहर आया वह शख्स जो शायद मेरी जान भी था और मेरी मौत भी।

किसने किरीगी की यौगिक शक्तियों को खींच कर उनका प्रयोग ध्रुव पर करने का साहस किया है।

किरीगी! निंजा किरीगी! तुम यहां पर कैसे?

उधर हिमालय पर मानवों की आवाजाही बढ़ गई है। उससे मेरी साधना में व्यवधान पड़ रहा था, तो मैं हिमा-लय की एक भूमिगत कंदरा में चला गया था!

वहां साधना के दौरान मुझे अपनी बूंदभर शक्ति खिंचती सी महसूस हुई। मैंने ध्यान नहीं दिया।

लेकिन फिर मुझे आभास हुआ कि कोई उसका प्रयोग तुम्हें मारने के लिए कर रहा है।

तो मैं तुरंत यहां के लिए रवाना हो गया।

किरीगी नाम था उसका। और यह उसी की ऊर्जा थी जिसने पहले मुझे ज्वालामुखी से आजाद किया था। और फिर उस ठंडे बक्से से।

ओऽऽ! यानि तुम पास आते जा रहे थे और मेरी तुमसे ऊर्जा खींचने की गति बढ़ती जा रही थी।

और यही ऊर्जा मुझे गर्मी में भी पूर्ण चैतन्य रहने की शक्ति प्रदान कर रही थी। और अब तुम मेरे सामने आ गए हो!! वाहऽऽ!

मैं जितनी पास आऊंगा, तेरे प्राण उतनी ही जल्दी निकलेंगे।

गलत! मेरे अतिविकसित मस्तिष्क के आगे तेरा दिमाग कुछ भी नहीं है, निंजा!

मैं तेरी शक्तियां इतनी आसानी से खींच सकता हूं जैसे स्ट्रॉ से शर्बत!

आऽऽह! यह तो... बहुत...शक्तिशाली है। मैं.. नियंत्रण खो.. रहा हूं।

किरीगी असावधान था। वह आसानी से मेरे कब्जे में आ गया था।

मेरी शक्तियां अब ऐसे बढ़ रही थीं मानो समुद्र में सुनामी आ गई हो। सूर्य तक मुझे खिलौने सा लगने लगा था।

और अब तो किरीगी भी मेरे वश में था।

तू बहुत भाग्यशाली है ध्रुव। दोस्त के हाथ से मौत बिरलों को मिलती है।

किरीगी! खत्म कर दे इसे! काट डाल।

ध्रुव को बचाने वाले वहां बहुत थे, हालांकि गोलियां किरीगी का कपड़ा तक न छेद पातीं।
फिर भी कुछ ने कोशिश तो की। लेकिन किरीगी का खड्ग उनसे ज्यादा तेज और धारदार था!
अब किरीगी के हाथों में ध्रुव की मौत थी।
वह खुद भी जानता था कि वह इस मौत से बचने के लिए ब्रह्मांड की किसी भी शक्ति से मदद नहीं मांग सकता।
फिर भी वह लड़ रहा था। दस मिनट से लगातार बचता फिर रहा था वह!
न जाने मरने से पहले उसे किस चीज का इंतजार था?
वह गहरी सोच में नजर आ रहा था।
मैं हालांकि अब उसका दिमाग पढ़ तो सकता था। पर ऐसा करते ही किरीगी मेरी मानसिक कैद से आजाद हो जाता और यह जोखिम मैं नहीं उठा सकता था।
और यहीं मैं मात खा गया।
अरे! य... यह क्या है?
तू बचेगा नहीं, चाहे यह न्यू-क्लियर मिसाइल ही क्यों न हो।
यह उससे भी बड़ी चीज है, महामानव!...
तुम्हारी ही शक्तियों से युक्त जानवर।
बस होश में आने के बाद अब यह मेरी बात सुन रहे हैं और मान भी रहे हैं
तू मेरा मैसेज बिल्कुल सही समझी, श्वेता!
फटाफट ट्रक में इन्हें ले आई!
थैंक्स!
थैंक्स रखो जेब में। मैं तो पापा मम्मी को बचाने आई थी।

इस महा टककर से होश में आए किरीगी ने अपने आपको संभाल लिया। यौगिक शक्ति का प्रवाह रुक गया।
अब मुझे फिर से यह बहाव शुरू करवाना था। पर...
...ध्रुव नाम की मुसीबत को खत्म करने के बाद।
वर्ना उसके टांग अड़ाते रहने का सिलसिला अंतहीन हो सकता था। शक्तियां बढ़ चुकी थीं मेरी अब!
अब मैं कुछ हद तक प्रकृति को भी नियंत्रित कर सकता था।
ध्रुव ने भागने की कोशिश तो की, पर बिजलियों का निशाना वह और सिर्फ वही था। और बिजलियों से वह शायद एक दो बार तो बच सकता था।
लेकिन ज्यादा देर तक नहीं, और यह बात वह भी जानता था।
इसीलिए शायद वह हेलीकॉप्टर में भागने की कोशिश में था।
अब उस पर ध्यान देने का काम बिजलियों का था।
मैं किरीगी से यौगिक ऊर्जा खींचने की धींगा मुश्ती में एक बार फिर से मस्त हो गया।

किरीगी शक्तिशाली तो जरूर था, पर मेरे जितना विकसित नहीं था। हारना तो हर हाल में उसी को था।

मैं उसकी शक्तियां खींचने में इतना मग्न हो गया था...

...कि मैंने एकदम अपनी बगल में आ चुके उस हेलीकॉप्टर पर ध्यान ही नहीं दिया था।

उसी पल एक कौंधती बिजली की लहर ने हेलीकॉप्टर को अपना निशाना बना लिया।

ध्रुव चीखा तो जरूर पर मौत की उस कड़कड़ाहट में उसकी आखिरी चीख दब कर रह गई। और अगले ही पल...

मैं भी चीख उठा। मेरी ही शक्ति से पैदा की गई बिजली से लिपटा हुआ वह हेलीकॉप्टर पूरे वेग से मुझसे आ टकराया था।

भयानक झटका लगा मुझे! दिमाग अंधेरे में डूबने लगा मेरा!
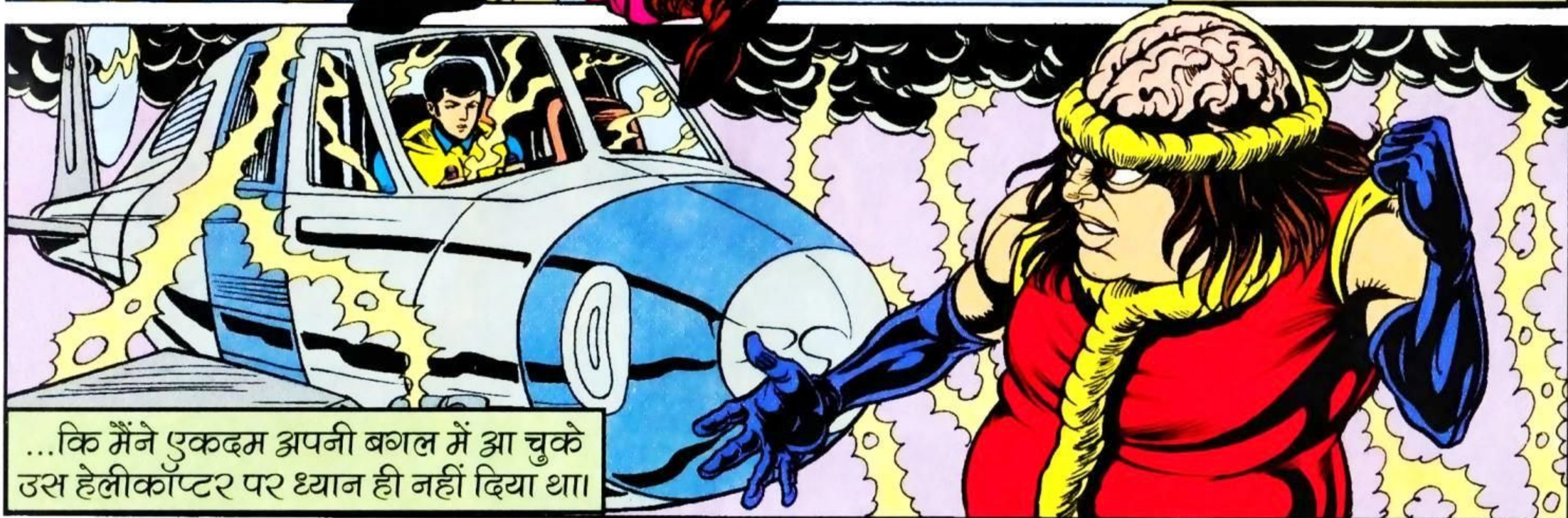
अपनी अंधेरे में डूबती आंखों से मैंने जो आखिरी दृश्य देखा वह हेलीकॉप्टर के फटने का था।

बिजली गिरने से खाक हो चुके ध्रुव का शरीर अब कणों में बदल चुका था।

किरीगी से भी मेरा संपर्क टूट गया था। जब मुझे होश आया...

तो मैं समुद्र तल से कई मीटर नीचे ठंडे पानी में था।

पानी का ठंडापन मुझे होश में ला रहा था।

किरीगी से खींची गई यौगिक ऊर्जा अब मेरे अंदर से गायब हो चुकी थी।

शायद किरीगी उसको मुझसे वापस लेने में सफल हो गया था।

पर मेरा सबसे बड़ा काम हो गया था। ध्रुव मेरे हाथों से खत्म हो चुका था।

मैं तो उत्तरी ध्रुव की ओर रवाना भी हो चुका था!

तब हवा में उड़ती मानसिक तरंगों से मुझे इस नौटंकी की खबर मिली।

अब बताओ, क्या करूं मैं तुम सब झूठों का?

श्रीमान महामानव के प्रश्न का उत्तर दो, बायोट्रॉन!

इनकी गवाही... अ...बयान अक्षरशः सत्य है।

देखा?

सिवाय एक तथ्य के महामानव जी। आपने ध्रुव को नहीं मारा।

क्या बकवास कर रहा है तू? गिरती बिजली के नीचे खड़ा होकर देख, फिर बोल! अगर बोल पाए तो!

आपका मस्तिष्क विकसित अवश्य है, श्रीमान!

पर वैज्ञानिक तथ्य इसमें से लापता है।

जब धातु के प्लेन जैसी बंद और खोखली चीज पर बिजली गिरती है तो उसकी ऊपरी सतह पर जरूर तीव्र आवेश..अ..चार्ज आ जाता है।

पर उसके अंदर का विद्युत क्षेत्र शून्य होता है। यानि जीरो। इसे 'फैरोड केज' भी कहते हैं।

ध्रुव उड़ते हेलीकॉप्टर के अंदर था। यानि उसको झटका लग ही नहीं सकता था। क्योंकि चार्ज अंदर था ही नहीं।

हमारे अनुमान के अनुसार उसकी वह हालत बिजली की तीव्र चमक के कारण थी।

और आपसे हेली-कॉप्टर टकराने के बाद वह तुरंत बाहर कूद गया था।

य...यह तू कैसे कह सकता है?

इनकी गवाही से। बताएं श्रीमान किरीगी।

यह सच है। ध्रुव का तो बाल भी बांका नहीं हुआ था। बल्कि हम दोनों ने मिलकर काफी देर तक इसे ढूंढा भी था।

धन्यवाद, किरीगी जी आप अब जा सकते हैं। परंतु यहां की स्मृति कृपया अपने दिमाग से साफ कर दें। यह हमारा नियम है।

श्रीमान महामानव! अब तो आप हमें मारने से पहले यह अवश्य जानना चाहेंगे कि ध्रुव को आपने नहीं तो किसने मारा?

अब आप इस द्वार के पार हमारी खास आरामगाह में गवाहियां पूरी होने का इंतजार करें।

आऽऽह! मैं..मैं तो फिर उसी लावे में पहुंच गया। जहां से मैं चला था।

धोखा, कंकालतंत्र! ओह, मेरी स्मृति जा रही है...

अगले महाखलनायक डॉक्टर वायरस! गवाही देने के लिए पधारें!

राज

कॉमिक्स विशेषांक

मूल्य 16.00 संख्या 43

हत्यारा कौन

सुपर कमांडो ध्रुव

याद है न ? ये 'क्राइमकोर्ट' है ! अद्भुत शक्ति-धारक कंकालतंत्र की अदालत...

...जो बैठी है, सुपर कमांडो ध्रुव के हत्यारे का पता लगाने के लिए, और उसको 'परमखलनायक' की उपाधि से विभूषित करने के लिए —

उपस्थित महाखलनायकों एवं माफिया सरदारों... मैं कंकालतंत्र; मध्यांतर के दौरान अपने सर्वज्ञानी रोबोट बायोट्रॉन की बैटरी चार्ज कर चुका हूं।

महाखलनायक ध्वनिराज, बौना वामन, और महाखलनायिका ब्लैककैट का यह दावा कि उन्होंने ध्रुव को मारा, खारिज किया जा चुका है।
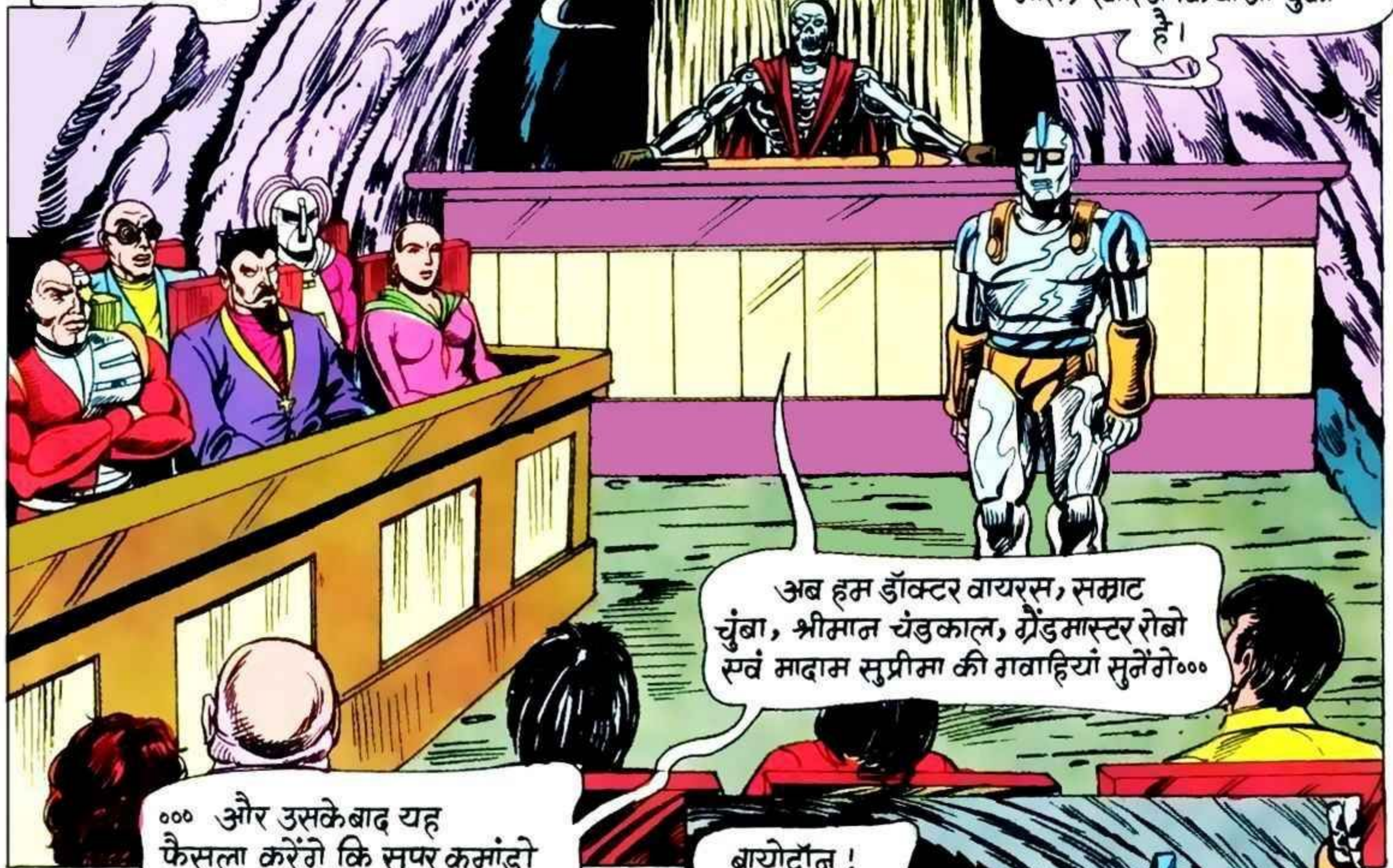
अब हम डॉक्टर वायरस, सम्राट चुंबा, श्रीमान चंडकाल, ग्रैंडमास्टर रोबो एवं मादाम सुप्रीमा की गवाहियां सुनेंगे...

... और उसके बाद यह फैसला करेंगे कि सुपर कमांडो ध्रुव का...

हत्यारा कौन

बायोट्रॉन ! कार्यवाही शुरू करो !
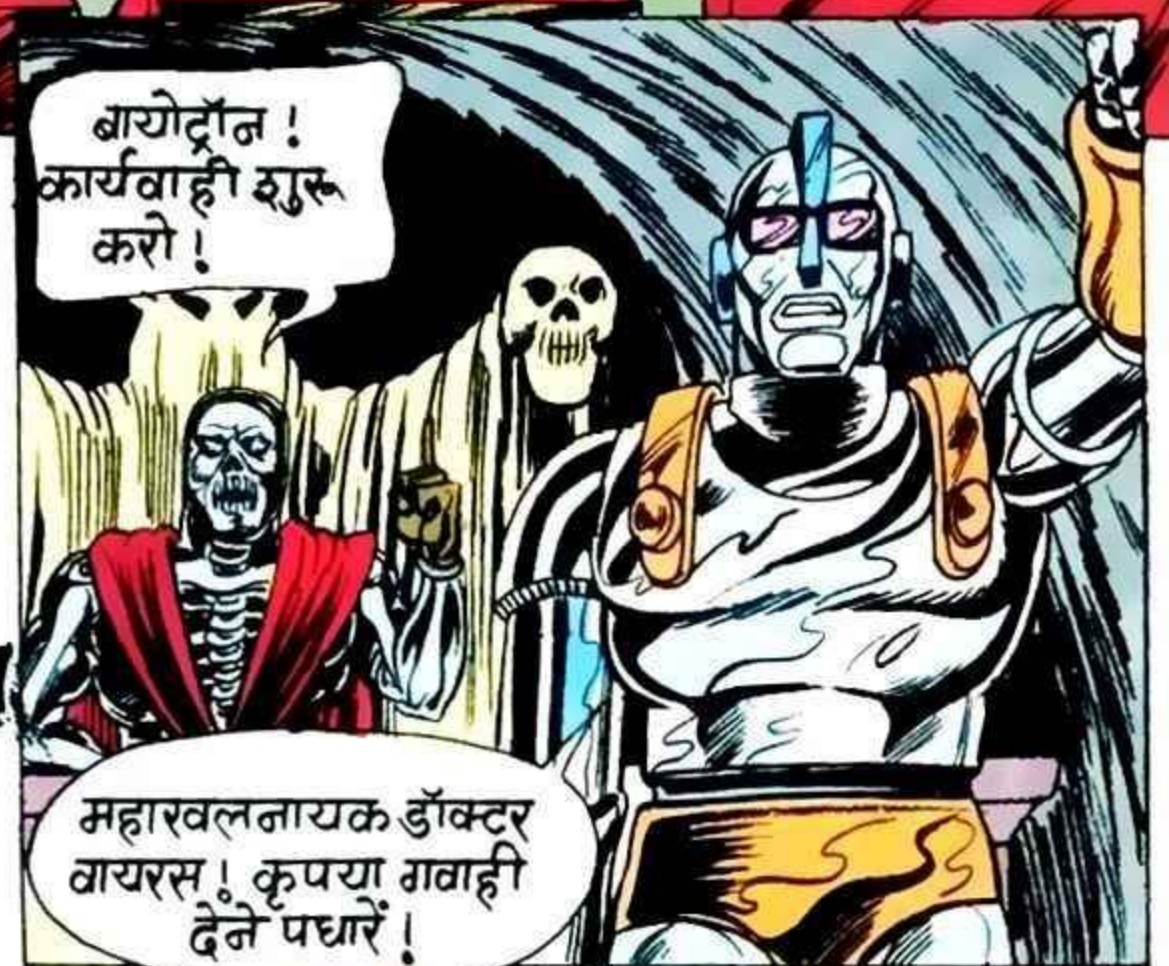
महाखलनायक डॉक्टर वायरस ! कृपया गवाही देने पधारें !

कथा एवं चित्र : अनुपम सिन्हा : इंकिंग : विनोद कुमार : सुलेख एवं रंग : सुनील पाण्डेय : संपादक : मनीष गुप्ता :

चौथी गवाही-

मैंने मारा ध्रुव को
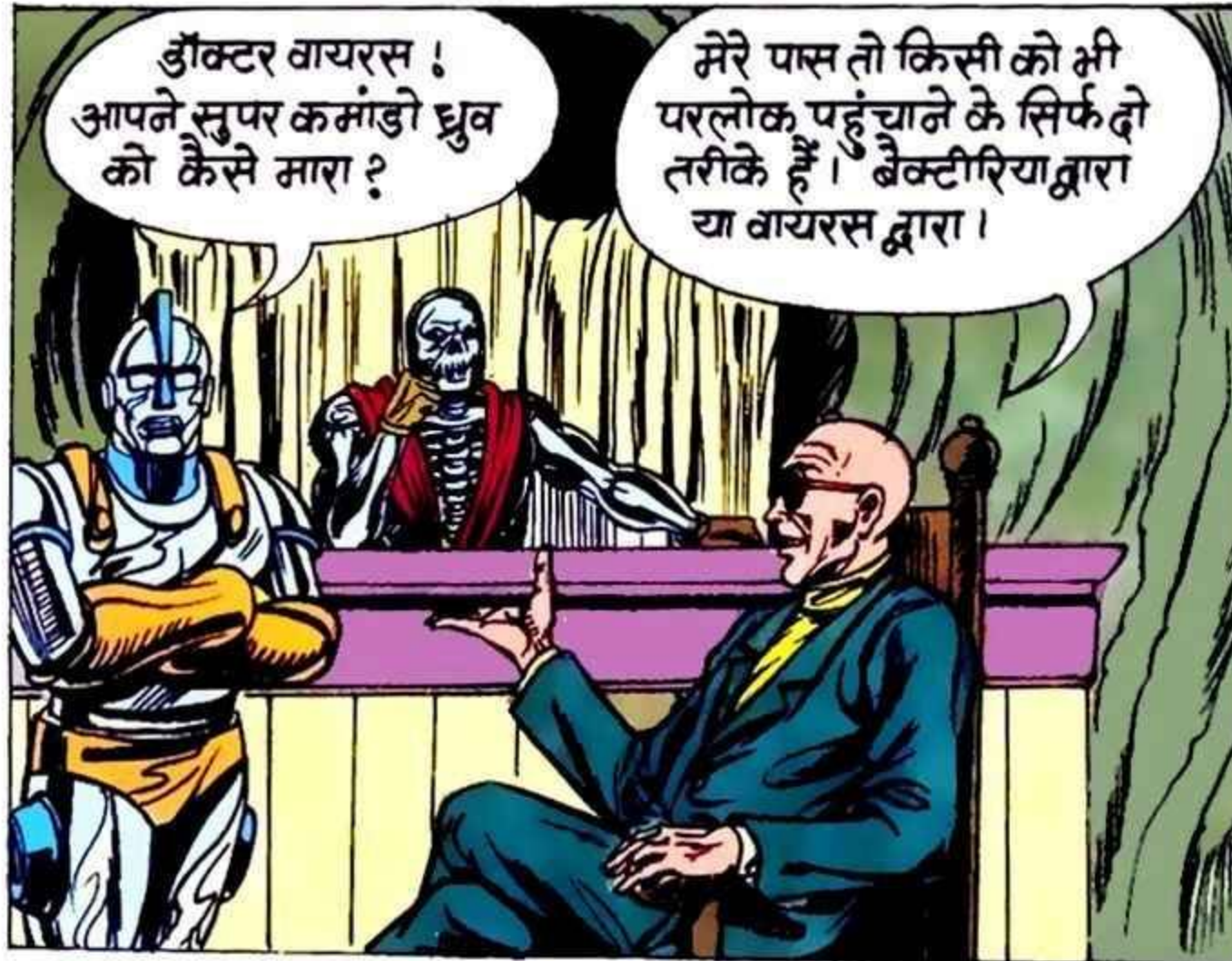
डॉक्टर वायरस ! आपने सुपर कमांडो ध्रुव को कैसे मारा ?

मेरे पास तो किसी को भी परलोक पहुंचाने के सिर्फ दो तरीके हैं। बैक्टीरिया द्वारा या वायरस द्वारा।

सुपर कमांडो ध्रुव पर मैंने अपने दोनों ही ब्रह्मास्त्रों का इस्तेमाल किया।

दरअसल मेरा प्लान तो सिर्फ पैसे कमाने के लिए था। सुपर कमांडो ध्रुव तो अपनी मौत को ढूंढ़ता-ढूंढ़ता वहां तक आ गया था—

मैंने राजनगर के उत्तरी भाग में एक लेबोरेट्री बनाई थी—

ऊपरी तौर पर तो उस लेबोरेट्री का मकसद 'माइक्रोबायोलॉजी' में नई-नई रिसर्च करना था—

लेकिन अन्दर की बात तो ये थी, कि वहां पर मैं अपने काम के लिए नए-नए और घातक किस्म के जीवाणुओं एवं विषाणुओं का निर्माण करता था—

VIRUS

लेबोरेट्री में, प्रयोग की आड़ में मैंने चूहे खरीदने शुरू कर दिए। एक जिन्दा चूहे की कीमत में दो रुपए देता था—
गरीब लोगों में चूहे पकड़ने की होड़ लग गई। लोग लाइन लगाकर चूहे बेचने आने लगे। देखते ही देखते मेरे पास हजारों-हजार चूहे इकट्ठे हो गए—
इसी दौरान मैंने अपनी लेबोरेट्री में प्लेग के कीटाणु बेशुमार तादाद में बना लिए थे। आगे का काम आसान सा था—
फिरएस
चूहों पर प्लेग के कीटाणुओं का स्प्रे करना...
...और उनको शहर में छोड़ देना—
प्लेग एक ऐसी बीमारी है, जो बला की तेज़ी से फैलती है—
और जब प्लेग अपना विकराल रूप दिखाता है, तो गिरती हैं लाशें दनादन—
और फैलता है... आतंक।
अंतर्राज्यीय बस अड्डा
मौत के डर से लोग, अपनी सारी बेशकीमती चीजें छोड़कर उस इलाके से ही भाग निकलते हैं।
और पूरा इलाका ऐसे खाली हो जाता है, मानो मरघट का या कब्रिस्तान का दूसरा रूप हो—

सोचो, बायोट्रॉन! उस समय कई करोड़ का माल लूटना कितना आसान होता है। घर का ताला तोड़ो और माल निकालो!

पकड़ने वाला भी कोई नहीं होता। क्योंकि पुलिस वाले भी डर के मारे प्लेग ग्रस्त एरिया में नहीं आते।

और मेरे आदमियों को रोग लगने का कोई डर नहीं था—

क्योंकि मैंने उनको 'एन्टी-प्लेग' की दवाई दे रखी थी। वे दवाई खाकर ही लूटने जाया करते थे—

काम जल्दी-जल्दी करना था। क्योंकि मुझे मालूम था कि जल्दी ही, सरकार इस प्लेग से निपटने का कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेगी।

मुझे यह भी खबर मिल चुकी थी कि राजनगर के 'माइक्रो-बायोलाजिस्ट' का एक दल किसी भी वक्त, प्लेग ग्रस्त उत्तरी राजनगर में आ सकता है।

मुझे उससे पहले ही एक दूसरी घातक बीमारी का वायरस बना लेना था, ताकि बीमारियों का यह दौर कभी खत्म न हो—

मेरे पास कई किस्म के घातक जीवाणु तैयार हो गए थे—

और अब मेरे प्लान का दूसरा भाग शुरू हो रहा था—

ये लो! और इसको पूर्वी राजनगर के मेन 'वॉटर सप्लाई टैंक' में मिला दो!

ओ० के० बॉस!

अब बीमारी, पूर्वी राजनगर में फैलेगी! वह इलाका भी खाली हो जाएगा।

और फिर हम पूर्वी राजनगर को लूटेंगे।

तुम्हारा ये मकसद कभी पूरा नहीं होगा, वायरस!

घूमते ही हल्का सा घबरा गया मैं तो—

कौन हो तुम? म••• मेरा नाम कैसे जानते हो?

य••• यहां तक कैसे आ गए?

जवाब, आखिरी सवाल से देना शुरू करता हूं।

यहां आने का कारण सीधा सा है। इस पूरे इलाके में सिर्फ इसी बिल्डिंग की लाइट जल रही है•••

••• और तुम्हारा नाम मैं जानता हूं, क्योंकि मेरी और तुम्हारी बहुत पुरानी जान पहचान है।

और पहले सवाल का जवाब है•••

••• कि मैं डॉक्टर वर्गीस हूं, उर्फ 'बर्फ मानव'।☆

मैं तो यहां पर 'माइक्रो-बॉयोलाजिस्ट' की एक टीम लेकर आया था। पर यहां तो रोग फैलने का कारण तुरन्त ही पता चल गया।

घबराहट में, मैं चिल्ला उठा—

ओ••• ओह! खत्म कर दो इसको!

मेरे आदमी खत्म करने का एक ही तरीका जानते थे। गोली चलाना—

☆ बर्फ मानव••• यानी डॉक्टर वर्गीस के बारे में जानने के लिए पढ़ें विशेषांक- 'डॉक्टर वायरस'

पर गोलियां उस बर्फ के जिस्म पर क्या असर करतीं ?

तब तक मैं एक 'फ्लेम थ्रोअर' उठा चुका था—

आग की एक लपट लपक पड़ी बर्फ मानव की तरफ—

अभी मैं तेरे बर्फीले बदन को, उबलते पानी में बदलकर नाली में बहा दूंगा।

आग, अगर बर्फ को पानी में बदल सकती है, वायरस...
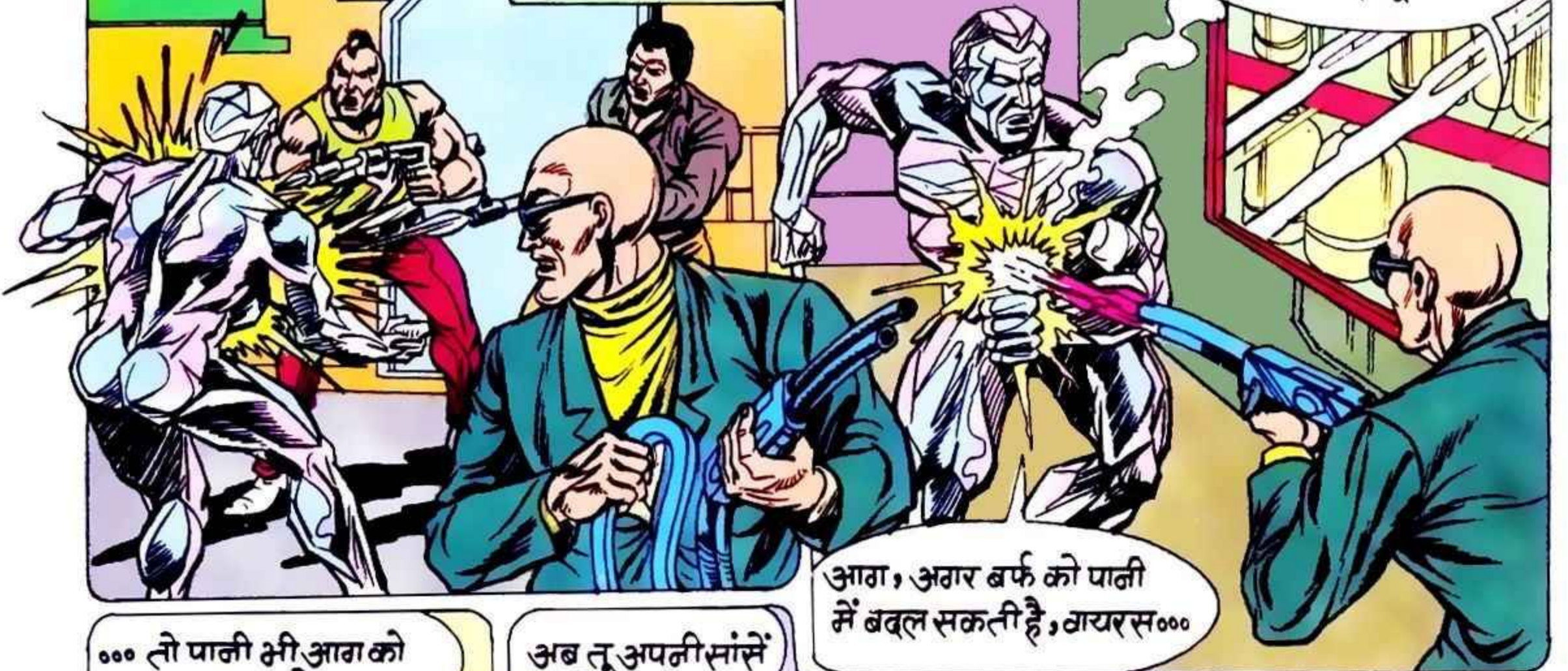
...तो पानी भी आग को बुझा सकता है।

अब तू अपनी सांसें बचाने की सोच।

मेरे आदमी चारों तरफ से, बर्फमानव पर टूट पड़े—

आह! तोड़ डालो इसके बर्फ के बदन को!

फिर देखूं कि ये कैसे बचता है?

और बर्फ के टुकड़े, टूट-टूट कर हवा में उड़ने लगे।

वर्गीस के पूरे शरीर में दरारें पड़ रही थीं—
चार- पांच वारों के अंदर ही वर्गीस का पूरा बदन टुकड़े- टुकड़े हो जाना था—
लेकिन वे चार-पांच वार चलने का मौका नहीं मिला—
न जाने कहां से, वहां पर, वह शैतान का अवतार आ धमका था—
जिसका नाम था...
ता!
ड़.
सुपर कमांडो ध्रुव!
हां, मैं। अब तुम पूछोगे कि मैं यहां पर कैसे आ गया?
मैं तो दवाइयों से भरा एक ट्रक लेकर उत्तरी राजनगर में आया था, क्योंकि कोई भी ड्राइवर यहां आने को तैयार ही नहीं था।
बस, मैं उनसे जरा जान-पहचान करने रुक गया!
और जान-पहचान करने के बाद उन्होंने मुझे तुम्हारा नाम और पता बता दिया।
धड़ाक
लेकिन रास्ते में मेरी मुलाकात तुम्हारे कुछ आदमियों से हो गई। वे लोग गहनों, पैसों और बेशकीमती चीजों से भरा ट्रक लेकर कहीं जा रहे थे।

बस, फिर मैं यहां तक आ गया। और अब यहां आ गया हूं, तो तुम्हारी मिजाज-पुर्सी करता ही जाऊं।

अब इनको जरा बड़े जेलखाने की सैर करा दी जाए।

क्या ख्याल है डॉक्टर वर्गीस?

अति उत्तम ख्याल है, ध्रुव!

दोनों, मुझे असहाय समझकर, मेरी ओर बढ़ रहे थे—

लेकिन मैं उतना असहाय नहीं था—

ये घातक वायरस तुमको मुझ तक पहुंचने से पहले ही, जमीन पर गिरा देंगे।

तुम्हारे वायरस मेरी बर्फ की दीवार को पार नहीं कर सकते वायरस।

कोई भी जीवाणु इतनी ठण्ड में मर जाता है।

ये वायरस वे नहीं हैं, वर्गीस! ठण्ड का इन पर कोई असर नहीं होता।

यह सच कह रहा है, ध्रुव! ये वायरस तो बर्फ की दीवार के पार आ रहे हैं।

लेकिन तभी—एक और आश्चर्य हुआ—

इन दुष्ट विषाणुओं पर शीत का प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन मेरी अग्नि इनको झुलसा कर ही छोड़ेगी।

वह 'आग उगलती भट्ठी' जो भी था, ध्रुव उसको जानता था—

सामरी! तुम यहां पर कैसे?

एक मुश्किल सुलझाने, ध्रुव। दरअसल एक चील, एक आधा खाया चूहा हमारी घाटी में गिरा गई—

और उसके संपर्क में आते ही हमारे दो नागरिक बीमार पड़ गए—

हमने उनको ठीक करने की जी-तोड़ कोशिश की। मगर वे अभी भी जिन्दगी और मौत के बीच में झूल रहे थे—

उसके तुरंत बाद ही, कुछ और नागरिक भी बीमार पड़ गए—

तब मुझे रोग का कारण पता करने के लिए निकलना ही पड़ा—

चील के आने की दिशा से, मुझे यह आभास हो गया था कि चील इसी नगर की तरफ से आई है—

बस। मैं इस रोग की दवाई की खोज में यहां तक आ गया। पूरे क्षेत्र में सिर्फ इसी इमारत के इर्द-गिर्द चहल-पहल थी—

और यहां पर मुझे तुम मिल गए।

वाह! लगता है कि किसी सर्कस कम्पनी का कोई शो चल रहा है। एक बर्फ फेंकता है, एक आग फेंकता है, एक कलाबाज है।

लेकिन अब यह शो खत्म होने का समय आ गया है। इन दोनों विषाणुओं का मिश्रण तुम तीनों की एक साथ मौत का इनाम देगा।

दो मिनटों के अंदर- अंदर तुम लोगों के सभी अंगों को लकवा मार जाएगा। और फिर तुम लोग, मेरी आंखों के सामने और मेरे ठहाकों के बीच एड़ियां रगड़- रगड़ कर मरोगे।

मेरे वायरसों का मिश्रण सचमुच महाघातक था। क्योंकि उस मिश्रण पर न तो गर्मी का असर होता था और न ही ठण्ड का—

और उस मिश्रण का घातक असर, मिनटों में होता था।

सामरी नाम का वह दैत्य भभक उठा—

मैं तुम्हें इन जीवाणुओं को स्वयं ही नष्ट करने के लिए मजबूर कर दूंगा।

उसके त्रिशूल से निकली एक सर्पाकार लपट, मुझे हवा में उठाकर नचाने लगी—

नष्ट कर... इन जीवाणुओं को दुष्ट! वरना... मेरी ज्वाला तुम्हें... नष्ट कर देगी।

धड़ाक

उसकी जुबान लड़खड़ाने लगी थी—

और उसकी ज्वाला भी गायब हो रही थी—

मेरा मिश्रण अपना असर दिखाने लगा था—

यही मौका था, अपने दुश्मनों को खत्म करने का—

खत्म कर दो, इन तीनों को! जल्दी!

मेरे आदमी तीनों की तरफ लपके—

लेकिन तभी- एक आकृति हिली—

आश्चर्यचकित रह गया मैं—

गज़ब की इच्छा-शक्ति थी सुपर कमांडो ध्रुव में—

धाड़.

मेरे वायरल मिक्सचर के असर से उसके अंग अकड़ चुके थे—

बदन बुखार से तप रहा था—

लेकिन तब भी वह मेरे आदमियों पर कहर की तरह टूट रहा था—

और उनको प्लेग के मरीजों की तरह जमीन पर गिरा रहा था—

पर क्यों? मैं कारण नहीं समझ पा रहा था। मेरे आदमियों को हराने के बाद भी उसकी मौत निश्चित थी।

अगले ही पल मैं उसकी इस हरकत का कारण समझ गया—

वह यह देख रहा था कि वे वायरस मुझ पर या मेरे आदमियों पर असर नहीं कर रहे थे। वह इसका कारण पता करना चाहता था—

और वह कारण उसने ढूंढ ही लिया —

वह कारण था हमारी जेबों में रखीं 'रेडियम' से भरी पारदर्शक शीशियां—

रेडियम से निकलती, रेडियोएक्टिव किरणें उन वायरसों को हमारे पास पहुंचने से पहले ही खत्म कर देती थीं—

और उनसे निकलती रेडियोएक्टिव किरणें, उन तीनों के शरीर में समाए वायरसों को तेजी से नष्ट करने लगीं—

गजब की फुर्ती से उसने सभी की जेबों से शीशियों को निकालकर जमीन पर पटक दिया—

मेरा मुंह खुला का खुला रह गया—

मुझे आभास भी नहीं था कि कोई इंसान मेरे वायरल मिक्सचर के हमले से बच सकता है—

लेकिन मैंने भी अपना सबसे भयंकर अस्त्र बचाकर रखा था—

मेरा 'इन्फ्रा-अल्ट्रा एनलार्जर'—

बटन दबते ही 'इन्फ्रा-अल्ट्रा किरणों ने पूरे कमरे को भर दिया—

और फिर—
पूरे कमरे में भर गए...

...मेरे बचे हुए वायरस—

वे वायरस— जो हवा में मौजूद थे, मेरी 'एनलार्जर किरणों' का स्पर्श पाते ही, आकार बदलने लगे—

इतने बड़े आकार के वायरसों पर रेडियम की रेडियोएक्टिव किरणें बेअसर थीं—

और सामरी की ज्वाला एवं बर्फ मानव की शीत किरणें भी—

मेरा 'वायरल मिक्सचर' अजेय था—

परेशानी एक ही थी। इतने बड़े आकार के वायरसों से मैं भी नहीं बच सकता था। वरना मैं वहां पर रुककर उन तीनों की मौत का तमाशा जरूर देखता—

घड़ाम

बाहर निकलकर, मैंने लेबोरेट्री का एकमात्र दरवाजा बन्द कर दिया। अब लैब से कोई बाहर नहीं निकल सकता था—

बाहर निकलते ही मुझको नजदीक आते पुलिस के सायरन सुनाई दिए—

शायद ध्रुव के द्वारा पकड़े गए मेरे आदमियों ने पुलिस को मेरी लैब का पता भी बता दिया था—

इसीलिए मैं वहां पर रुककर, उन तीनों की लाशें नहीं देख पाया।

पर इतना तो पक्का था कि वे मेरे वायरसों के हमले से नहीं बच सकते थे।

बचने का रास्ता था ही नहीं। बस ऐसे ही ध्रुव मारा गया, और उसके साथ-साथ सामरी और वर्गीस भी मारे गए। गेहूं के साथ-साथ घुन भी पिस गया।

हुम! यानी आपने ध्रुव की लाश को नहीं देखा?

अरे, लाश को देखने की क्या जरूरत थी! उसको तो तुम उसी वक्त से लाश समझ लो!

उसके पास बचने का कोई रास्ता नहीं था!
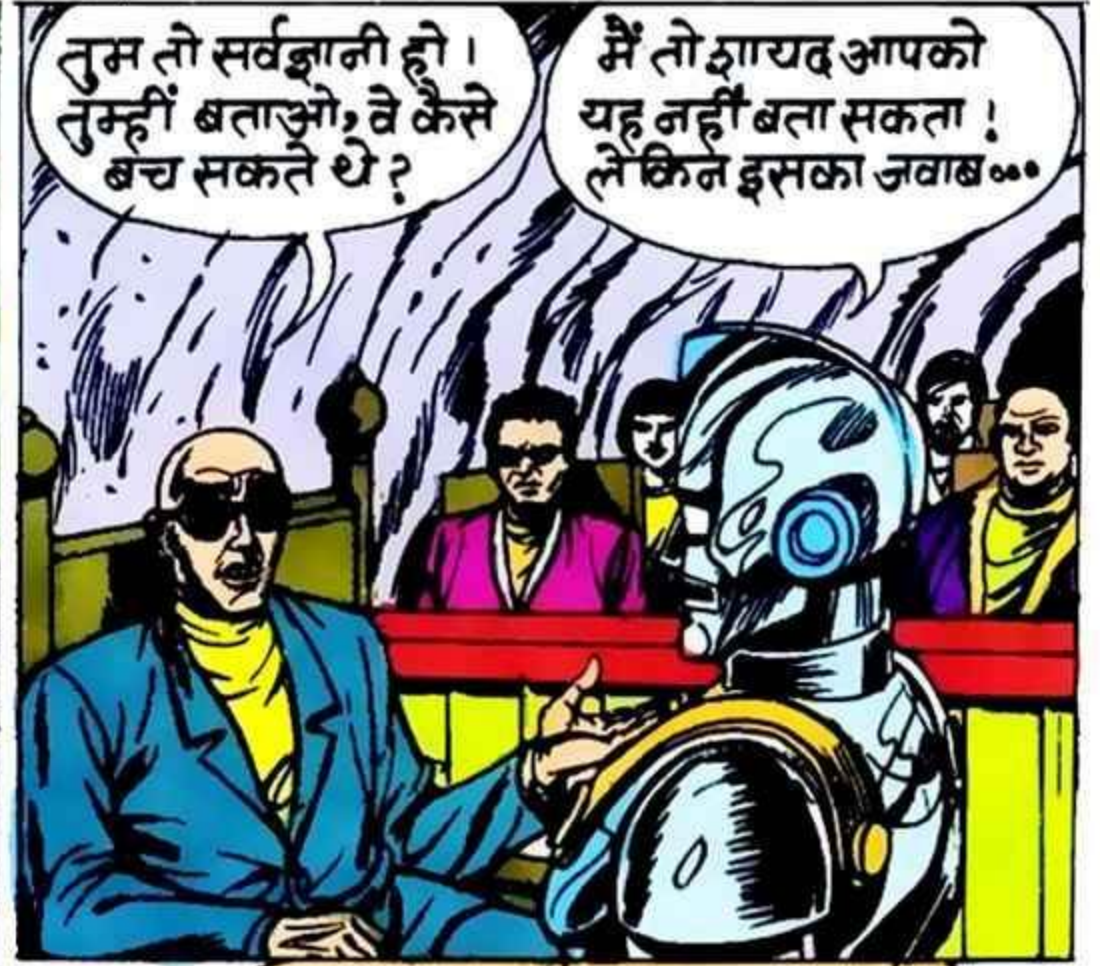
तुम तो सर्वज्ञानी हो। तुम्हीं बताओ, वे कैसे बच सकते थे?

मैं तो शायद आपको यह नहीं बता सकता! लेकिन इसका जवाब•••

•••आपको सामरी और डॉक्टर वर्गीस उर्फ बर्फमानव दे सकते हैं।

य••• ये कैसे बच गए? ये तो हो ही नहीं सकता। असंभव••• असंभव••• •••असंभव•••

सुपर कमांडो ध्रुव उस शख्सियत का नाम है, वायरस। जो असंभव को भी संभव करने की क्षमता रखता है।

और यह उसी का दिमाग था, जो आज हम दोनों यहां पर जिन्दा खड़े हैं।

तुम्हारे वायरसों से बचना सचमुच असंभव था—

आह! इनको रोकना असंभव है।

इन पर मेरी शीत लहरों का कोई असर नहीं हो रहा है।

तुम सच कहते हो बर्फमानव! मेरी ज्वाला भी इन पर बे-असर है•••

•••और ये हमारे शरीर को ढकते ही जा रहे हैं।

हमारी सारी उम्मीदें साथ छोड़ रही थीं—

लेकिन उस परिस्थिति में भी ध्रुव का दिमाग सजग था—

हम 'पास्चुराईजेशन' से इन जीवाणुओं को खत्म कर सकते हैं।

पास्चुर? यह क्या होता है?

एक रास्ता है! सिर्फ एक रास्ता!

लेकिन उसके लिए तुम दोनों को अपनी-अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करना पड़ेगा।

ध्रुव ठीक कह रहा है, सामरी।

'पास्चुराईजेशन' जीवाणुओं को नष्ट करने की एक प्रक्रिया होती है। इसमें जिस वस्तु से जीवाणुओं को नष्ट करना होता है, उसे पहले सौ डिग्री सेन्टीग्रेट तक गर्म करते हैं और फिर एकाएक चार डिग्री सेन्टीग्रेट पर ठंडा कर देते हैं।

इससे सारे जीवाणु मर जाते हैं। पैकेट में आने वाले दूध को इसी प्रक्रिया से जीवाणुरहित किया जाता है।

वाह! मैं ज्वाला से इस कक्ष का तापमान बढ़ा देता हूं...

...उस दौरान मेरी ज्वाला ही उस तापमान से तुम लोगों की रक्षा करेगी।

और फिर तुम कक्ष का तापमान एकाएक गिरा देना।

हमने वैसा ही किया। और सामने नतीजा भी वही आया, जो हमने सोचा हुआ था।

सारे वायरस देखते ही देखते खत्म हो गए।

हमारे बाहर आने तक डॉक्टर वायरस भाग चुका था। उसके बाद हम वापस अपने रास्ते चले गए।

ध्रुव का उसके बाद क्या हुआ, यह हमको नहीं पता।

पर इतना स्पष्ट है कि सुपर कमांडो ध्रुव को डॉक्टर वायरस ने नहीं मारा।

यह स्पष्ट है! अब मैं इन दोनों के मस्तिष्क से, यहां का घटनाक्रम साफ करके इनको वापस भेज देता हूं।

डॉक्टर वायरस! तुम अग्निद्वार के पार जाकर इंतजार करो। तब तक मैं अगली गवाही सुनूंगा।

बायोट्रॉन! अगले महाखलनायक की गवाही के लिए उपस्थित करो!

महाखलनायक चुंबक सम्राट चुंबा, कृपया गवाही देने पधारें।

और क्राइमकोर्ट में एक अनोखी बात हो गई—

न... नहीं! मुझे गवाही नहीं देनी। मुझे माफ कर दो। मुझे जाने दो।

क्या हुआ, चुंबक सम्राट चुंबा?

मैंने ध्रुव को नहीं मारा, कंकालतंत्र जी!

मैं तो यूं ही यहां पर किस्मत आजमाने चला आया था।

मैं झूठी गवाही देने आया था।

पर आपका रोबोट बायोट्रॉन तो कोई भी गलती तुरन्त पकड़ लेता है।

गलती न हो तो गवाहों को चुटकियों में यहां परबुला लेता है...

... मैं गलती मानता हूं। कान पकड़ता हूं। मुझे जाने दो।

उफ! यह महाखलनायक होकर ऐसी बचकानी हरकतें क्यों कर रहा है बायोट्रॉन!

यह घबरा गया है स्वामी। आतंकित हो गया है।

इससे भी मैं बाद में निपटूंगा!

फिलहाल इसको मैं अपने व्यक्तिगत कारागृह में भेज देता हूं।

तुम अगले गवाह को बुलाओ, बायोट्रॉन!

महाखलनायक श्रीमान राक्षस चंडकाल...

... कृपया गवाही देने पधारें!

पांचवीं गवाही— मैंने मारा ध्रुव को

श्रीमान चंडकाल! आपने सुपर कमांडो ध्रुव को कैसे मारा?

ये सवाल अगर तुम मुझसे पहले ही पूछ लेते तो बाकी लोगों से पूछने की परेशानी से बच जाते।

क्योंकि मेरी गवाही के बाद किसी की गवाही सुनने की जरूरत नहीं पड़ती।

जो हो गया, उसे तो बदला नहीं जा सकता श्रीमान चंडकाल! अब आप हमारी गलती सुधार दीजिए।

मैं... यानी मेरा शरीर स्वर्ण नगरी में कैद था। लेकिन मुझे कैद में रख पाना असंभव था।

मैं आखिरकार वहां से भाग निकला—

वैसे मैने अपनी सैकड़ों साल की जिन्दगी में सिर्फ दो बार शिकस्त खाई है...

...और एक बार और शिकस्त खाते-खाते बचा था— ★

तीनों बार यह सिर्फ एक ही शख्स के कारण हुआ था...

सुपर कमांडो ध्रुव के कारण...

★ पढ़ें: 'किरीगी का कहर', 'सामरी की ज्वाला' एवं 'चंडकाल की वापसी'—

कहीं पर कुछ कमी जरूर थी।

वर्ना राक्षस जाति के आखिरी वंशज को मात देना खेल नहीं था।

राक्षसों के राज्य को पूरी दुनिया पर फैलाने का मेरा सपना अब तक अधूरा था—

अब एक ही रास्ता शेष था।

राक्षसगुरू 'धन्नारक्ष' की शरण में जाने का—

हे धन्नारक्ष! अगर इसी पल आपके दर्शन नहीं हुए, तो पृथ्वी पर मौजूद आखिरी राक्षस चंडकाल का शीश आपके चरणों में लोटता नजर आएगा।

मैं अपनी प्रतिज्ञा पर अटल था।

इस तरह मात खा-खाकर जीने का कोई मतलब नहीं था।

मेरी गर्दन पर फरसा धंसने लगा। लहू की धार नीचे टपकने लगी—

लेकिन राक्षस-गुरू धन्नारक्ष को मेरी मौत मंजूर नहीं थी—

बोलो चंडकाल! तुमको हमारी आवश्यकता क्यों आ पड़ी?

राक्षस-गुरू धन्नारक्ष की जय हो।

मैं राक्षस-गुरू को अपनी समस्या बताता चला गया—

तुम्हारी बार-बार हार का कारण सिर्फ एक है पुत्र चंडकाल।

ध्रुव के अंतर में मौजूद सत्य एवं न्याय! जब तक ये शक्तियां उसके साथ हैं, तुम्हारी दुष्टशक्तियां उस पर विजय नहीं पा सकतीं।

और बगैर उसको रास्ते से हटाए, तुम पृथ्वी पर राक्षस-राज फिर कभी कायम नहीं कर सकते!

ब्रह्माण्ड के दूसरे कई ग्रहों पर राक्षस-राज सिर्फ इसलिए कायम है, क्योंकि वहां पर सत्य और न्याय नहीं है।

मुझे ध्रुव पर विजय पाने का रास्ता बताइए, गुरुदेव!

ध्रुव पर विजय पाने के लिए तुमको अपने अंदर कुछ सत्य और न्याय की शक्तियों को सोखना होगा!

सत्य और न्याय! वह भी मेरे अन्दर?

सोचकर ही उल्टी आती है, गुरुदेव!

कोई और रास्ता नहीं है?

नहीं वत्स! यह काम तुमको करना ही होगा! तभी तुम ध्रुव के बराबर हो पाओगे।

ये सत्य और न्याय की शक्तियां मैं सोखूंगा कैसे?

इस पृथ्वी पर कुछ ऐसे सत्यनिष्ठ प्राणी हैं, जिनके अन्दर अद्भुत शक्तियां हैं।...

... तुम उन अद्भुत शक्तियों को खींचोगे।

और उन शक्तियों के साथ-साथ, सत्य और न्याय की शक्तियां भी खिंच आएंगी।

वे अद्भुत शक्ति वाले प्राणी कौन हैं गुरुदेव?

कई हैं... एक तंत्र-विशेषज्ञ कन्या है...

... लोरी!

और वानरराज हनुमान के वंशज यतियों का गुरु...

...'शक्तालू'—

ऐसे कुछ और भी हैं। मैं तुमको वह सिद्धि देता हूं, जिसमें तुम इनकी शक्तियां सोख सकोगे!

विजयी भव, पुत्र!

अब मुझे वह रास्ता मिल गया था, जो मुझे कामयाबी की मंजिल पर पहुंचा सकता था।

सत्य और न्याय की शक्तियां अपने अंदर सोखने के ख्याल से ही घिन आ रही थी मुझे—

लेकिन इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था।

मैंने शक्तियां सोखनी शुरू कर दीं—

ओह! य... यह क्या हो रहा है। मुझे एकदम से कमजोरी क्यों महसूस हो रही है?

ओह! कोई मेरी मानसिक शक्तियां खींच रहा है। और मुझे मानसिक संकेत मिल रहे हैं कि इन शक्तियों का उपयोग... ध्रुव को खत्म करने के लिए किया जाएगा।

ओफ्! मैं... ध्रुव की मौत का... कारण बनूंगी।

न... नहीं... कभी नहीं!

कभी नहीं...

वह लड़की बड़बड़ाती हुई, लड़खड़ाती हुई नीचे जा गिरी—

क्योंकि उसकी शक्तियों को मैंने सोख लिया था।

गुरू धन्नारक्ष का कहना सच था।

मैं अपने आपको पहले से अधिक शक्तिशाली महसूस कर रहा था।

अब बारी थी... यतियों के गुरू शक्तालू की—

तुम शीघ्र ही यतिराज बनने वाले हो, कुमार जिंगालू!

... उसके लिए तुमको अभी से कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक है।

पहला नियम••• आसss ह !
ओह ! य••• यह क्या हो रहा है ?
म••• मेरी शक्तियां खिंच रही हैं। पर••• पर ये कैसे संभव है ?

जिंगालू ! कोई दुष्ट ••• मेरी शक्तियां ••• खींच रहा••• है !

उसको रोको••• आह !

पीजालू ! अंगीरा !

गुरूदेव को संभालो !

गुरूदेव !

मैं उस रहस्यमय चक्रवात का पीछा करता हूं !

वह बंदर मेरे पास आ रहा था। लेकिन मेरी और उसकी ••• उसकी मुठभेड़ एक बार हो चुकी थी।

मैं उसकी शक्तियां जानता था।

और इस वक्त मेरे अन्दर जो शक्तियां दौड़ रही थीं, उसके सामने जिंगालू की शक्तियां, तिनका भी नहीं थीं —

लेकिन अभी मुझे और भी कई लोगों की शक्तियां सोखनी थीं —

और उसके बाद —

...मुझे निपटना था - ध्रुव से!

और इस बार वह मुझसे जीत नहीं सकता था।

क्योंकि अब मेरे पास दुनिया को तबाह कर सकने वाली शक्तियां थीं-

बोलो नताशा, क्या लोगी?

लिखिए एक मलाई कोफ्ता...

और एक...

ओ माई गॉड!

ध्रुव देखो!

अरे! यह आदमी तो एकाएक राक्षस बन गया।

मैंने एक किरण को इससे आकर टकराते देखा था।

बचो, ध्रुव!

बचने का सवाल ही कहां था।

मैंने उस आदमी को राक्षस बनाने के साथ-साथ...

...उसमें अमानवीय शक्ति भी भरी थी-

धाड़

उफ! मेरे वारों का इस पर कोई असर नहीं हो रहा है।

ध्रुव ठीक कह रहा था! एक राक्षस पर, एक मानव के वारों का क्या असर होना था।

वह ध्रुव को उसी पल खत्म कर डालता…

…अगर वह लड़की नताशा उसकी मदद को न आ गई होती।

वह लड़की भी जरूर एक अनुभवी योद्धा रही होगी—

क्योंकि एक सधे हुए वार से, 'टेबुल-नाइफ' राक्षस के दिल में जा धंसा—

लेकिन—

हा हा हा हा हा!

अरे! दिल में चाकू खाकर भी यह जिन्दा है।

ध्रुव! यह प्राणी खतरनाक है। इसको रोकने का नहीं, खत्म करने का रास्ता सोचो।

यह एक आदमी है नताशा!

अगर किसी ने इसको चमत्कारी तरीके से दैत्य के रूप में बदल दिया है, तो इसमें इसका क्या कुसूर है?

ध्रुव का तर्क अपनी जगह पर सही था—

और नताशा का तर्क अपनी जगह पर…

कई बार बेकुसूर ही मरना पड़ता है ध्रुव!

इस रूप में यह किसी की हत्या भी कर सकता है।

और उस हत्या के जिम्मेदार हम होंगे।

ओफ! बताओ मैं क्या करूं? मैं इसकी जान नहीं ले सकता।

तुम सिर्फ इसको किचन की तरफ धकेलने की कोशिश करो। बाकी मैं संभाल लूंगी।

ध्रुव, मेरी किरण द्वारा बनाए गए दैत्य से उलझ गया —

और वह लड़की, किचन की तरफ भागी —

उस लड़की पर, फिर मैंने ध्यान नहीं दिया —

मुझे ध्रुव की मौत का नजारा जो देखना था।

लेकिन ऐसे जुझारू इंसान के पास तो मौत भी धीरे-धीरे आती है।

डर-डर कर।

जिस बला को देखकर अधिकतर मानवों का दिल धड़कना बन्द कर दे...

...जिस दैत्य में अमानवीय शक्ति हो...

...जिसको हराना असंभव हो...

...जिसके दिल में चाकू धंस चुका हो, फिर भी वह जिन्दा खड़ा हो...

...ऐसी बला के साथ उलझा हुआ था वह जांबाज ध्रुव —

पलभर के लिए मेरे दिल में यह ख्याल आया कि काश, ऐसा योद्धा राक्षस जाति में पैदा हुआ होता, तो राक्षस बगैर किसी प्रयास के पूरी पृथ्वी पर कब्जा कर लेते —

पलभर के लिए मैं अपने जानी-दुश्मन की तारीफ कर उठा —

लेकिन फिर जैसे मैं नींद से जागा। ध्रुव दैत्य को, किचन के दरवाजे तक ले आया था।

ध्रुव! इसको किचन के अंदर ढकेलो!

जल्दी••• जल्दी करो!

ध्रुव थक चुका था।

लेकिन फिर भी उसके वार में इतनी ताकत थी•••

••• कि वह, उस दैत्य को उछालकर किचन के अंदर फेंक दे•••

उससे पूरी माचिस में आग लगाई•••

••• और उसको किचन के अंदर फेंक दिया—

किचन

••• उसी पल- नताशा ने, माचिस की एक तीली को जलाया —

रोशनी के झमाके से मेरी आंखें तक चुंधियां गईं•••

दैत्य को राख में बदलते, एक मिनट भी नहीं लगा होगा —

••• मैं पलभर में समझ गया कि क्या हुआ होगा?

नताशा ने किचन के सारे गैस सिलैंडरों को खोल दिया होगा•••

••• और उस गैस ने आग पकड़ते ही, किचन को, नर्क का छोटा रूप बना दिया होगा—

हम जीत गए, ध्रुव!

यह जीत नहीं, हार है, नताशा! हमको एक आदमी की जान लेनी पड़ी।

वह जान तुमने नहीं, मैंने ली, ध्रुव! और वह जरूरी भी...

ध्रुव! वह देखो!

अरे! अरे! लावा! जमीन से लावे की फुहार सी निकल रही है।

कड़ाााम

कैसे?

यह जरूर किसी शैतान का काम है।

उसी का, जिसने वेटर को दैत्य बना दिया था! आओ देखते हैं।

बाकी लोग, लावे की उस फुहार से दूर भाग रहे थे।

लेकिन वे दोनों उस लावे की तरफ लपक रहे थे।

ध्रुव! देखो! लावे के बीच में कोई खड़ा हुआ है।

चंडकाल!

हां, चंडकाल! यानी तेरा काल सुपर कमांडो ध्रुव!

अब मैं समझा। यह सब शैतानी लीला तुम्हारी थी!

यह तो शुरुआत थी, बच्चे!

अब तू चंडकाल की नई शक्तियों का एक से बढ़कर एक नमूना देखता जा!

कमाल की इच्छा-शक्ति थी ध्रुव में-

मुझे तो मेरे 'मायावी-कवच' ने लावे की गर्मी से बचाया हुआ था-

वह लावे की भीषण गर्मी को कैसे बर्दाश्त कर पा रहा था, यह मेरी समझ के बाहर की बात थी-

वह किसी भी पल मेरी तरफ लपक सकता था ...

... और अपनी भीषण-शक्तियों के बावजूद भी, मैं कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता था-

उसके चारों तरफ लावे के फव्वारे उबलने लगे-

पर उसमें गजब की फुर्ती थी।

एक भी शोला उसे छू नहीं पाया-

मुझे अपनी चाल को बदलना पड़ा-

मेरे एक इशारे पर...

... आग के शोले भीषण रूप धर कर नाच उठे-

ध्रुव की 'इहलीला' समाप्त होने का वक्त आ गया था-

लेकिन तभी—

खुद मेरा बदन हवा में उड़ता हुआ लावे के उबलते सोते में जा गिरा—

वह लड़की नताशा, ध्रुव की जान खतरे में देखकर अपनी जान को भी दांव पर लगाकर चली आई थी—

पलभर के लिए तो मेरा दिमाग भी चकरा गया! और दिमाग के चकराते ही, मेरे मायावी कवच की पर्त भी पतली होने लगी—

अगर मैंने तुरन्त ही संभलकर अपने कवच की पर्त को मोटा न कर दिया होता तो मेरा शरीर भी उसी लावे का हिस्सा बनकर रह जाता।

पलभर के लिए वे दोनों खुश हो गए होंगे।

ध्रुव! तुम ठीक तो हो न?

ह... हां! सिर्फ बदन में थोड़ी सी जलन महसूस हो रही है!

तुम्हारा दुश्मन चंडकाल खत्म हो गया है, ध्रुव...

...उसके खत्म होते ही लावे का झरना भी खत्म हो रहा...

ओह!

नताशा!

उस कमजोर हालत में भी ध्रुव की छठी इंद्रिय, एकदम सही काम कर रही थी—

मुझे मारने का अरमान अपने दिल में लिए-लिए...

... अब तुम दोनों एक साथ ही मरोगे!

लावे के उस भीषण शैतान से बच सकना असंभव था—

लेकिन वह उन दोनों तक पहुंचने से पहले ही, हवा में घूम गया था –

और एक अद्भुत 'तांत्रिक-यंत्र' में समा गया...

...जिसको पकड़े हुए थी...

...लोरी! तुम यहां पर कैसे?

बाद में बताऊंगी! वह तो खैर हुई कि राजनगर की फ्लाइट मुझे तुरन्त ही मिल गई।

मुझे आभास हो रहा है कि मेरी मानसिक शक्तियां इसी दुष्ट ने चुराई हैं...

... पर मानसिक शक्तियां न होने के बावजूद भी मैं इस दुष्ट के मंत्रों को काटने वाले 'तांत्रिक-यंत्र' बना सकती हूं।

जैसे कि यह प्रिज्म पिरामिड। इसके अंदर रखा मंत्रित रुद्राक्ष तेरे हर वार को निष्फल कर देगा!

वह लड़की, लोरी ठीक कह रही थी। उस मंत्रित रुद्राक्ष में सचमुच मेरे वारों को काट सकने की क्षमता थी।

पर मैं ऐसी स्थिति के लिए तैयार था।

तू मेरा वार रोक सकती है लड़की तो अब मैं वार नहीं करूंगा!

...वार करेगा... मेरा गुलाम! मेरी महान शक्तियों अपनी चरम सीमा पर पहुंचो।

पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नि! मेरा हुक्म मानो! पांचों तत्त्व आपस में मिलो!

महाप्रेत की रचना करो!

पलक झपकते ही पांचों तत्त्व आपस में मिल गए।

और पांच तत्त्व से बनी एक भयावह आकृति खड़ी हो गई–

???

अब मैं इसमें अपनी दुष्टता के साथ-साथ सत्य और न्याय का भी अंश डालता हूं। मैं फूंकता हूं इसमें प्राण!

इसके अन्दर भी वही शक्तियां हैं, जो तुम लोगों के अंदर हैं। सत्य और न्याय की! इस पर अपना वार चला सकती है तो चला लड़की!

नहीं तो ये तुम पर वार करेगा।

ओफ! ध्रुव, इस पर मेरा तंत्र ज्ञान बेकार है।

इसको अगर कोई रोक सकता है तो सिर्फ तुम...

लेकिन कैसे, लोरी? मेरे वार तो इसको पता ही नहीं चल रहे हैं।

वार पता कैसे चलते? महाप्रेत का पूरा शरीर वज्र से भी ज्यादा कठोर था। और उसमें अमानवीय शक्ति थी—

धममम

यह तो उन तीनों की फुर्ती थी, वे उस वार से बच गए—

वरना कार उन तीनों को अपने नीचे पीस डालती—

भागो, ध्रुव! तुम भाग क्यों नहीं रहे हो?

न जाने क्यों, मौत को अपनी तरफ बढ़ते देखकर भी ध्रुव भाग नहीं रहा था! वह उसका इन्तजार कर रहा था।

LUX

महाप्रेत, कार के मलबे तक आ चुका था—

तब मुझे समझ में आया कि ध्रुव भाग क्यों नहीं रहा था—

उसकी एक ठोकर से, लावे का दहकता शोला, कार से बहकर निकलते पेट्रोल में जा गिरा—

और एक जबरदस्त धमाका हुआ—

धड़ाााम

आसपास की इमारतों के शीशे तक चटक गए—

लेकिन–

ओह! इसके बदन पर तो खरोंच तक नहीं आई, ध्रुव!

अब क्या होगा?

महाप्रेत के हाथ उन तीनों की तरफ बढ़े–

वह उनको मुट्ठी में दबाकर पीस ही डालता–

अगर एक और अड़चन, रास्ते में न आ गई होती तो...

जिंगालू! यह सब क्या हो रहा है? पहले लोरी और फिर तुम?

तुम लोग यहां तक कैसे आ गए?

ओह! तो तू यहां तक आ ही पहुंचा, बन्दर! मेरा चक्रवात तुझे भटका नहीं पाया!

तो वह चक्रवात तेरा भेजा हुआ था, दुष्ट! यानी तूने ही गुरू शक्तालू की शक्तियां चुराई हैं।

धाड़

तेरे चक्रवात ने मुझे भटका दिया था।

इसलिए मैं यहां पर, ध्रुव से सलाह लेने आया था!

लेकिन यहां पर मेरी सारी मुश्किलें एक साथ आसान हो गईं।

ला! मेरे गुरू की शक्तियां वापस कर।

बन्दर का वार भीषण था—

और मेरी शक्तियां, महाप्रेत का निर्माण करने से क्षीण हो गई थीं—

वे चारों मिलकर मुझे मार ही डालते...

...अगर महाप्रेत, फिर उठ खड़ा न होता—

दो भीमकाय पहाड़ आपस में टकरा रहे थे—

इस बार महाप्रेत असावधान नहीं था—

और जिंगालू ने उस पर वार करके, अपने आपको उसका दुश्मन साबित कर दिया था—

हर वार के साथ चिंगारियां हवा में उड़ रही थीं—

लेकिन महाप्रेत में न चोट का अहसास था, न दर्द का—

लेकिन ये दोनों अहसास, जिंगालू में मौजूद थे।

... इस पर मेरे किसी वार का... असर... नहीं... हो रहा।

जिंगालू महाप्रेत के सामने टिक नहीं सका—

लेकिन महाप्रेत भी जिंगालू की जान नहीं ले सका—

आह ! इसको हरा पाना... असंभव है, ध्रुव !
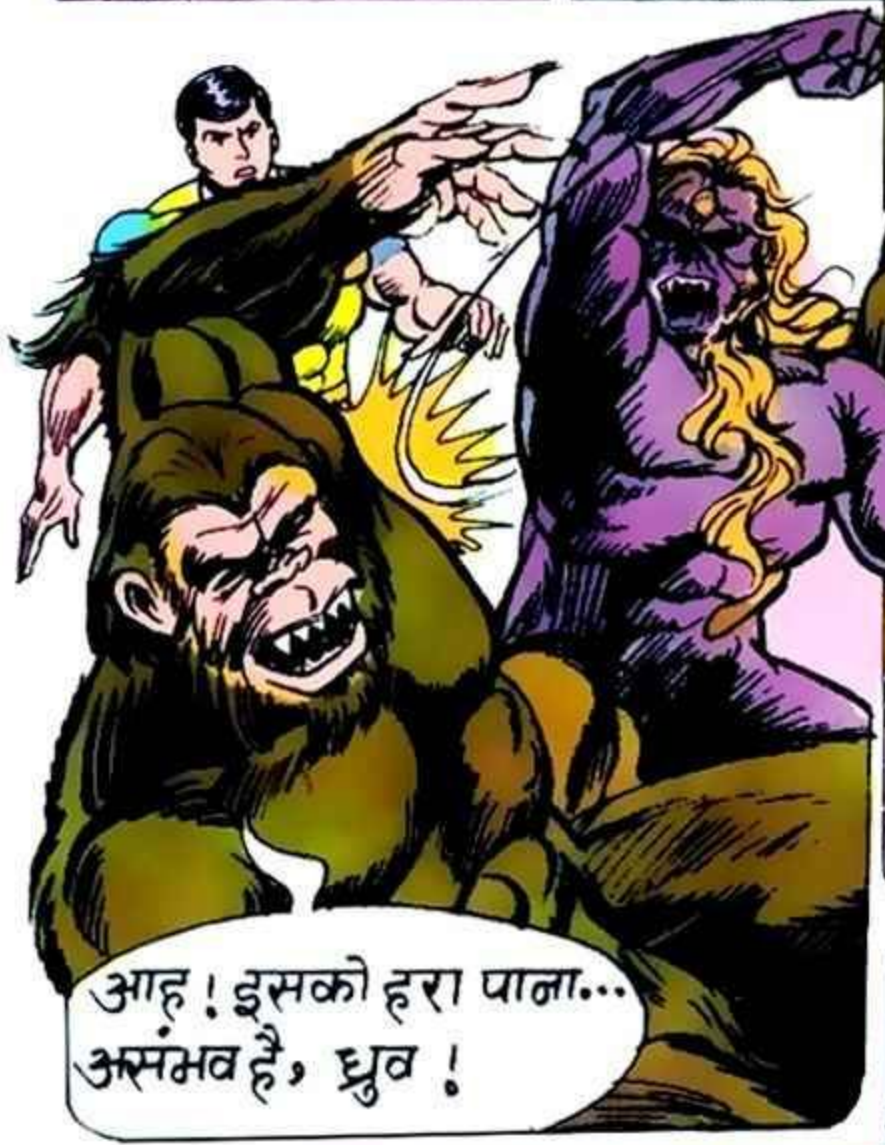
ध्रुव ने एक बार फिर अपनी जान खतरे में डाल दी थी—

भागो, ध्रुव ! जिससे जिंगालू नहीं जीत पाया उससे हम क्या जीतेंगे !

भागना समस्या का हल नहीं है नताशा !

अब महाप्रेत का ध्यान फिर से अपने मुख्य दुश्मन की तरफ खिंच गया था—

हर मजबूत चीज में एक न एक कमजोर दरार होती है। इसमें भी होगी।

अचानक ध्रुव की आंखें चमक उठीं—

जब मैंने इसके माथे पर पत्थर फेंका था, तो इसने उसको हाथ उठाकर बचाया था...

... जबकि बाकी वारों पर इसने ध्यान तक नहीं दिया था।

समझ गया ! इसके माथे पर चमकता गोला...

... यही इसका कमजोर स्थान है।

... मुझे उस गोले तक पहुंचकर उस पर वार करना होगा! यही एकमात्र रास्ता है।

मैं समझ गई ध्रुव! यह पंचतत्व से मिलकर बना प्राणी है। और वह प्रकाशपुंज उन पांचों तत्वों का संधिकेन्द्र है।

उस पर सीधा वार करने से, पांचों तत्वों के बीच का बंधन टूट कर बिखर जाएगा।

और ये प्राणी समाप्त हो जाएगा।

जैसा कि मैं पहले भी स्वीकार कर चुका हूं, वह लड़की लोरी महान तंत्र ज्ञाता थी। उसने बिलकुल सही निष्कर्ष निकाला था।

लेकिन उस प्रकाशपुंज पर वार करने का नतीजा वह नहीं जानती थी।...

...और न ही ध्रुव–

इतनी चपलता, इतनी फुर्ती और इतना अदम्य साहस, मैंने अपनी सैकड़ों वर्षों की जिन्दगी में कभी नहीं देखा–

ध्रुव का शरीर कभी लहराता, कभी उछलता और कभी झूलता हुआ महाप्रेत के मस्तक की तरफ बढ़ रहा था–

महाप्रेत की, उसको रोक पाने की हरकोशिश नाकाम हो रही थी–

ध्रुव उसकी पकड़ में आ नहीं पा रहा था –

अब ध्रुव का निशाना उसकी पहुंच के अन्दर आ चुका था –

पलभर के लिए ध्रुव भी ठिठक गया –

शायद वह उस 'प्रकाशपुंज' पर वार करने का परिणाम सोच रहा था –

लेकिन फिर – उसका बदन हवा में लहरा गया –

धड़.

जूते का 'प्रकाशपुंज' पर एक तेज प्रहार हुआ –

और एक बहुत तेज बेआवाज चमक उभरी –

जैसे पलभर के लिए, रात में सूर्य निकल आया हो –
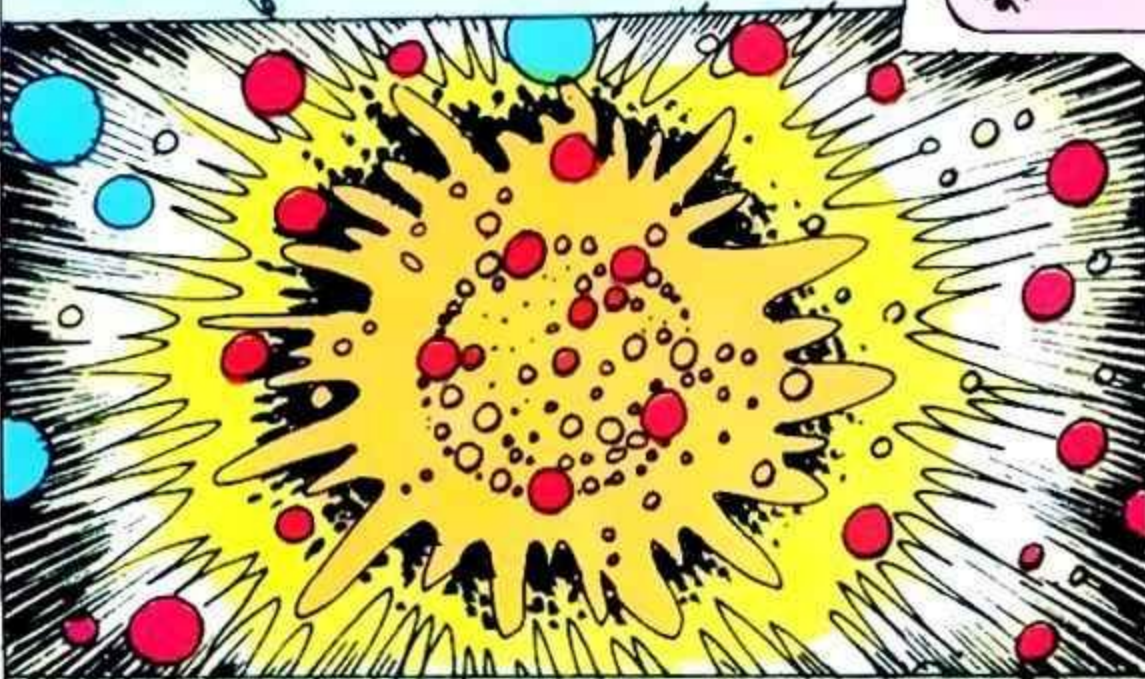
लोरी का सोचना सही था। संधिकेन्द्र पर प्रहार करने से बंधन टूट गया था। महाप्रेत के पांचों तत्त्व अलग-अलग हो गए थे –

लेकिन उसके साथ-साथ चार और शरीरों के भी पांचों तत्व अलग-अलग हो गए थे।

जिंगालू के, लोरी के, और नताशा के ...

... और सुपर कमांडो ध्रुव के!

सुपर कमांडो ध्रुव मर चुका था!

रोंगटे खड़े कर देने वाली कहानी थी—

अदालत में मौजूद सभी व्यक्ति भय से सिहर उठे थे—

सिवाय कंकालतंत्र और मशीनी रोबोट बायोट्रॉन के—

आप महान खलनायक हैं, श्रीमान चंडकाल! हम आपकी शौर्य गाथा से सहमत हैं।

अड़चन सिर्फ एक ही है। ध्रुव के अलावा आपने जिन तीन अन्य प्राणियों को विखंडित किया...

... वे अभी तक जीवित हैं। स्वामी कंकालतंत्र! जरा उनको यहां पर बुलाइए!

य••• यह कैसे हो सकता है? यह••• असम्भव है!

ये तीनों यहां पर गवाह की हैसियत से आए हैं!

और इस वक्त ये स्वामी कंकालतंत्र के सम्मोहन में हैं।

इनको यहां आने के बारे में कुछ भी याद नहीं रहेगा।

लेकिन इस महासम्मोहन की अवस्था में, ये सिर्फ सच बयान करेंगे।

अब इस घटना को कृपया विस्तार से सुनाएं।

श्रीमान जिंगालू! आपके मस्तिष्क में स्वामी कंकालतंत्र ने, श्रीमान चंडकाल का पूरा बयान भर दिया है।

चंडकाल का कहना सच है। हम सबके शरीर महाप्रेत के साथ, विखंडित हो गए थे।

पर महाप्रेत के विखंडित होने से गुरु शक्तालू की शक्तियां भी आजाद हो गई थीं।

वे शक्तियां उनके पास पहुंचते ही वे सारा वृत्तांत जान गए। और चूंकि हमारा विखंडन, प्राकृतिक नहीं था, इसलिए अपनी शक्तियों के द्वारा वे हम चारों के शरीरों को वापस जोड़ने में सफल हो गए।

वहां से विदा होने के बाद मैं ध्रुव से नहीं मिला। उसके बाद ध्रुव का क्या हुआ, हम नहीं जानते!

धन्यवाद श्रीमान जिंगालू! अब आप इनको वापस भेज सकते हैं, श्रीमान कंकालतंत्र।

कंकालतंत्र ने अपनी शक्तियों के द्वारा नताशा, जिंगालू और लोरी को वापस भेज दिया—
आपका बयान सही भी था, श्रीमान चंडकाल, और गलत भी!
आपने सुपर कमांडो ध्रुव को मारा भी, और नहीं भी मारा!
भाग्य ने आपके साथ अन्याय किया! परन्तु हमारे दिल में आपके लिए एक विशेष सम्मान पैदा हो गया है!
आप हमारी विशेष आरामगाह में विश्राम करें। बाकी गवाहियां सुनने के बाद, हम आपसे कई बातें करेंगे।
अवश्य, कंकालतंत्र! अगर हम तुम साथ मिल जाएं तो ब्रह्माण्ड हमारे कदम चूमेगा!
चंडकाल के जाने के बाद—
बायोट्रॉन! अगले 'खलनायक' को शीघ्र बुलाओ!
महाखलनायक 'ग्रैंड मास्टर रोबो' कृपया गवाही देने पधारें।

छठी गवाही- मैंने मारा ध्रुव को

श्रीमान ग्रैंडमास्टर रोबो! कृपया बताने का कष्ट करें कि आपने सुपर कमांडो ध्रुव को कैसे मारा?

सवाल खत्म होते ही...

...रोबो के गले से एक ठहाका उबल पड़ा -

हाहाहा... हाहाहा...

मेरे सवाल में कोई गलती रह गई क्या, श्रीमान रोबो?

ओह! हाहाहा... नहीं बायोट्रॉन! दरअसल मैं बहुत देर से अपनी हंसी रोके हुए था।

तुम यही सवाल दूसरे विलेनों से बार-बार करते जा रहे थे और बदले में एक से बढ़कर एक गप्पें सुनते जा रहे थे।

जबकि सच्चाई सिर्फ यही है...

...कि सुपर कमांडो ध्रुव, ग्रैंड मास्टर रोबो के हाथों से मरा है।

हम आपकी कथा सुनने को उत्सुक हैं, श्रीमान रोबो!

मेरी कहानी बड़ी सीधी-सादी सी है। क्योंकि वह एक सच्चाई है। कोई लच्छेदार गप्प नहीं।
सुपर कमांडो ध्रुव का सबसे पुराना दुश्मन हूं मैं। ग्रैंडमास्टर रोबो! दुनिया का नम्बर एक आतंकवादी!
मेरी ध्रुव से तीन बार मुठभेड़ हुई। और इन मुठभेड़ों ने मुझे बर्बादी के कगार पर ला खड़ा किया। मेरा संगठन छिन्न-भिन्न हो गया।
मेरे कई आदमी पकड़े गए, और कुछ ध्रुव के डर से मेरा संगठन छोड़ गए! संगठन को दुबारा बनाने के लिए मुझे पैसों की जरूरत थी!
इसीलिए मैं व्यापारी बन गया!
अवैध हथियारों का व्यापारी!
मेरे हथियार किराए पर चलते हैं! अफगानिस्तान के गुरिल्ला संगठनों को मैंने हथियार सप्लाई किए। उनका काम खत्म होने पर वही हथियार पंजाब चले गए।...
...वहां से कश्मीर और फिर न जाने कहां-कहां! श्रीलंका के गुरिल्ला को भी मैंने कई हथियार किराए पर दिए हैं।
इसमें डबल फायदा था! एक तो मेरे हथियार मेरे पास वापस आ जाते थे और साथ ही आ जाती थी उनके किराए की एक मोटी रकम!
मेरे पास पैसों का एक बड़ा भंडार जमा हो...
श्रीमान रोबो! हम आपके व्यापार का हिसाब-किताब जानने के इच्छुक नहीं हैं!
हम यह जानना चाहते हैं... कि आपने श्रीमान ध्रुव को कैसे मारा?

मैं भी यहां पर बकवास करने नहीं आया। मेरा यह सब बताने का एक कारण है...

...और वह कारण यह समझाना है कि ध्रुव की तरफ से खतरा होने के बावजूद भी मैंने राजनगर को ही अपना मुख्य अड्डा क्यों बनाया?

दरअसल मेरा धंधा इसी इलाके में ही फलता-फूलता है। और राजनगर इस पूरे क्षेत्र का व्यापारिक केन्द्र है।

इसी राजनगर को ही मुझे अपना मुख्य अड्डा बनाना पड़ा

गड़बड़ एक मामूली सी बात से शुरू हुई—

उस दिन- मेरा गोलियों का एक बड़ा कंसाइनमेंट, गोनी बीच से, मेरे गोदाम आ रहा था—

अचानक गाड़ी की हैडलाइटों ने, सुनसान सड़क पर खड़ी एक आकृति को चमका दिया—

कहने को तो थी वह एक आकृति ही...

...लेकिन मेरे ड्राइवर के लिए वह भूत से भी ज्यादा खतरनाक थी—

सुपर कमांडो ध्रुव को किसी तरह पता चल गया था कि इस गाड़ी में अवैध माल भरा है।

पर वह भी एक गलती कर गया था।

उसने गाड़ी को एक संकरी सड़क पर रोकने की कोशिश की थी! अगल-बगल बचने की कोई जगह नहीं थी—

भय से कांपते ड्राइवर के पैर एक्सीलेरेटर को फर्श तक दबा चुके थे–

एक टक्कर से ही ध्रुव के चिथड़े उड़ जाने थे•••

••• पर शायद ध्रुव को भी अपनी मौत की जल्दी थी–

उसके हाथ भी एक्सीलेरेटर पर घूम चुके थे–

दोनों गाड़ियां चंद फुट के फासले पर ही थीं–

ड्राइवर के चेहरे पर मुस्कराहट खेल रही थी–

अब वह सुरक्षित था–

इस टक्कर से अगर किसी का नुकसान होना था, तो सुपर कमांडो ध्रुव का–

मतलब••• अगर टक्कर हो पाती तो•••

ठक्क

धड़

धम्म
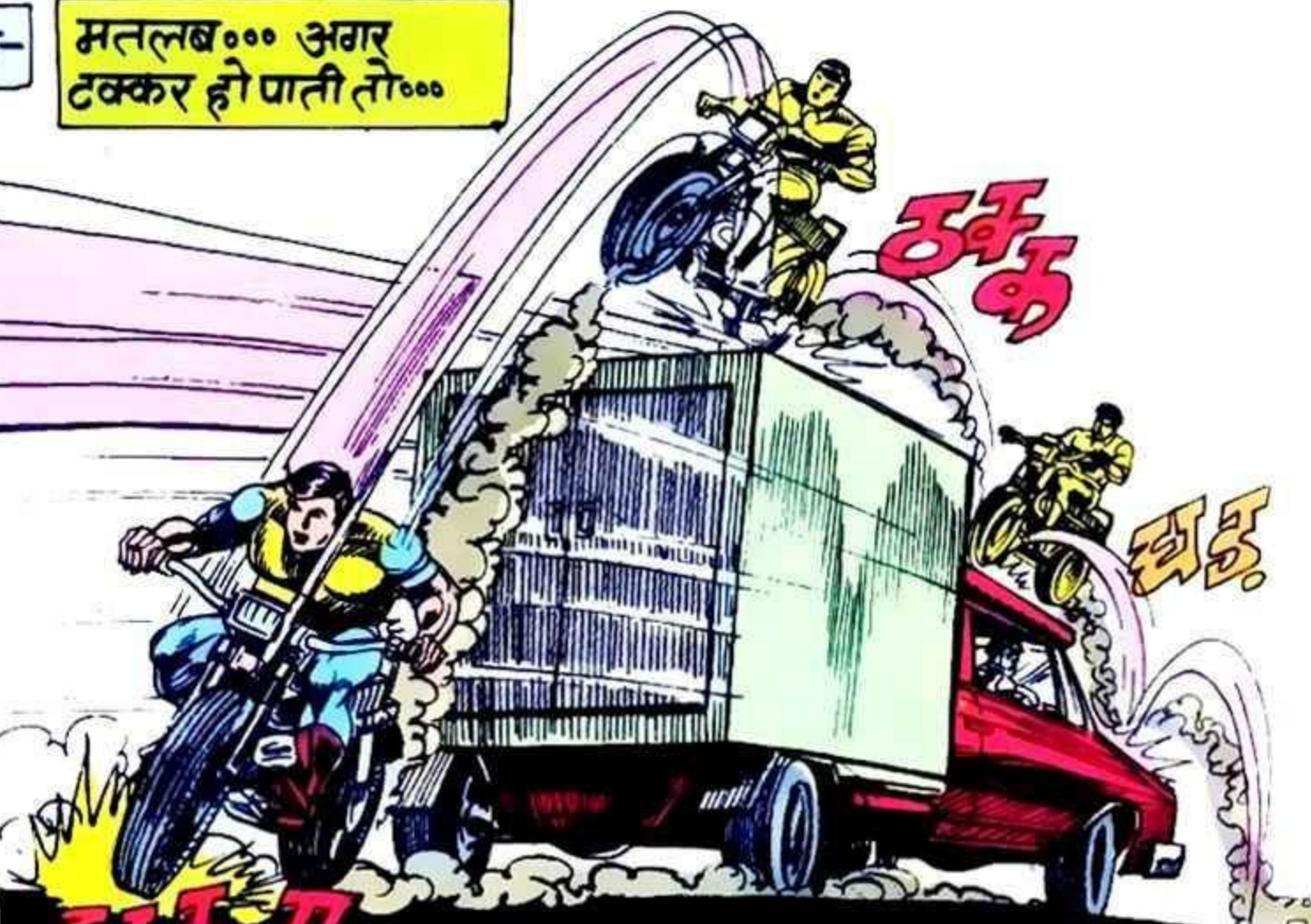
भय से कांपते उसके पैर एक्सीलेरेटर को और तेज़ी से दबाने लगे–

पर वह तो पहले ही पूरा दबा हुआ था–

••• ड्राइवर के चेहरे पर फैली मुस्कान कितनी जल्दी वापस सिमट गई होगी, इसका अंदाज़ा मैं बिना बताए लगा सकता हूं–

इसके बावजूद भी ध्रुव इतनी तेज़ी से उसके पीछे आ रहा था मानो गाड़ी खड़ी हुई हो–

इतनी तेज़ी से आते हुए भी उसने एक ईंट उठा ही ली थी—

सधे हुए निशाने से वह ईंट, पहिए और गाड़ी की बॉडी के बीच में आ फंसी—

पलभर के लिए वह पहिया, जाम हो गया—

और गाड़ी लहराकर, बगल की दीवार से जा टकराई—

धड़ाममम म

ध्रुव भी, तेज रफ्तार से आती अपनी मोटरसाइकल को रोक नहीं पाया—

धड़ाक

और मोटरसाइकल भी टकरा कर नीचे आ गिरी—

और मेरे आदमी को भागने का मौका मिल गया—

उसने सबसे बड़ी मूर्खता यह करी कि वह अपने अड्डे की तरफ ही भागा—

उसका अड्डा- यानी मेरा गोदाम-

बीच-बीच में वह पीछे मुड़कर देखता भी जा रहा था—

वह गोदाम में एक झटके से अंदर घुसा—

गोदाम के ठीक नीचे-अपने अंडरग्राउंड अड्डे में बैठा, मैं 'क्लोज सर्किट' टी॰वी॰ पर उसकी शक्ल देखते ही समझ गया कि कहीं कोई गड़बड़ हो गई है—
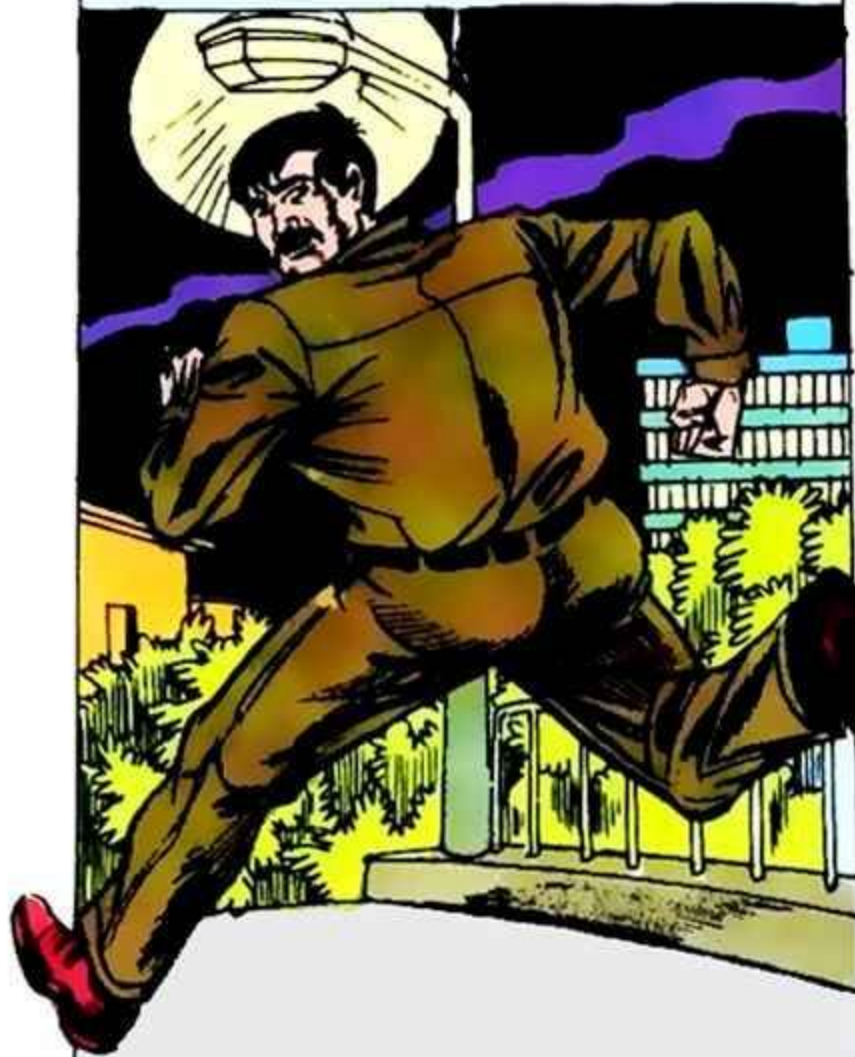
ध्रुव कहीं नजर नहीं आ रहा था—

वह निश्चिन्त हो गया—

भय से कांपते हुए वह सारी घटना बयान करता चला गया—

और हर शब्द के साथ मेरे दिमाग में शोले भरते चले गए—

और फिर उसके बाद नजर आई एक प्रभावशाली आकृति—

मेरी क्रोध भरी आवाज से, हर शख्स के साथ-साथ गोदाम का कोना-कोना तक कांप उठा—

वह तुम्हारे पीछे ही लगा होगा मूर्ख! और अब वह यहां आता ही होगा! अगर वह जिंदा वापस गया तो समझो, तुम सब मर गए!

मेरी आवाज की गूंज खत्म होते ही, एक और आवाज वातावरण में उभरी—

दरवाजा खुलने के चरमराहट की आवाज-

चरड़ड़ड़ड़

गोदाम की बत्तियां तुरंत बुझा दी गईं—

सुपर कमांडो ध्रुव मेरी मांद तक आ चुका था—

मेरे आदमी अलग-अलग जगहों पर छिपे बैठे थे...
...घात लगाए-
ध्रुव पर हमला करने को तैयार-
ठक
उस 'ठक' की आवाज़ के साथ ही...
...गोदाम में कहर टूट पड़ा-
शायद चाकू आने की दिशा ने ध्रुव को पहले आदमी का पता बता दिया था-
मेरे आदमी, अपनी मूर्खता में ध्रुव पर हमला करते जा रहे थे। और हर वार, ध्रुव को अपने दुश्मन के छिपने की जगह का पता बता रहा था-
मैं चाहकर भी अपने आदमियों को कोई सलाह नहीं दे सकता था-

मैंने अपने आदमियों पर भरोसा करके बहुत बड़ी गलती की थी –

अब मेरा भांडा फूटने ही वाला था –

मैं खुद बाहर निकल कर ध्रुव का सामना करने की सोच ही रहा था –

तभी एक आवाज ने मेरे कदम रोक दिए –

बोलो ! तुमने अपने आदमी को कहां पर छिपाकर रखा है ?

क्लिक

क… कौन सा आदमी… अरे, बादशाओ ! आप तो सुपर कमांडो ध्रुव हो…

वह आदमी किधर गया !

बड़ी गलती हो गई जी ! असी अंधेरे में आपको पहचान नहीं पाए !

कौन सा आदमी जी ?

अरे, गोविन्द ! उधर देख ! वो कौन है ?

ये ! ये तो कोई चोर लगता है जी ! हमारे गोदाम का आदमी नहीं है !

ओह ! यानी ये मुझसे बचने के लिए यहां पर आकर छिप गया था !

आहो जी ! पर आप इसके पीछे कैसे लग गए ?

ये अवैध गोलियों से भरी एक गाड़ी लेकर भाग रहा था। एक गोली न जाने कैसे गाड़ी से गिर पड़ी। एक कुत्ते ने उसे उठाकर मुझ तक पहुंचाया।

और इस गाड़ी का हुलिया भी बताया।

बस! वहीं से मैं इसके पीछे लग गया।

ओ sss! आप जानवरों से बात कर लेते हो? कमाल है जी!

इसको ले जाओ, साब जी! ऐसी मार मारना कि सम विलिंग करना ही भूल जावे!

मेरे आदमी गोविन्द ने दिमाग का अच्छा इस्तेमाल किया था। उसने पूरी स्थिति को बखूबी संभाल लिया था—

ध्रुव, ड्राइवर को अपने साथ ले गया।

मैं जानता था कि मेरा ड्राइवर अपना मुंह कभी नहीं खोलेगा! लेकिन फिर भी, मैंने गोदाम को अगले ही दिन वहां से हटाने का इरादा कर लिया था।

मेरा निर्णय एकदम सही था।

अगले दिन के अखबारों में ध्रुव का पूरा कारनामा छपा था—

सुपर कमांडो ध्रुव ने तस्कर को रंगेहाथों पकड़ा

गोदाम में मुठभेड़ हुई। गोलियां भी पकड़ी गईं

और उसमें मेरे गोदाम का भी जिक्र था।

और उसी रात को हमने उस गोदाम को खाली करने की तैयारी शुरू कर दी—

कल तूने बहुत अच्छा नाटक किया गोविन्द!

तुझे इसका भरपूर इनाम मिलेगा!

बंबइया फिल्म इंडस्ट्री में बहुत स्ट्रगल किएला है बॉस!

मौका मिलता तो अमिताभ बच्चन की भी छुट्टी कर देते!

ठीक है, ठीक है। अभी चलकर ट्रक में जल्दी-जल्दी माल लदवा...

सारा काम, अंधेरे में ही हो रहा था—

गोविन्द माल लदवाने के लिए बढ़ने ही वाला था कि तभी—

एक हल्की सी आहट ने हम सबको खामोश कर दिया—

कट

ट्रक के पीछे से एक परछाई हिली—

और चांद की रोशनी में एक पीली और नीली पोशाक चमक उठी—,

ध्रुव को पहले ही दिन शक हो गया था—

इसीलिए वह दुबारा गोदाम की छानबीन करने आया था—

मेरे पास भी छिपने का मौका नहीं था—

हमारा आमना-सामना हो ही गया—

पर न जाने क्यों मुझे देखकर, ध्रुव घबरा सा गया—

ग... ग्रैंड-मास्टर रोबो! सुनो...

उसके बाद मैंने उसको एक पल की भी मोहलत नहीं दी—

मेरी 'लेसर आई' चमक उठी—

और ध्रुव का सिर, अपने धड़ पर से गायब हो गया—

वातावरण, जलते मांस की बू से भर गया—

लेकिन उस 'बू' का मुकाबला सारी दुनिया के इत्र मिलकर भी नहीं कर सकते—

क्योंकि वह सुपर कमांडो ध्रुव के मरने की खुशबू थी—

ध्रुव की लाश मेरे सामने पड़ी हुई थी—

मर गया था ध्रुव—

मैंने मारा था ध्रुव को—

ध्रुव की लाश को वहीं छोड़कर, हम वहां से निकल लिए—

जाने से पहले, मैंने गोदाम में, अपने रहने के सारे सबूतों को मिटा दिया था—

फिर मैं अगले दिन की धमाकेदार खबर का इंतजार करने लगा। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। कहीं पर भी कोई खबर नहीं थी।

न अखबार में, न रेडियो पर, और न टी॰वी॰ पर। खबर को पूरी तरह से दबा दिया गया था।

ध्रुव की मौत की खबर को पुलिस वाले गुप्त रखना चाहते थे। लेकिन फिर भी, यह खबर अपराधियों के बीच में फैल गई, और हर अपराधी, ध्रुव को मारने का दावा करने लगा।

जबकि सच्चाई मैंने सबके सामने बयान कर दी है। सुपर कमांडो ध्रुव को मैंने मारा है।

मैंने मारा ध्रुव को।

हम्म्! आपकी कथा में कोई गलती नहीं है, श्रीमान रोबो!
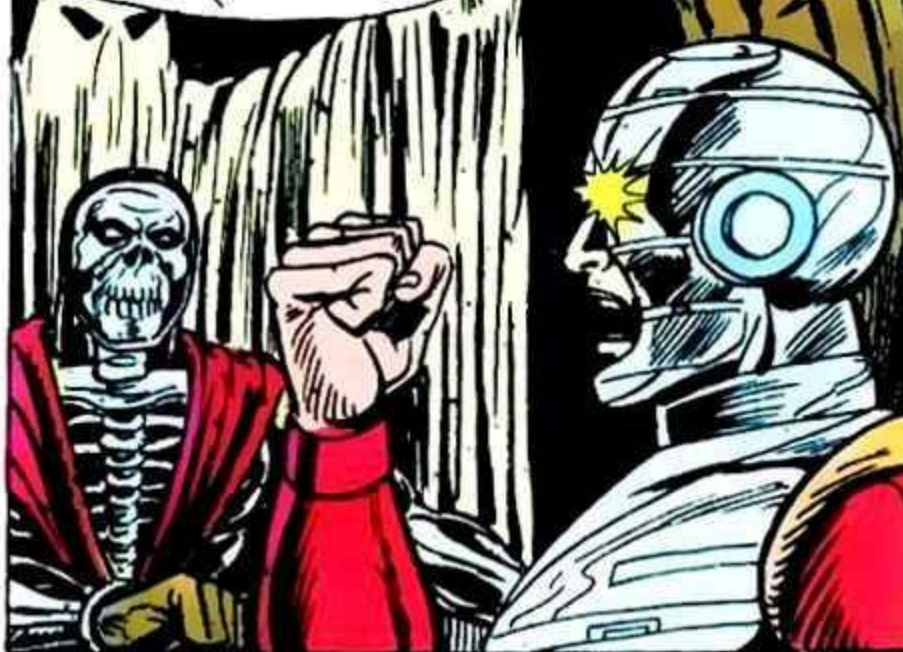
पर आपकी कथा का कोई गवाह भी नहीं है। आपकी कथा की सत्यता को परखा कैसे जा सकता है?

मैं मूर्ख नहीं हूं, बायोट्रॉन!

ध्रुव की लाश को गोदाम में छोड़कर जाने से पहले, मैंने उसकी बेल्ट उतार ली थी...

वह 'स्टार-बेल्ट' मेरे पास है।

और वही मेरी कहानी का सबूत है!

वाह! क्या आप वह बेल्ट हमें दिखाने का कष्ट करेंगे?

ऐसा सबूत मैं साथ लिए नहीं घूमता, बायोट्रॉन! वह बेल्ट मेरे 'अड्डे' के एक 'सुपर स्ट्रांग लॉकर' में सुरक्षित रखी है।

आप जाकर वह बेल्ट ले आइए, ग्रैंडमास्टर रोबो! वह देखने और परखने के बाद ही हम फैसला करेंगे।

मैं अभी आता हूं। और अपना दावा साबित करके ही वापस जाऊंगा!

अग्निद्वार ने रोबो को, तुरन्त अपने अड्डे पर पहुंचा दिया—

हाहाहा... क्या गप्पें सुनने को मिलीं!

चांद की सतह पर मारा, सांप-सीढ़ी के खेल पर मारा, डायनामाइट से उड़ा दिया...

...ध्रुव का शरीर विखंडित कर दिया!

लेकिन मैं तो जानता ही था कि ध्रुव को मैंने ही मारा है...

और ये रहा मेरा सबूत!

सुपर कमांडो ध्रुव की बेल्ट!

वाह! अब तुम यह बेल्ट और अपने-आपको मेरे हवाले कर दो, ध्रुव के हत्यारे!

कंकालतंत्र! तुम यहां पर क्यों आए?

मैं धनंजय हूं, ग्रैंडमास्टर रोबो! स्वर्ण नगरी का धनंजय! वही स्वर्ण नगरी, जिस पर जब तुमने हमला किया था, तो मैंने और ध्रुव ने तुमको मुंह तोड़ जवाब दिया था।

कुछ गड़बड़ लगती है। कौन हो तुम?

ओह! ये सब ध्रुव के हत्यारे को पकड़ने का नाटक था!

हां! और तुम सभी इस नाटक के दर्शक भी थे, और पात्र भी।

ओह! यानी... बाकी सब विलेन कहां पर हैं, धनंजय?

तुमने उनको कहां पर भेज दिया है?

हर खलनायक अपनी सही जगह पर जा चुका है। ध्वनिराज, बौना वामन, ब्लैककैट, डॉक्टर वायरस, चुंबा सभी पुलिस हिरासत में हैं। और चंडकाल स्वर्ण नगरी में।

और अब तुम चुपचाप मेरे साथ चलोगे, या फिर मुझे अपनी वैज्ञानिक शक्तियों का प्रयोग करने पर मजबूर करोगे?

धोखेबाज

मैं तुझे भी ध्रुव जैसी ही मौत दूंगा। जलाकर खाक कर दूंगा मैं तुझको!

बेकार की चेष्टाएं मत करो रोबो!

तुम्हारा कोई भी वार मेरे 'ऊर्जा-कवच' को भेद नहीं सकता...

...लेकिन तुम मेरे एक मामूली से वार को भी नहीं सह पाओगे।

आह!

मैं तेरे 'ऊर्जा कवच' को नहीं भेद सकता। पर तू भी एक गलती कर रहा है!

तेरे जूते धातु के हैं। और यह फर्श भी धातु का बना है।

और तेरे जूतों और फर्श के बीच में कोई 'ऊर्जा कवच' नहीं है।

अब अगर तू चार सौ चालीस वोल्ट का करंट झेल सकता है, तो झेल ले!

झटका सचमुच भयंकर था! धनंजय का अंग-अंग थर्रा उठा—

और फिर- उसका दिमाग बेहोशी के सैलाब में डूबता चला गया—

और साथ ही साथ उसका 'ऊर्जा-कवच' भी लुप्त होने लगा—

अब मैं तुझे भी ध्रुव के पास भेज दूंगा, धनंजय !

लेकिन इससे पहले कि रोबो की लेसर किरण, धनंजय के शरीर में सुराख कर पाती—

ओह, बायोट्रॉन !

तो अब तू अपने स्वामी की रक्षा करेगा ?

लेकिन रोबो ने तेरे जैसे कई रोबोटों को बचपन में ही तोड़ डाला है।

घड़ाक

अब मैं तेरे धातु के बने शरीर की पर्तों को, प्याज की तरह छीलूंगा !
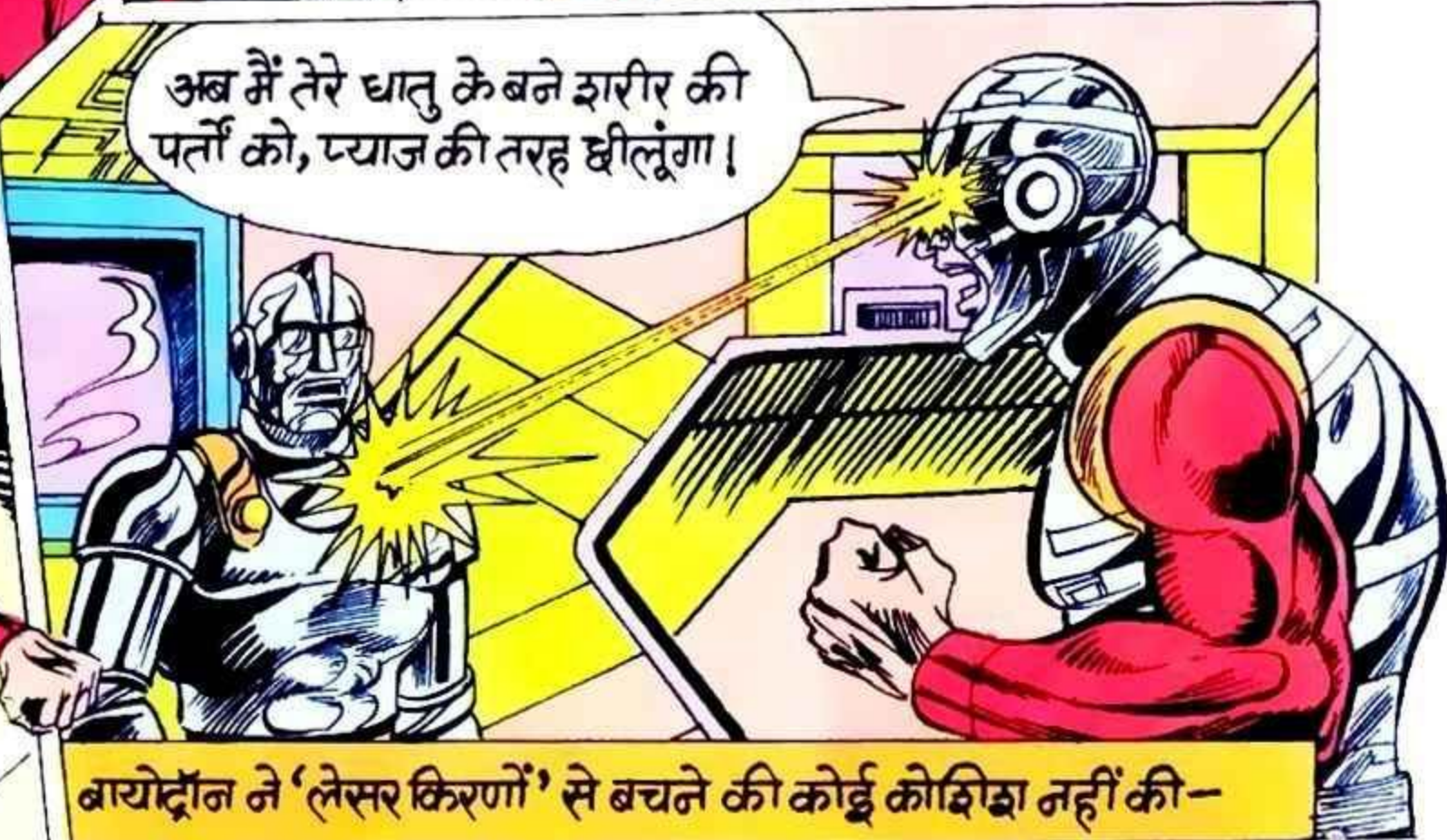
बायोट्रॉन ने 'लेसर किरणों' से बचने की कोई कोशिश नहीं की—

बल्कि उसके मशीनी हाथ, खुद ही अपने-आप को फाड़ने लगे—

पर्तें दर पर्तें उखड़ने लगीं—

कर्र्र्र

और रोबो की इकलौती आंख फैलती चली गई—

सांस, नाक में ही रुककर रह गई—

आवाज गले में घुट गई—

अपनी जिन्दगी का सबसे आश्चर्यजनक दृश्य देख रहा था वह—

ध... ध्रुव! ध्रुव! तुम बायोट्रॉन थे! तुम जिन्दा कैसे हो? असंभव! मैंने तो तुमको मार डाला था! तुम बच कैसे गए?

सोचो! तुमको ठीक से हत्या करनी तक नहीं आती है, रोबो!

इतना बड़ा धोखा! इतना बड़ा? सारे अपराधियों को एक साथ धोखा दिया गया।

लालच करोगे तो धोखा खाओगे ही। पूरी दुनिया पर राज्य करने के लालच ने ही तुम लोगों को इस हालत में पहुंचाया है।

पहली बार तो शायद कहीं गलती रह गई। लेकिन इस बार गलती नहीं होगी, ध्रुव!

सच कहता है तू! तू बच सकता है!

लेकिन ये बेहोश धनंजय नहीं बच सकता! अब अगर तू हिला, तो मैं एक 'लेसर ब्लास्ट' से इसकी खोपड़ी उड़ा दूंगा!

तुम लेसर किरणों से अपने ही अड्डे को तबाह कर लोगे, रोबो!

मुझे तो ये छू भी नहीं पाएंगी!

ध्रुव के पास रुकने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

हा हा हा! रुक गया! दोस्तों के पीछे अपनी जान खतरे में डालना तो तेरी पुरानी आदत है!

ले! ये दो हथकड़ियां! एक अपने हाथों में डाल! और दूसरी अपने पैरों में!

अब अपनी मौत से बचकर दिखा लड़के!

ठीक से! हाथों को पीछे करके! हां!

वाह! अब मैं तेरा नहीं, बल्कि तू मेरा कैदी है।

पैरों में भी बांध!

ध्रुव का शरीर, तेजी से जमीन पर गिर गया—

और लुढ़कता हुआ, उसका शरीर कक्ष से बाहर निकल गया—
हाहाहा ! भाग रहा है। भागकर कहां तक जाएगा?
अब मुझे भागने की जरूरत नहीं है! मैं रोबो को धनंजय से दूर ले आया हूं।
रुक क्यों रहे हो रोबो? वार करो। खत्म कर दो मुझको।
झुंझलाए रोबो की आंख चमक उठी—
कड़ाक
अगले ब्लास्ट ने ध्रुव के हाथों को भी आज़ाद कर दिया—
और ध्रुव के पैर आज़ाद हो गए—
कड़ाक
रोबो मुझ पर लेसर किरणों से वार कर रहा है। ये लेसर किरणें, प्रकाश किरणों का ही एक घातक रूप होती हैं...
... और इनको भी प्रकाश किरणों की तरह, परावर्तित किया जा सकता है।
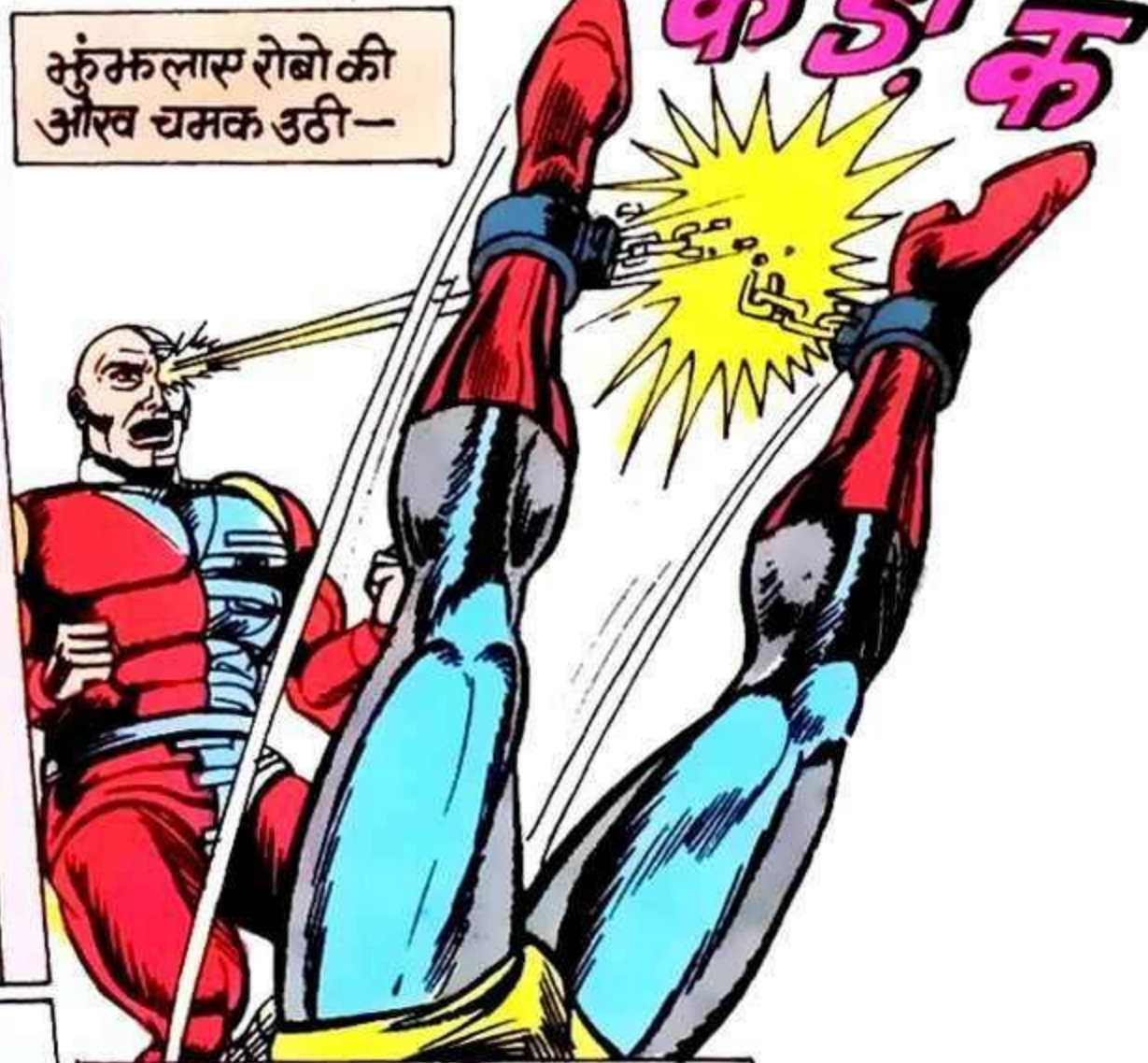
इनको परावर्तित करने का काम मेरी हथकड़ियों की चमकती हुई सतह करेगी।

और अगर मैं इन किरणों को सही कोण पर परावर्तित कर सकूं ...

... तो मेरा बचाव ही मेरा हमला बन जाएगा!

आहे!

मेरी लेसर किरणों ने ही मेरी 'लेसर आई' को नष्ट कर डाला।

कडंड़ड़ंक

मेरा सबसे बड़ा हथियार नष्ट हो गया...

ईयायाया!

ताड़.

अब तुम्हारा जबड़ा भी नष्ट होने वाला है, रोबो!

...रोबो को जमीन पर ला पटका—

ध्रुव के बेरहम वारों ने...

आई!

तड़ड़ंक

अरे! तुमने तो बगैर मेरी मदद के ही अपने हत्यारे को पकड़ लिया, ध्रुव !

लेकिन ये सब क्या चक्कर था, ध्रुव ! तुमने पूरी बात अब तक मुझे नहीं बताई ।

रोबो की कहानी एकदम सच्ची थी, धनंजय! लेकिन उसने ध्रुव के रूप में ...

... एक दूसरे लड़के 'टोनी मैल्कामे' को मारा था।

उसकी शिनाख्त मैंने उसकी पोशाक पर लगे टेलर के लेबिल के ज़रिए की थी!

उसका पता ढूंढ़कर मैं उसके रहने के स्थान पर गया। वह अकेला रहता था—

मुझे वहां पर उसके हाथ की लिखी डायरी मिली। उसमें उसने सारी बातों को साफ-साफ लिखा था। दरअसल वह मेरा खास प्रशंसक था, और मेरे जैसा ही 'क्राइम-फाइटर' बनना चाहता था—

उसने मेरे जैसी पोशाक भी सिलवा रखी थी। अखबारों में मेरे कारनामों के स्थान को पढ़कर, वह अगले दिन उसी जगह छिपकर जाता था—

और मेरी तरह नकल करने की कोशिश करता था—

ऐसे ही वह ग्रैंडमास्टर रोबो से टकरा गया। रोबो अंधेरे में उसकी शक्ल नहीं देख पाया। और उसने टोनी मैल्काम को ध्रुव समझ कर उसका खात्मा कर दिया—

मुझे इस बात का कोई सबूत नहीं मिला कि टोनी को किसने मारा था ...

... लेकिन उसके शरीर पर मेरी पोशाक से यह स्पष्ट था कि उसको मेरे खास दुश्मन ने मारा है।

बस फिर क्या था। मैंने अपने मरने की खबर फैला दी। और तुम्हारी वैज्ञानिक शक्तियों की मदद से 'क्राइम कोर्ट' बिठा दी।
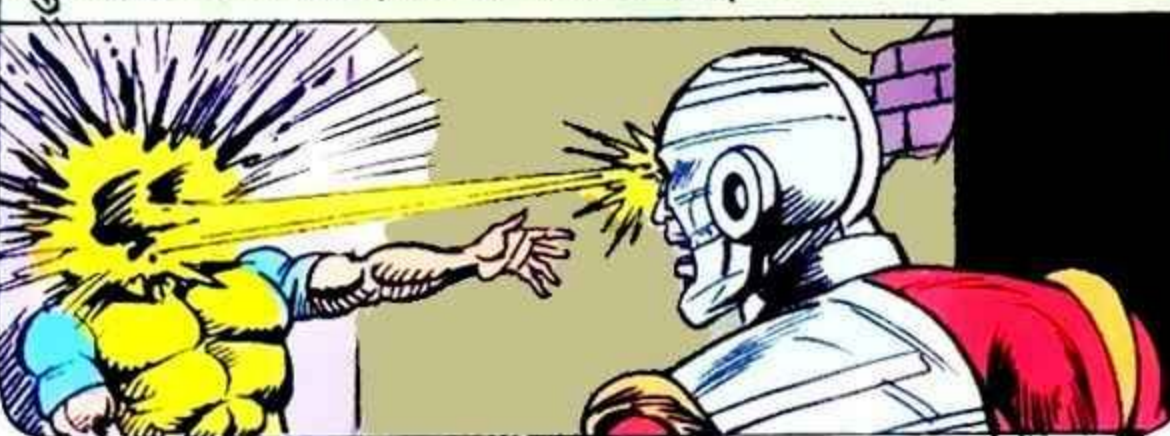
मैं जानता था कि टोनी मैल्काम की हत्या का सही- सही ब्योरा सिर्फ असली हत्यारे को ही पता होगा।

और वह हत्यारा ग्रैंडमास्टर रोबो निकला...

...सुप्रीमा की गवाही सुनने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

तुम्हारी स्कीम सचमुच कमाल की थी, ध्रुव!

...लेकिन अभी हमारा काम पूरा नहीं हुआ है! अभी कई माफिया बॉसों और सुप्रीमा को उनके सही ठिकानों पर पहुंचाना है।

फिर देर कैसी, धनंजय! आओ चलें!

और फिर- राजनगर में, भारत में, दुनिया में खुशी की एक लहर दौड़ पड़ी-

हुर्रे... सुपर कमांडो ध्रुव जिंदा है... जिंदा है...

समाप्तः